RNI Number : MPHIN/2016/70609

ISSN NUMBER : 2455-9814

वर्ष : 4, अंक : 14
जुलाई-सितम्बर 2019
मूल्य 50 रुपये

विभोम-स्वर

वैश्विक हिन्दी चिंतन की अंतर्राष्ट्रीय पत्रिका

अकाल में उत्सव
की अपार सफलता के बाद
शिवना प्रकाशन प्रस्तुत करता है
पंकज सुबीर
का नया उपन्यास
जिन्हें जुर्म-ए-इश्क़ पे नाज़ था
चुनौती बन कर खड़े वर्तमान समय के सबसे ज़रूरी प्रश्नों की सभ्यता समीक्षा के बहाने तलाश करता एक उपन्यास...

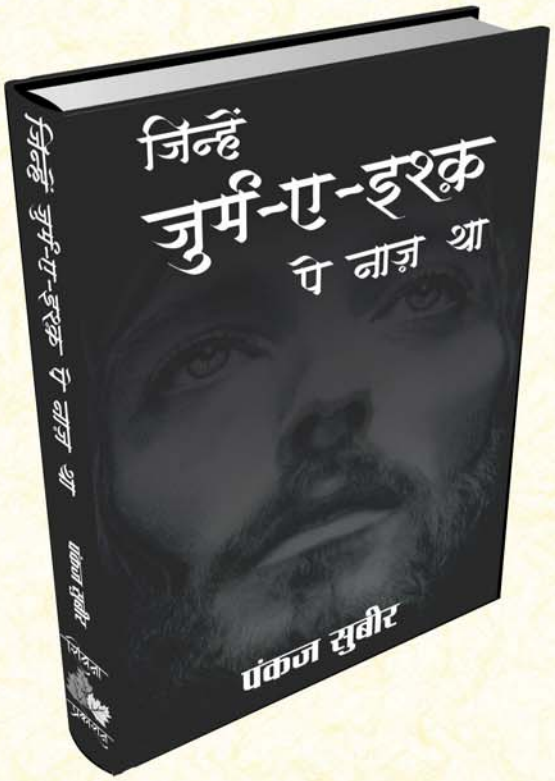

पंकज सुबीर का यह उपन्यास जिस समय में आया है, वह संकीर्णतावादी शक्तियों के और क्रूर होने का समय है। ऐसे समय में मानवता से, इंसानियत से इश्क़ करना भी एक प्रकार से बग़ावत करना है। यह उपन्यास उस बग़ावत को सामने लेकर आता है। जब आप इस उपन्यास को पढ़ते हैं तो पता चलता है कि यह केवल एक रात की कहानी नहीं है, यह नब्बे के दशक में कहीं प्रारंभ होकर यहाँ तक आता है। सांप्रदायिकता जैसे विषय पर इस समय लिखा जाना सबसे ज़रूरी है और पंकज सुबीर ने यह उपन्यास लिख कर वही ज़रूरी काम किया है।

-प्रज्ञा
(सुप्रसिद्ध कथाकार)

इस उपन्यास ने अंदर तक एकदम हिला कर रख दिया। ऐसी जानकारियाँ धर्म के बारे में, सदियों पहले की, विभाजन की, हिन्दू धर्म की, इस्लाम की, यहूदियों की, क्रिश्चियन की जो हमें पता ही नहीं थी। और बात सिर्फ पता होने न होने की नहीं, वो बातें, वो शिक्षाएँ जो हर धर्म का मूल है, अहिंसा, इंसानियत वो आज के धर्म मे तो कहीं दिखाई नहीं देते। ख़ैर, इस उपन्यास पर जितना लिखो कम है, और बहुत सारी भ्रांतियाँ दूर हुईं। हर नागरिक को जो वोट देता है, हर कलाकार को जो जागरूक है, सब लोगों को ये उपन्यास पढ़ना चाहिए।

-यशपाल शर्मा
(सुप्रसिद्ध अभिनेता)

पंकज सुबीर ने उपन्यास में सभी धर्मों के मूल तत्व, जिस पर हर धर्म टिका हुआ होता है, की पड़ताल की है। मूल तत्व जिसे हर धर्म ने भुला दिया गया है; जिससे हर धर्म का स्वरूप ही बदल गया है। पाँच हज़ार साल पहले के इतिहास, विभिन्न धर्मों पर किया गया शोध, हिन्दू धर्म की, इस्लाम की, यहूदियों की, क्रिश्चियन की, बौद्धों की, पारसियों की और जैन धर्म की तथ्यों से भरपूर ढेरों जानकारियाँ हैं। इतिहास को खंगालता, शोध परक और बौद्धिक श्रम लिए उपन्यास का एक -एक पृष्ठ भीतर के ज्ञान-चक्षु खोल देता हैं और उपन्यास हाथ से छूटता नहीं।

-सुधा ओम ढींगरा
(सुप्रसिद्ध कथाकार)

ये उपन्यास अपने समय का एक महत्त्वपूर्ण दस्तावेज़ बन गया है। तथ्यों की खोज में की गई मेहनत हर पृष्ठ पर दिखाई देती है। इस उपन्यास के प्रकाशन का इससे उपयुक्त समय नहीं हो सकता। आरंभ के पृष्ठों पर किया गया विश्लेषण अद्भुत और प्रासंगिक है। ये उपन्यास अपने साहसिक कथ्य के लिए हमेशा याद रखा जाएगा। यह अपने समय से बहुत आगे का उपन्यास है; क्योंकि मुझे लगता है इसे समझने लायक ज़रूरी परिपक्वता का अभी अभाव है। यदि हम इसे पढ़ कर समझ पाते हैं तो यकीन मानिए समाज में बहुत बड़ा परिवर्तन आने वाला है।

-नीरज गोस्वामी
(सुप्रसिद्ध समीक्षक)

उपन्यास सभी प्रमुख ऑनलाइन शॉपिंग स्टोर्स पर उपलब्ध है-

अमेज़न लिंक- https://www.amazon.in/Jinhen-Jurme-Ishq-Naaz-Tha/dp/B07TBN27MT

फ़्लिपकार्ट लिंक- https://www.flipkart.com/jinhen-jurme-ishq-pe-naaz-tha/p/itmfhqhhvfv6hgsh?pid=9789387310698

शिवना प्रकाशन

शिवना प्रकाशन, शॉप नं. 3-4-5-6, सम्राट कॉम्प्लैक्स बेसमेंट, बस स्टैंड के सामने सीहोर, मध्य प्रदेश 466001
फोन : 07562-405545, 07562-695918
मोबाइल : +91-9806162184 (शहरयार)
ईमेल : shivna.prakashan@gmail.com
http://shivnaprakashan.blogspot.in
https://www.facebook.com/shivna.prakashan

शिवना प्रकाशन की पुस्तकें सभी प्रमुख ऑनलाइन शॉपिंग स्टोर्स पर

amazon http://www.amazon.in
flipkart.com http://www.flipkart.com
paytm https://www.paytm.com
ebay http://www.ebay.in

दिल्ली में पुस्तकें प्राप्त करें : हिन्दी बुक सेंटर, 4/5 आसफ अली रोड
फोन : 011-23286757 http://www.hindibook.com

संरक्षक एवं प्रमुख संपादक
सुधा ओम ढींगरा

संपादक
पंकज सुबीर

संपादकीय एवं व्यवस्थापकीय कार्यालय
पी. सी. लैब, शॉप नं. 3-4-5-6
सम्राट कॉम्प्लैक्स बेसमेंट
बस स्टैंड के सामने, सीहोर, म.प्र. 466001
दूरभाष : 07562405545, 07562695918
मोबाइल : 09806162184
ईमेल : vibhomswar@gmail.com

ऑनलाइन 'विभोम-स्वर' :
http://www.vibhom.com/vibhomswar.html
http://vibhomswar.blogspot.in
फेसबुक पर 'विभोम स्वर'
https://www.facebook.com/vibhomswar
एक प्रति : 50 रुपये (विदेशों हेतु ५ डॉलर $5)
सदस्यता शुल्क
1500 रुपये (पाँच वर्ष)
3000 रुपये (आजीवन)
विदेश प्रतिनिधि
अनिता शर्मा (शंघाई, चीन)
रेखा राजवंशी (सिडनी, आस्ट्रेलिया)
शिखा वार्ष्णेय (लंदन, यू के)
नीरा त्यागी (लीड्स, यू के)
अनिल शर्मा (बैंकॉक)
क़ानूनी सलाहकार
शहरयार अमजद ख़ान (एडवोकेट)
डिज़ायनिंग
सनी गोस्वामी, सुनील सूर्यवंशी
तकनीकी सहयोग
पारुल सिंह

संपादन, प्रकाशन, संचालन एवं सभी सदस्य पूर्णत: अवैतनिक, अव्यवसायिक।
पत्रिका में प्रकाशित सामग्री लेखकों के निजी विचार हैं। संपादक तथा प्रकाशक का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है। प्रकाशित रचनाओं में व्यक्त विचारों का पूर्ण उत्तरदायित्व लेखक पर होगा।
पत्रिका जनवरी, अप्रैल, जुलाई तथा अक्टूबर में प्रकाशित होगी।
समस्त विवादों का न्याय क्षेत्र सीहोर मध्यप्रदेश रहेगा।

Dhingra Family Foundation
USA

विभोम-स्वर

वैश्विक हिन्दी चिंतन की अंतर्राष्ट्रीय पत्रिका

वर्ष : 4, अंक : 14, त्रैमासिक : जुलाई-सितम्बर 2019
RNI NUMBER : MPHIN/2016/70609
ISSN NUMBER : 2455-9814

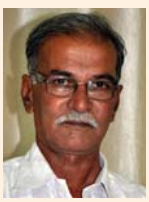

आवरण चित्र
राजेंद्र शर्मा बब्बल गुरु

रेखाचित्र
अनुभूति गुप्ता

Dhingra Family Foundation
101 Guymon Court, Morrisville
NC-27560, USA
Ph. +1-919-801-0672
Email: sudhadrishti@gmail.com

इस अंक में

वैश्विक हिन्दी चिंतन की अंतर्राष्ट्रीय पत्रिका

वर्ष : 4, अंक : 14, त्रैमासिक : जुलाई-सितम्बर 2019

संपादकीय 5

मित्रनामा 7

साक्षात्कार

ज़किया ज़ुबैरी से सुधा ओम ढींगरा की बातचीत 9

कथा कहानी

कितना सहेगी आनंदिता
अरुण अर्णव खरे 13

मधुर मुकेश को किसने मारा ?
रिम्पी खिल्लन सिंह 18

'और तुझे क्या चाहिए...औरत'
उषा राजे सक्सेना 22

हथेलियों में क्षितिज
आभा सिंह 27

मी टू
ज़हीर कुरेशी 31

तबादला
विनीता परमार 34

लघुकथाएँ

बिट्टो
अंकिता भार्गव 36

आज का वोटर
रईस सिद्दीक़ी 54

व्यंग्य

धोखेबाज़ मौसम की जय हो!
प्रेम जनमेजय 37

'अथ गरीब चिंतन'
हरीश नवल 39

शहरों की रूह

शिकागो की दुनिया
शुभ्रा ओझा 41

संस्मरण

प्रदीप चौबे – कोई बतलाए कि हम बतलाएँ क्या
वीरेन्द्र जैन 44

आलेख

विश्व साहित्य में नारी स्वर
उर्मिला कुमारी 46

हमारी धरोहर

मीठी नींद – मीठे सपने
शशि पाधा 50

भाषांतर

मूल कथा : हारुकी मुराकामी
अनुवाद : सुशांत सुप्रिय 52

मूल कथा : रा. रं. बोराडे
अनुवाद – डॉ. सचिन गपाट 55

ग़ज़लें

सुभाष पाठक 'ज़िया' 66

कविताएँ

गौरव भारती 58
पंकज कुमार साह 59
मालिनी गौतम 60
एम.जोशी हिमानी 61
शशांक पाण्डेय 62
उमेश चरपे 62
राधा गुप्ता 63
प्रतिभा सिंह 64

गीत

सूर्य प्रकाश मिश्र 65
ज्ञानेन्द्र मोहन 'ज्ञान' 66

नव पल्लव

प्रशांत चक्रवर्तुला 67

समाचार सार

आचार्य निरंजननाथ सम्मान समारोह 68
जिन्हें जुर्म-ए-इश्क़ पे नाज़ था 69
कुल्लू व्यंग्य महोत्सव 70
व्यंग्य सत्र का आयोजन 70
देवीशंकर अवस्थी सम्मान 71
'कुबेर' का लोकार्पण 71
'सृजन संवाद' की गोष्ठी 72
जारी अपना सफ़र रहा 72
एक साँझ कविता की 72
सरयू से गंगा 73
'दो ध्रुवों के बीच की आस' लोकार्पण 73
फोलसम नगरी में कवि सम्मेलन 73

आख़िरी पन्ना 74

विभोम-स्वर सदस्यता प्रपत्र

यदि आप विभोम-स्वर की सदस्यता लेना चाहते हैं, तो सदस्यता शुल्क इस प्रकार है :
1500 रुपये (पाँच वर्ष), 3000 रुपये (आजीवन)। सदस्यता शुल्क आप चैक / ड्राफ़्ट द्वारा विभोम स्वर (VIBHOM SWAR) के नाम से भेज सकते हैं। आप सदस्यता शुल्क को विभोम-स्वर के बैंक खाते में भी जमा कर सकते हैं, बैंक खाते का विवरण इस प्रकार है :
Name of Account : **Vibhom Swar**, Account Number : **30010200000312**, Type : **Current Account**, Bank : **Bank Of Baroda**, Branch : **Sehore (M.P.)**, IFSC Code : **BARB0SEHORE** (Fifth Character is "Zero")
(विशेष रूप से ध्यान दें कि आई. एफ. एस. सी. कोड में पाँचवा कैरेक्टर अंग्रेज़ी का अक्षर 'ओ' नहीं है बल्कि अंक 'ज़ीरो' है।)
सदस्यता शुल्क के साथ नीचे दिये गए विवरण अनुसार जानकारी ईमेल अथवा डाक से हमें भेजें जिससे आपको पत्रिका भेजी जा सके:

नाम :— — — — — — — — — — — — — — — — — **डाक का पता :**— **सदस्यता शुल्क :**— — — — — — — **चैक / ड्राफ़्ट नंबर :**— — — — — — — — — —

ट्रांज़ेक्शन कोड (यदि ऑनलाइन ट्रांस्फ़र किया है) :— — — — — — **दिनांक :** — — — — — — — — — — — — —

(यदि सदस्यता शुल्क बैंक खाते में नकद जमा किया है तो बैंक की जमा रसीद डाक से अथवा स्कैन करके ईमेल द्वारा प्रेषित करें।)

संपादकीय एवं व्यवस्थापकीय कार्यालय : पी. सी. लैब, शॉप नंबर. 3-4-5-6, सम्राट कॉम्प्लैक्स बेसमेंट, बस स्टैंड के सामने, सीहोर, म.प्र. 466001, दूरभाष : 07562405545, मोबाइल : 09806162184, ईमेल : vibhomswar@gmail.com

समय की दस्तक को सुनें और हो रहे परिवर्तन को देखें।

सुधा ओम ढींगरा
101, गाईमन कोर्ट, मोरिंस्विल
नॉर्थ कैरोलाइना-27560, यू.एस. ए.
मोबाइल : +1-919-801-0672
ईमेल sudhadrishti@gmail.com

रिश्वत,बईमानी और भ्रष्टाचार का जब ज़िक्र होता है तो विश्व में कुछ देशों को लोग अपनी उँगलियों पर गिनने लगते हैं। भारत का नाम उनमें प्रमुखता से लिया जाता है। पर वे यह भूल जाते हैं कि अच्छे बुरे लोग पूरी दुनिया में है और बड़े धड़ल्ले से अपनी उपस्थिति दर्ज करवाते हैं। अविकसित देशों में आमजन रिश्वत, बेईमानी और भ्रष्टाचार के शिकार होते हैं और उससे प्रभावित भी होते हैं पर विकसित देशों में जनता का बहुत ख़याल रखा जाता है। यह नहीं कहा जा सकता कि विदेशों में घूँसखोरी नहीं है। सभी ईमानदार हैं, जो भी होता है, ऊँचे स्तर पर होता है, आमलोग इससे प्रभावित नहीं होते।

भारत के विश्वविद्यालयों और विद्यालयों में प्रवेश पाने, परीक्षाओं में नक़ल और प्री मेडिकल की परीक्षाओं को लेकर जो स्कैंडल सामने आए थे, विदेशी अख़बारों और मीडिया ने उसे बहुत उछाला था। पिछले दिनों अमेरिका के आई वी लीग कॉलेज में दाख़िला लेने के लिए बहुत बड़ा स्कैंडल सामने आया है। आई वी लीग कॉलेजों में प्रवेश पाना आसान नहीं होता, इसके लिए विद्यार्थियों के बहुत अच्छे ग्रेड और वे अतिरिक्त क़ाबिल होने चाहिए। हारवर्ड, स्टैनफ़ोर्ड, कोलम्बिया, येल इत्यादि आई वी लीग कॉलेज हैं। आई वी लीग ग्रुप का हिस्सा हैं।

इन विश्वविद्यालयों में प्रवेश पाना गर्व की बात मानी जाती है। प्रतिभासंपन्न विद्यार्थी अपनी मेहनत, लगन और अपने दम पर यहाँ दाख़िला प्राप्त करते हैं। अभिजात वर्ग और यहाँ स्वयं को विशिष्ट वर्ग मानने वाले लोग (जिनमें कुछेक भारतीय भी हैं) के लिए अपने बच्चों को आई वी लीग कॉलेजों में भेजना स्टेटस सिंबल बन गया है। कुछ माँ-बाप ने अपने कम प्रतिभा संपन्न बच्चों को इन विश्वविद्यालयों में दाख़िला दिलवाने के लिए काउंसलर और अन्य कर्मचारियों को रिश्वत दी। प्रवेश परीक्षाओं में स्टाफ के साथ मिलकर बेईमानी की। जब ये स्कैंडल सामने आया तो कई व्यवसायी और सिलेब्रिटीज़ पकड़े गए।

फिर शुरू हुई राष्ट्रीय स्तर पर विश्वविद्यालयों और विद्यालयों की इन्क्वायरी। कई स्कैंडल पकड़े गए पर यहाँ एक बात बहुत सुख और शांति देती है कि ऐसे स्कैंडल पकड़े जाने के बाद जल्दी ही सुनवाई की जाती है और गुनहगारों को सज़ा दी जाती है। छोटे बड़े का कोई लिहाज़ नहीं किया जाता है। क़ानून व्यवस्था के साथ खिलवाड़ नहीं होता। ऐसी धाँधलियों को यहाँ बहुत गंभीरता से लिया जाता है। सभी विश्वविद्यालयों ने अपनी प्रवेश प्रणाली को ही बदल डाला ताकि फिर कोई भी इसका दुरुपयोग न कर सके।

काश! भारत में भी ऐसा हो। भ्रष्टाचार किसी भी क्षेत्र में हो, उस पर शीघ्र कार्यवाही की जाए।

पूरे विश्व के माँ-बाप अपने बच्चों का भला चाहते हैं। पर अनैतिक रास्ते से किया गया भला, नैतिक कैसे हो सकता है! शिक्षा केंद्रों के प्रवेश द्वार खुलवाने के लिए रिश्वत, डोनेशन के रूप में देकर बच्चों को क्या शिक्षा दिलवाई जा रही है ? शायद आधुनिक जीवन की भाग-दौड़ में किसी के पास इस विषय पर सोचने का समय नहीं है.....

जैसा मुझे पता चला कि भारत में मेडिकल कॉलेजों में प्रवेश के लिए होने वाली नीट की परीक्षा का भी वहाँ के प्राइवेट मेडिकल कॉलेजों द्वारा दुरुपयोग किया जा रहा है। सरकारी

संपादकीय

मेडिकल कॉलेजों में प्रवेश के लिए तो अस्सी प्रतिशत तक कट-ऑफ़ जा रहा है लेकिन प्राइवेट मेडिकल कॉलेजों में शून्य नंबर वाले बच्चे को भी प्रवेश मिल सकता है। मैनेजमेंट कोटा सिस्टम वहाँ चलता है, जिसमें आप एक बड़ी रकम, जो पचास लाख के लगभग होती है, देकर सीधे अपने बच्चे को प्राइवेट कॉलेज में प्रवेश दिला सकते हैं। भले ही उसने नीट की क्वालिफ़ाइंग प्रवेश परीक्षा में शून्य ही नंबर लाये हों। ज़रा सोचिए यह शून्य नंबर लाने वाले कल जब डॉक्टर बनेंगे, तो क्या करेंगे ? यह माँ-बाप को भी सोचना होगा कि केवल पैसे के दम पर अपने बच्चे को प्रवेश दिला वो अपने बच्चे का भविष्य सुधार रहे हैं या देश का भविष्य बिगाड़ रहे हैं।

अमेरिका में जिन व्यवसायी और सेलिब्रटीज़ माँ-बाप को सज़ा मिली है,उन्होंने बच्चों के लिए क्या उदाहरण पेश किया! जाने अनजाने हमारे व्यवहार और कर्मों का प्रभाव आगामी पीढ़ी पर पड़ रहा है।

प्रकृति भी कम प्रभावित नहीं कर रही। दरअसल जहाँ भी कुछ गलत होता है उसका असर पड़ता ही है। चाहे वह सामाजिक व्यवस्था हो, राजनीति हो, जीवन हो या पर्यावरण। पर्यावरण के प्रति सचेत होने के लिए मैंने कई बार लिखा है। प्रकृति का प्रकोप देखकर अगर अभी भी नहीं जागे तो पता नहीं भविष्य में ये बरसातें, बाढ़ें क्या रूप धार लें! प्रलय इसी तरह तो आती है। इतिहास गवाह है कि कई सभ्यताएँ समाप्त हुई हैं। कई शहर जलमग्न हुए हैं। प्रकृति हमारी मित्र है। उसकी रक्षा करना हमारा फ़र्ज़ है उसी तरह जैसे हम अपनों की करते हैं। वह हमें बहुत कुछ देती है। उसे इतना मत रौंदे कि वह आक्रमक हो जाए। समय की दस्तक को सुनें और हो रहे परिवर्तन को देखें। पर्यावरण को दूषित होने से बचाएँ.... मैं तो निवेदन की एक अर्ज़ी ही डाल सकती हूँ..... उम्मीद है आप मेरी अर्ज़ी पर ध्यान देंगे।

आपकी,

सुधा ओम ढींगरा

वर्षा का आगमन कितनी प्रतीक्षा के पश्चात् होता है। लेकिन कई स्थानों पर यह प्रतीक्षा केवल प्रतीक्षा ही रह जाती है। कहीं सूखा पड़ता है, तो कहीं बाढ़ आती है। प्रकृति अपने तरीक़े से मानव को चेताने का प्रयास करती है। लेकिन शायद हम उन संकेतों को समझ ही नहीं पा रहे, जो प्रकृति हमें दे रही है।

मित्रनामा

संपादकीय में बेहद गंभीर बातें

हमारे देश में वोट के लिए ग़रीब जनता या आर्थिक रूप से कमज़ोर लोगों को आर्थिक सहायता देना अहितकारी है, क्योंकि ऐसा करने से जनता अकर्मण्यता का शिकार हो जाती है और उन्हें मुफ़्तखोरी की आदत सी हो जाती है और लोग सरकारी योजनाओं और सहायता पर अवलम्बित हो जाते हैं। वाह सुधा जी, आपनें तो जैसे मेरे मन की बात कह दी, क्योंकि सरकारी अनुदान हमें अकर्मण्य और दूसरे पर आश्रित जैसा कर देते हैं और फिर हम यह चाहने लगते हैं कि हम बस हाथ पर हाथ धरे बैठे रहें और हमें सारी सुविधाएँ मिल जाएँ मुफ़्त में। मेरे इस महान् देश भारत में बेरोज़गारी बहुत है और कोई भी चालाक आदमी इस बेरोज़गार भीड़ का उपयोग अपने राजनीतिक लाभ के लिए कर सकता है और करता भी रहा है।

दूसरी बात की सरकार पर ज़्यादा आश्रित जनता सरकारी अनुग्रहों के बदले अपनी स्वतंत्रता और अधिकारों को सरकार के हितार्थ गिरवी रख देता है और इन अधिकारों में एक अधिकार 'अभिव्यक्ति की आज़ादी' का भी है। अमेरिका के वेलफ़ेयर और फ़ूड स्टैम्प्स के दुरुपयोग पर लिखी अपनी कहानी (सूरज क्यों निकलता है..?) की चर्चा करते हुए सुधा जी ने जो कुछ भी कहा है वो चिन्तनीय है। ग़रीब के जीवन स्तर में सुधार के लिए और उन्हें आर्थिक रूप से सबल बनाने के लिए आवश्यक है कि skills development के प्रयास किए जाएँ और रोज़ी - रोज़गार के अवसर उपलब्ध कराए जाएँ, न कि बैठे-ठाले ही उन्हें आर्थिक सहायता दी जाए। हमारे देश में सरकारी विद्यालयों में शिक्षा की जो जर्जर हालत है उसे नज़रंदाज़ नहीं किया जा सकता है। कहने को तो शिक्षा मुफ़्त में दी जा रही है, पर उस शिक्षा की गुणवत्ता क्या है ये हम सब जानते हैं, लेकिन इस तरफ़ हमारी सरकारें ध्यान नहीं देतीं हैं। सत्ता और कुर्सी के खेल में सब कुछ तबाह हो रहा है और हमारे जनप्रतिनिधियों को इस सबसे कोई सरोकार नहीं है। हमारे राजनेता निचले तबके के आर्थिक रूप से कमज़ोर लोगों को आर्थिक सहायता के नाम पर मुफ़्त सुविधाओं का लॉली पॉप थमाकर वोट बटोरने में लगे हुए हैं और कुर्सी के लिए ग़ैरकानूनी और अवैध तरीक़े/ हथकण्डे भी अपनाते हैं और इस सबके घातक परिणामों से मुँह मोड़कर सत्ता- सुख भोग रहे हैं। इस विषय पर क़लम चला कर आपने मानवता का उपकार किया है।

आपके संपादकीय को बहुत धैर्य से पढ़ना मुझे यथोचित लगा, क्योंकि इसमें लेखन के सम्बन्ध में बहुत संक्षिप्त में बेहद गंभीर बातें की गई है। लेखन बड़े धैर्य का काम है या यूँ समझिए कि एक साधना है लेखन, लेकिन आज के युवा जिनके पास धैर्य का अभाव है, लिखते हैं पर जिस तरह की गम्भीरता और संवेदना की आवश्यकता होती है लेखन के लिए, युवा पीढ़ी में उसका अभाव है।

आज लिखते हैं और रातों रात चर्चित हो जाना चाहते हैं, क्योंकि विभिन्न साइट्स पर लिखने वाले युवाओं की झूठी तारीफ़ करने वाले भी कम नहीं हैं और लाज़िमी है कि अगर आप इनके लेखन में त्रुटियाँ निकालेंगी, तो इन्हें लगेगा कि आप नाहक ही इनके लिखे में त्रुटियाँ निकाल रही हैं। लेकिन आप हैं कि साहित्य की गुणवत्ता को लेकर कोई समझौता नहीं कर सकती हैं और साहित्य में एक अनुशासन को आवश्यक मानती हैं और मैं आप से पूरी तरह से सहमत हूँ और यह आशा करता हूँ की आप विभोम-स्वर की स्तरीयता से कोई समझौता नहीं करेंगी।

-नवनीत कुमार झा, दरभंगा
wrambharos@gmail.com

***

शमा सुषमा- दो बहनों की कथा

ढींगरा फ़ाउण्डेशन की प्रशंसनीय व गौरवपूर्ण चित्रों सहित दोनों पत्रिकाएँ मिलीं। 'कमलेश्वर स्मृति कथा पुरस्कार' से सम्मानित किए जाने के लिए आपको शत-शत बधाई!

पत्रिका मिली, आत्मा को भोजन मिला। कविताएँ, लघु कथाएँ, कहानियाँ सभी रुचिकर लगीं। चौधरी मदन मोहन समर ने अपनी कहानी ''आप क्यू में हैं...'' के माध्यम से गरीब भारतीय के जीवन की त्रासदी को, उनकी लाचारी को कुछ ही शब्दों में सब कुछ कह दिया है।

आगे मेरा ध्यान गया शमा सुषमा- दो बहनों की कथा पर। याद आया अफ़रोज़ इन पत्रिकाओं के अनुसन्धान के बारे में बता रहे थे और बहुत excited थे।

डॉ. अफ़रोज़ ताज ने इस ऐतिहासिक सत्य को बड़ी ईमानदारी से, बगैर पक्षपात के, सरल और मनोहारी शब्दों में प्रस्तुत किया है।

आलेख में प्रस्तुत विस्तार से पता लगता है, इन्होंने इन पत्रिकाओं के शोध में कितने दरवाज़े खटखटाए होंगे और कितना समय लगाया होगा!

1950 से 1970, तीस वर्ष तक 'शमा' और 'सुषमा' की बुलान्दगी संपादक श्री यूसुफ़ देहलवी की सूझ बूझ और लगन का परिचायक है।

1975 में 'शमा' और 'सुषमा' के पिता देहलवी साहेब का इंतिकाल हो गया और बहने अनाथ हो गईं।

अपनी सफलता के शिखर इतने समय तक टिकने के बाद नीचे उतरना ही था। All good things come to an end ! लहरें ऊँचाई पर नहीं ठहर सकतीं, उन्हें नीचे आना ही होता है, वही हुआ 'शमा' और 'सुषमा' का भी, चाहे निधन का कारण एक हो या अनके!

-मीरा गोयल, 211Landreth Ct, Durham, NC-27713,USA
madeera.goyal@gmail.com

***

वैश्विक मुद्दे को लेकर चर्चा

सबसे पहले तो 'विभोम-स्वर' एवं 'शिवना साहित्यिकी' पत्रिकाएँ भेजने के लिए आभार। मैं सब से पहले सुधा जी का सम्पादकीय पढ़ती हूँ, क्योंकि इसमें सदा किसी वैश्विक मुद्दे को लेकर चर्चा की जाती है। वे विभिन्न देशों में हुए आर्थिक पतन को वो वहाँ की सरकारों में मुफ्तखोरी को प्रोत्साहन देने को ज़िम्मेवार मानती हैं। इस में कोई दो राय नहीं हैं कि ऐसा कानून तो

किसी को भी निठल्ला बना देगा। अमेरिका इसका सब से बड़ा उदाहरण है। अब यह सोच का विषय तो है ही। दूसरी बात जो उन्होंने कही वो जैसे मेरे मन की बात जान कर ही कही गई हो। सम्पादक और लेखक के संबंध में यह ज़रूरी है कि जब आवश्यकता हो सम्पादक लेखक का दिशा निर्देश करे, उसे सुझाव दे। और अगर लेखक को मान्य हो तो यह सिलसिला बना रहे। मैं जब से पूर्णिमा वर्मन जी, सुधा जी से जुडी हूँ, मेरे लेखन को गति भी मिली है और परिष्कृत भी हुआ है। मैं तो इन दोनों से कह देती हूँ कि आप उँगली पकड़ के लिखवा ही लेती हैं। इस विषय पर मैं कभी विस्तार से लिखना चाहूँगी।

इस अंक में बहुत सी कहानियाँ हैं लेकिन जिस लघुकथा ने मुझे निशब्द कर दिया वो थी -डॉ. विनोद नायक की 'रसायन''। इसके मार्मिक कथानक ने अंदर तक झझकोर दिया। हर्ष बाला शर्मा की 'मेरी तीन कस्में' एक शानदार कहानी है जिसमें स्त्री मन में उठते उहापोह को बहुत गहराई से शब्दों में बाँधा गया है। वाकई वो बधाई की पात्र हैं। 'कि तुम मेरी ज़िन्दगी हो' बड़ी मासूम सी कहानी है और इसकी मासूमियत को भी बड़े सहज ढंग से प्रस्तुत किया गया है। मंजुश्री जी की 'शीशे में बंद ज़िन्दगी' so called डेवलप्ड देशों का कड़वा सच है। यहाँ की ज़िंदगी में एकाकीपन घुन की तरह लगा है और हम चहल पहल वाले देशों में रहने वाले इसे स्वीकार नहीं कर सकते। कहानियाँ सभी उच्च कोटि की हैं, हरेक के विषय में लिखना कठिन हो जाएगा। डॉ. अफरोज़ ताज जी का आलेख शमा और सुषमा पत्रिकाओं के जीवन और विलुप्ति पर प्रकाश डालता है। उनका इस विषय में शोध सार्थक है। सभी कविताएँ पढ़ कर लगा कि इस विधा में लिखने के लिए कितने विषय हैं। हर कविता अपने में एक नयापन समेटे हुए है। बधाई सब को। सुधा जी, मारीशस के लेखक श्री रामदेव धुरंधर जी के विचारों से परिचित कराने के लिए आभार।उन्होंने बहुत बेबाक ढंग से अपने दृष्टिकोण को हम तक पहुँचाया है। अंतिम पन्ने में सुबीर जी ने लोकार्पण समारोह पर जो चुहुल-ठिठोली की है, यही इन समारोहों का असली रूप है। मेरे विचार से पुस्तक के विषय में पत्र वाचन के बाद बस बाकी अतिथि शुभकामनाएँ ही दें तो अच्छा रहेगा।

अंत में ढींगरा फ़ैमिली फ़ाउण्डेशन के भोपाल में हुए समारोह के चित्र वहाँ पर हमारी भी उपस्थिति दर्ज़ करा गए। इसके लिए, ओम जी, सुधा जी और पंकज जी को बहुत बधाई। बहुत कुछ रह गया है कहने में क्यूँकि पूरी पत्रिका पढ़ कर हर विषय पर लिखना थोड़ा असम्भव है। सम्पादक मंडल और सभी रचनाकारों को बधाई।

-शशि पाधा, 10804, Sunset hills Rd, Reston Virginia, 20190 20190, USA

***

Eye opener experiences

Eye opener experiences and that too right from the horse's mouth. It disturbed me for quite some time. Wonder, how could you bear it?

-Abid Surti
aabidssurti@gmail.com

***

विचारोत्तेजक संपादकीय

आपकी प्रतिष्ठित अंतरराष्ट्रीय साहित्यिक त्रैमासिकी 'विभोम-स्वर' का अक्तूबर-दिसंबर, 2018 अंक प्राप्त हुआ, आभार। संपादकीय के माध्यम से आदरणीया सुधा ओम ढींगरा जी ने पर्यावरण - असंतुलन के खतरों को लेकर जो चिंता व्यक्त की है, वह सर्वथा जायज़ है। सबसे अफसोसनाक बात यही है कि वैज्ञानिकों और पर्यावरणविदों की तमाम अपीलों और चेतावनियों के बावजूद अमेरिका जैसे विकसित देश पर्यावरण -सुधारों को लेकर कोई गंभीर कदम नहीं उठाते, बल्कि तरह-तरह के बहाने बनाकर सारा दोष दूसरे देशों पर डालते रहते हैं। सोशल मीडिया के बढ़ते प्रभाव ने हमारी संवेदनाओं पर बहुत प्रहार किया है, आज हालात यहाँ तक पहुँच गए हैं कि एक ही घर में रहते हुए लोग एक दूसरे के दुख-सुख से अपरिचित नितांत एकाकी जीवन जीने को अभिशप्त हैं। सुधा जी ने इस विडम्बना की ओर भी हमारा ध्यान आकृष्ट किया है। इस विचारोत्तेजक संपादकीय के लिए उनका बहुत-बहुत आभार।

''आख़िरी पन्ना'' स्तम्भ में सुबीर जी ने सोशल मीडिया जैसे मंचों के माध्यम से समाज के बड़े-बड़े शातिर दिमाग लोगों, जिनमें ज़्यादातर सत्ता और सियासत के ऊँचे -ऊँचे पायदानों पर बैठे हैं, के द्वारा अपने - अपने हित में भोले-भाले लोगों को इस्तेमाल किए जाने का महत्त्वपूर्ण मुद्दा उठाया है। निश्चित रूप से आज यही हो रहा है। देश के सामने उपस्थित रोटी-रोज़गार जैसे महत्त्वपूर्ण मुद्दों और समस्याओं से ध्यान हटाने के लिए तरह-तरह के षड्यंत्र रचकर जनता को गुमराह करना हमारे देश की राजनीति का अहम हिस्सा बन चुका है। हम में से ज़्यादातर लोग, जिनमें दुर्भाग्य से हमारे नौजवान बहुतायत में होते हैं, थोड़े से लालच में एक -दूसरे से लड़ रहे हैं, बिना यह समझे कि हमें लड़ा कौन रहा है ! हाल ही मे हुई बुलंदशहर जैसी घटनाएँ इसका प्रत्यक्ष प्रमाण हैं। इस ज़रूरी विषय पर पाठकों से रूबरू होने के लिए श्री सुबीर जी का भी बहुत शुक्रिया।

हमेशा की भाँति अन्य सामग्री भी पठनीय है। श्रेष्ठ संपादन के लिए हमारी हार्दिक बधाई स्वीकारें।

-एक पाठक

***

भव्य तथा गरिमामय कार्यक्रम

'शिवना साहित्यिकी' का अप्रैल अंक प्राप्त हुआ, आभार। इस अंक में भोपाल में आयोजित कार्यक्रम के बारे में विस्तार से जानकारी प्राप्त हुई। आप ने बहुत गरिमामय तरीक़े से यह आयोजन किया तथा हिन्दी के लेखक को भी सेलिब्रिटी होने का एहसास करवाया। इस प्रकार के भव्य तथा गरिमामय कार्यक्रम हिन्दी में कम ही होते हैं। आशा है आपके कार्यक्रम से प्रेरणा लेकर इस प्रकार के व्यवस्थित तथा गरिमामय कार्यक्रम हिन्दी में होने लगेंगे।

-राजेंद्र देशमुख, विश्वविद्यालय के पास, औरंगाबाद, महाराष्ट्र

***

शिक्षा: स्नातक (बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय)।
साहित्यिक गतिविधियाँ - लंदन में एशियन कम्यूनिट आर्ट्स की अध्यक्षा एवं कथा यू.के. एवं पुरवाई पत्रिका की संरक्षक के तौर पर हिन्दी साहित्य, कला, नृत्य एवं गायन आदि के प्रचार प्रसार में योगदान। भारत में प्रवासी सम्मेलनों का आयोजन एवं भागीदारी।
लेखन : साँकल (कहानी संग्रह)। कहानियाँ हंस, नया ज्ञानोदय, रचना समय, पाखी जैसी पत्रिकाओं में प्रकाशित।
संपादन: ब्रिटेन में उर्दू क़लम (ब्रिटेन के उर्दू कहानीकारों का हिन्दी अनूदित संकलन), समुद्र पार हिन्दी ग़ज़ल (प्रवासी ग़ज़लों का संकलन)।
अनुवाद: कुछ कहानियों का अंग्रेज़ी में अनुवाद।
पुरस्कार: शिवना साहित्य सम्मान, अभिव्यक्ति कहानी पुरस्कार, आज़मगढ़ नगर निगम द्वारा नागरिक अभिनंदन सम्मान। भारतीय उच्चायोग द्वारा लक्ष्मीमल सिंघवी पुरस्कार।
ज़किया ज़ुबैरी पर आलोचनात्मक ग्रन्थ: ज़किया ज़ुबैरी - परदेस में देस (2017) - संपादक: आशिष कंधवे। शोध/अध्ययन - डॉ. अम्बेडकर विश्वविद्यालय, दिल्ली, उड़ीसा विश्विद्यालय एवं जामिया मिल्लिया विश्वविद्यालय से कहानी संग्रह 'साँकल' पर एम.फ़िल.।
सम्मेलनों में भागीदारी: दुबई, लंदन, दिल्ली, बर्मिंघम, यमुना नगर, एवं मुंबई में साहित्यिक सम्मेलनों में। दिल्ली, भोपाल, मुंबई एवं लंदन में कहानी पाठ।
संपर्क: zakiiaz@gmail.com
मोबाइल: 00-44-7957353390

हिन्दी लेखन विचारधारा के दबाव में रहता है, लेखकों को स्वतन्त्र सोच के साथ लिखना चाहिए।

(ब्रिटेन की लेखिका ज़किया ज़ुबैरी से सुधा ओम ढींगरा की बातचीत।)

भारतेत्तर लेखकों में ब्रिटेन की लेखिका ज़किया ज़ुबैरी का प्रभावित व्यक्तित्व विश्व की बहुत सी महिलाओं के लिए प्रेरणा-स्त्रोत है। राजनीति और लेखन दो विरोधाभासों को साथ लेकर चलती हैं। हिन्दी जगत् में यही माना जाता है कि लेखक को सरकार के विरोध में खड़ा रहना चाहिए और ज़किया जी लन्दन के बारनेट चुनाव क्षेत्र से लेबर पार्टी की निर्वाचित काउंसलर हैं। यहाँ लोकल गवर्न्मेण्ट के चलाने में ज़किया जी सहयोग देती हैं। अब तक चार चुनाव जीत चुकी हैं। बारनेट में ज़किया ज़ुबैरी पहली महिला मुस्लिम काउंसलर हैं। एक युरोपीय देश में भारतीय उपमहाद्वीप की मुस्लिम महिला के लिए राजनीति में आना और फिर लेखन से जुड़े रहने के अनुभवों को जानने का आकर्षण मुझे उनका साक्षात्कार लेने के लिए उकसाता रहा। पर मेरी प्रतिबद्धताएँ आड़े आती रहीं। चाहते हुए भी इंटरव्यू को देरी होती गई। आख़िरकार मैंने उन्हें प्रश्न भेज दिए और उन्होंने भी कई चुनौतियों के बावजूद मुझे दो बार में साक्षात्कार पूरा कर दिया। विभोम-स्वर के लिए की गई बातचीत आपके सम्मुख प्रस्तुत हैं.....

प्रश्न : ज़किया जी, प्रवासवास ने लेखक बनाया या आप प्रवास से पहले भी लिखती थीं।

उत्तर : सुधा जी, मैं बहुत छोटी थी जब पिता का साया मेरे सिर से उठ गया। सुनती हूँ कि वे अपने ज़माने के बहुत बड़े सर्जन थे। आज़मगढ़ में एक अंग्रेज़ अफ़सर का घर ख़रीदा था जो क़रीब आधे मील का इलाक़ा कवर करता था। माँ और भाइयों के साये में पली। लिखने से अधिक मेरा शौक़ पेंटिंग करने का था। जब सेकण्डरी स्कूल में थी तो शिवजी की पेंटिंग बना कर बेचती थी और जेबख़र्चा निकालती थी। इलाहबाद से सीनियर स्कूल और बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय से बी.ए. की डिग्री हासिल की। शादी कराची में हुई... और फिर 1977 में लंदन आ गई।

माँ-बाप के साए भी धुँधले पड़ गए... अब हम औलाद की देखभाल में लग गए। बच्चे नया सिक्का होते हैं, माँ- बाप तो पुराना सिक्का बन जाते हैं। हमको तो आने वाली पीढ़ी कि फ़िक्र होती है जिस पीढ़ी ने हमको यहाँ तक पहुँचाया वो पुराने कपड़ों की तरह अलमारी में टंगे रह जाते हैं... इंतज़ार में कि मेरी बारी फिर कब आएगी....!

लंदन में बच्चों के उर्दू के टीचर से बच्चों के साथ-साथ मैंने भी उर्दू पढ़ डाली और तीन चार कहानियाँ उर्दू में लिख भी डालीं। सौभाग्य से उसी बीच तेजेन्द्र शर्मा जी से सम्पर्क हुआ। उन्होंने जब सुना कि बनारस की पढ़ी ये महिला हिंदी के साथ ऐसा अत्याचार कर रही है तो उन्होंने फ़ौरन उर्दू कि कहानी मारिया पढ़ कर सुनाने को कहा और सुनकर एकदम चुप बैठ गए। मैं घबरा गई कि शायद पसंद नहीं आई मेरी कहानी। मगर हुआ इससे एकदम उलटा। शर्मा जी ने हैरानी प्रकट करते हुए पूछा - ''क्या यह कहानी सचमुच आपने लिखी है''। सवाल पसन्द तो नहीं आया मगर मैंने कहा, ''जी बिल्कुल''। उनकी तत्काल प्रतिक्रिया यह थी कि यह तो एकदम मॉडर्न किस्म की कहानी है।

''ज़किया जी आपकी भाषा हिंदी है... हिंदी साहित्य पढ़ कर उर्दू में कहानी लिखने का

क्या तुक है?'' बात मेरी समझ में आ गई क्योंकि उर्दू में इमले की बेहद ग़लतियाँ होती थीं तो उर्दू के उस्ताद जी ठीक किया करते थे। हिंदी भाषा की तो सुन्दरता यही है कि जो बोलते हैं वही लिखते हैं और जो लिखते हैं वही पढ़ते हैं।

इसके यही मतलब हुए कि कहानियाँ लिखना प्रवास के बाद ही आरम्भ हुआ। टूटे हुए बिखरे शीशों को जोड़ कर फिर से गुलदान बनाया और फिर फूलों की ख़ुशबू कहानी बनकर फैलने लगी।

प्रश्न : राजनीति और साहित्य दोनों का स्वभाव अलग है। ज़किया ज़ुबैरी इन दोनों के साथ इन्साफ़ कैसे करती हैं?

उत्तर : ज़किया हिब्रू भाषा का शब्द है, इसके अर्थ होते हैं Pure and Bright, न मालूम क्यों माँ-बाप ने ये नाम रखा। हो सकता है कि इस नाम की क़ैफ़ियत कुछ ऐसी बनी कि मैं राजनीति में भी प्योर और ब्राइट बनी रह सकी। वैसे मैं साहित्यकार पहले बनी फिर राजनीति का फ़न्दा भी गले में स्वयं ही पहना दिया। सुधा जी जो प्रश्न आपने पूछा है वही प्रश्न मेरी माँ ने भी एक बार पूछा था। केवल शब्दों का चुनाव अलग सा था, ''तुझसे किसने कहा था राजनीति का बोझ अपने सर पर उठाने को?'' वे मेरे इस शौक़ से बिलकुल खुश नहीं थीं। कहती थीं ''पॉलिटिक्स में झूठ बोलना पड़ता है...ग़लत वादे करने होते हैं...एक दूसरे पर कीचड़ उछालना होता है... तू क्या क्या करेगी इसमें से... दोज़ख में जाएगी।'' माँ ने तो फैसला भी सुना दिया। वो समझीं कि मैं डर जाऊँगी... पर ऐसा हुआ नहीं। राजनीति तो एक नशा होता है। यह ज़ालिम मुँह को लगे तो छुड़ाई नहीं जा सकती। इससे बड़ा नशा साहित्य है। कुछ लोग व्हिस्की पीते हैं और कुछ केवल वाइन। नशा तो दोनों से आता है पर अलग-अलग श्रेणी का। पीने वाले दोनों को निभाते हैं। मैं भी दोनों निभा रही हूँ... मैंने दोनों को एक दूसरे का पूरक बना दिया है। राजनीति से मुझे कहानियाँ मिलती हैं जो हमारे देशों के लिए बिलकुल नवीन और ताज़ी हवा का झोंका बन कर आती हैं। एक बात है दोनों को साथ-साथ लेकर चलने से 24 घंटों में से सोने के लिए केवल पाँच घंटे मिलते हैं। इस समय सुबह के 3.30 बज रहे हैं और मैं आपके प्रश्नों का

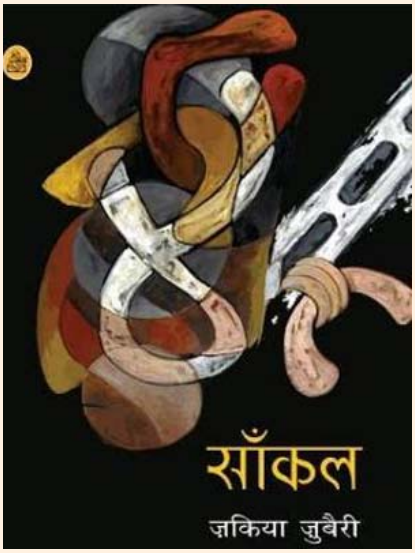

उत्तर दे रही हूँ। मेरी माँ ज़ाहिर है कि एशियन राजनीति के बारे में सोच रही थीं। यहाँ की राजनीति एशिअन राजनीति से बहुत फ़रक होती है।

प्रश्न : एक युरोपीय देश में भारतीय उपमहाद्वीप की मुस्लिम महिला के लिए राजनीति में आने का अनुभव कैसा रहा, क्या आप पाठकों से साझा करना चाहेंगी?... निस्संदेह काफ़ी संघर्ष रहा होगा...

उत्तर : सुधा जी, आप तो स्वयं अमरीका में रहती हैं, इसलिए आप अनुमान लगा सकती हैं कि हमारे अपनाए हुए देशों में टाँग-खिंचाई उस स्तर पर नहीं की जाती जैसे कि भारतीय उपमहाद्वीप में। बल्कि अगर कोई सकारात्मक काम करने के लिए आगे बढ़ता है तो आपको राह दिखाने वाले लोग आपके लिए रास्ता खोलने को तत्पर दिखाई देते हैं और जहाँ तक संभव हो सहारा देने का प्रयास करते हैं।

हाँ राजनीति में बात थोड़ी फ़र्क हो जाती है। मगर स्थिति उतनी ख़राब नहीं जितनी की भारतीय उपमहाद्वीप में है। यहाँ खुले आम टाँग नहीं खींची जाती, मगर जब खींची जाती है तो बाक़ायदा प्लान बनाया जाता है कि किस समय किस कमज़ोरी को उजागर किया जाएगा। अगर कोई बीमार रहने लगे तो उसे भी बहुत मीठे ढंग से विदाई देकर पत्ता काट दिया जाता है। आपको अहसास ही नहीं होता कि आपके साथ क्या हो गया।

मैं लंदन में आने के बाद क़रीब बीस वर्षों तक केवल गृहिणी का काम ही करती रही। हमेशा पति के कहे अनुसार चलती रही, बच्चे पाल कर बड़े करती रही। जब इन ज़िम्मेदारियों से फ़ारिग़ हुई तब राजनीति में आने के बारे में सोचा। लेबर पार्टी मुझे अपनी सोच के निकट लगी क्योंकि यहाँ आम आदमी के दर्द की बात की जाती थी। वहाँ मुझे हाथों हाथ लिया गया। एक मामले में कहा जाए तो मेरा पुनर्जन्म हो गया। 1998 से लेकर आजतक कभी ऐसा महसूस नहीं हुआ कि मैं किसी पराए देश में किसी और रंग के लोगों के साथ काम कर रही हूँ। यह ज़रूर समझ में आ गया कि यहाँ राजनीति में राजनीति करने की भी ज़रूरत नहीं होती। वो बहुत ऊँचे स्तर पर होती है। हमारे लेवल पर तो बस श्रम और सत्य बस इन दो ख़ूबियों को साथ रखिए तो आपका बेड़ा पार हो जाएगा। यहाँ के चुनावों में एक दूसरे पर कीचड़ नहीं उछाला जाता। इस बार भारत के चुनावों में डिसकोर्स का स्तर बहुत नीचे गिर गया है।

यहाँ लन्दन में यदि हम ब्रिटिश कल्चर का आदर करते हैं और हर वक़्त अपनी संस्कृति या मज़हब को महान् बताने की कोशिश नहीं करते हैं तो आप को आसानी से स्थानीय समाज अपना लेता है। यदि हम अपने मज़हब को औरों पर थोपने का प्रयास ना करें और मज़हब को अपने घर तक सीमित रखें तो कोई आपको नहीं छेड़ेगा; आप पुरसुकून ज़िन्दगी जी सकते हैं।

सच तो यह है सुधा जी मुझे इस देश की राजनीति में अपने आपको स्थापित करने में कोई संघर्ष नहीं करना पड़ा। बल्कि मेरी प्रतिबद्धता, मेहनत और सच्चाई के कारण मुझे बेहद सम्मान मिला। मैं अपने प्रवासी पाठकों को ख़ास तौर पर कहना चाहूँगी कि हमें अपनी स्थानीय राजनीति में खुल कर हिस्सा लेना चाहिए। अब वो ज़माना नहीं है जहाँ भारतीय परिवार अपने बच्चों को केवल डॉक्टर, इंजीनियर, वकील या अकाउण्टेण्ट बना देखना चाहते थे।

प्रश्न : आप पहले राजनीतिज्ञ हैं या लेखक?

उत्तर : इस प्रश्न का उत्तर तो शायद रिचर्ड द्वितीय, बहादुर शाह ज़फ़र या अटल बिहारी वाजपेयी भी नहीं दे पाते। रिचर्ड दी सेकण्ड में शेक्सपीयर ने अपनी बेहतरीन पोयट्री लिखी है। बहादुर शाह ज़फ़र की दो ग़ज़लें तो आज तक अमर हैं और अटल जी

की कविताएँ तो हमें भीतर तक छू ही जाती हैं। मैं भी दोनों क्षेत्रों में घालमेल नहीं करती। जब घर में होती हूँ तो माँ होती हूँ, साहित्यिक समाज में लेखक और राजनीति में लेबर पार्टी की प्रबल समर्थक और स्थानीय सरकार का एक हिस्सा। क्योंकि मैं दोनों ही क्षेत्रों में अपने किरदार को एन्जॉय करती हूँ, इसलिए मुझे दोनों क्षेत्रों में अपना बेस्ट देने में कोई समस्या महसूस नहीं होती।

प्रश्न : आपकी लेखन प्रक्रिया क्या है... विशेषत: कहानी के संदर्भ में?

कुछ पहले से तय प्रक्रिया तो नहीं कह पाऊँगी। हर कहानी अलग ढंग से अपनी प्रक्रिया तय करती है। जब तक भीतर से एक आवाज़ सुनाई नहीं देती कहानी बनने की प्रक्रिया शुरू ही नहीं हो पाती। ऐसा नहीं होता कि सोच लूँ कि चन्द दिनों की छुट्टियाँ हैं तो चलो एक कहानी ही लिख ली जाए। मेरे साथ तो कहानी भी कविता की तरह उतरती है।... फिर दिमाग़ में पकती है और अपने आप काग़ज़ पर उतरने लगती है। दरअसल मेरी अधिकांश कहानियों में आज की नारी की लाचारी, उन पर किए जा रहे अत्याचार, उनके अधिकारों का विमर्श, उनकी घुटन - बच्ची हो या बूढ़ी -का ज़िक्र होता है। नारी को अभी दूसरे या तीसरे दर्जे का नागरिक माना जाता है। इसलिए मेरी कहानियाँ मेरी बेचैनी को शब्द देती है।

कोई घटना घट जाती है तो मुझे हफ़्तों घुटन होती रहती है। मेरा प्रोफ़ेशन ऐसा है कि मुझे कमज़ोर औऱ परेशान लोगों की लड़ाई लड़नी ही पड़ती है। बाबुल मोरा की लीसा भी मेरे एक केसवर्क का पात्र है। मुझे ऐसे पात्रों के दर्द का इमोशनल भार झेलना पड़ता है। मेरे भीतर का काउंसलर 'लीसा' जैसे पात्रों की लड़ाई एक स्तर पर काउंसिल से लड़ता है तो दूसरी तरफ़ मेरे भीतर का लेखक उस पात्र के भीतरी दर्द को महसूस करते हुए कहानी का तानाबाना बुनता रहता है। फिर वो पल आता है जब मेरी क़लम ख़ुद-ब-ख़ुद पन्नों पर मेरी बेचैनी को उतारने लगती है। कहानी लिखने से पहले के तीन-चार दिन बहुत बेचैन करने वाले दिन होते हैं। हर एक पात्र कहानी में अपना-अपना स्थान तय करने लगता है और मैं कहानी के ज़रिए जो कहना चाहती हूँ वो

उभर कर सामने आ जाता है।

मेरी कुछ कहानियाँ मेरे क्षेत्र के रेज़िडेन्ट्स के संपर्क में आने से पैदा होती हैं। वे मेरी एडवाइस सर्जरी पर आते हैं और अपनी कहानी मेरे पास छोड़ जाते हैं। मेरी एक कहानी है 'बेचारी ईडियट' जिसके साथ राजनीति में इतना कुछ घटित होता रहा कि मैं अपने आपको उसके दर्द से बचा नहीं पाई। मेरी मुख्य पात्र के साथ घटित तो बहुत कुछ हुआ मगर मुझे उन सब में से केवल वही घटनाएँ चुननी थीं जो कहानी में पिरोई जा सकें। मैं कहानी लिखने के बाद उसे कुछ दिनों के लिए छोड़ देती हूँ। यह मैंने अपने साहित्य-गुरु तेजेन्द्र शर्मा जी से सीखा है। उनका कहना है कि जब तक कहानी से दूरी न बन जाए तब तक उसे अंतिम प्रारूप ना दिया जाए।

आजकल जब कभी कोई विषय या घटना अपनी ओर ध्यान आकर्षित करते हैं उन्हें अपनी स्टडी में सामने लगे बोर्ड पर गुलाबी और पीले काग़ज़ों पर लिख कर टाँग देती हूँ... वो भी याद दिलाते रहते हैं कि मुझे कहानी लिखनी है।

प्रश्न : कहते हैं, लेखक को निरंतर लिखते रहना चाहिए। आपका अभी तक एक ही कहानी संग्रह 'साँकल' आया है। क्या आपका कोई और कहानी संग्रह आ रहा है?

उत्तर : सुधा जी, आपने ठीक कहा कि लेखक को निरंतर लिखना चाहिए। दरअसल मैंने लिखना बहुत देर से शुरू किया। पहले पेंटिंग किया करती थी। शादी के बाद हिन्दी के माहौल से दूर हो कर उर्दू की दुनिया में चली गई। फिर परिवार के लिए यानी कि पति और बच्चों के प्रति समर्पित रही। उसके बाद पॉलिटिक्स ज्वाइन कर ली। मेरी हिन्दी में वापसी हुई भी तो तेजेन्द्र शर्मा जी की वजह से। मेरी पहली हिन्दी कहानी तो करीब दस साल पहले ही छपी थी। मेरे भीतर का एक्टिविस्ट मुझे अपने रेज़िडेन्ट्स की ज़िन्दगी के साथ जोड़े रखता है। जैसे मैं अपने साहित्य में आम आदमी की समस्याओं का चित्रण करती हूँ, ठीक वैसे ही अपने निजी जीवन में भी आम आदमी की समस्याओं के लिए जूझती रहती हूँ। 'साँकल' के बाद करीब सात आठ कहानियाँ अलग-अलग मैगज़ीनों में प्रकाशित हुई हैं। अभी उन्हें संकलन के रूप में प्रकाशित करवाने की बात सोचने के लिए भी समय नहीं मिल रहा। सच्ची बात तो यह है कि बहुत बार कहानी लिख कर भूल भी जाती हूँ... फिर अचानक याद आता है तो फिर से मेहनत करती हूँ।

प्रश्न : ज़किया जी आपने बहुत ईमानदार उत्तर दिया है। ऐसे प्रश्नों पर लोग अक्सर चन्द्रधर शर्मा गुलेरी का सुरक्षा कवच पहनने की चेष्टा करते हैं कि उन्होंने एक कहानी लिखी और मशहूर हो गए। हमने तो इतनी -उतनी कहानियाँ लिखीं। धन्यवाद।

अच्छा यह बताएँ भिन्न-भिन्न पात्रों को जीते हुए निजता और समाज का योगदान कितना रहता है...

उत्तर : लेखक वही लिखता है जो उसके आसपास घटित होता है। निज का समाज के साथ जो इंटर-एक्शन होता है वही साहित्य का रॉ-मैटिरियल बनता है। पात्रों के बारे में लिखते हुए सत्यकथा नहीं लिखी जा सकती। मैंने कहानी लेखन के बारे में अपने गुरु से जो कुछ सीखा है उसके अनुसार घटना में इमैजिनेशन का इस्तेमाल बहुत अहम होता है। समाज से पात्र उठा कर, अपने निजी अनुभवों को गूँथ कर उसमें कल्पना-शक्ति का तड़का लगाती हूँ। बस बन जाती है कहानी।... मैं अपने पात्रों की समस्याओं को महसूस भी करती हूँ और ख़ुद जीती भी हूँ।

प्रश्न : कहानी लिखते समय आप किस मानसिकता से गुज़रती हैं?

उत्तर : मैं अपनी कहानी का पहला

ड्राफ़्ट लिखते वक़्त कथा और घटनाओं में डूब जाती हूँ। हर पल को स्वयं भुगतती हूँ, जीती हूँ और अपनी क़लम में इसी की स्याही का इस्तेमाल करती हूँ। फिर पहला ड्राफ़्ट पूरा हो जाने के बाद। कहानी को रख देती हूँ। उससे दूरी बना लेती हूँ। टी.एस.ईलियट के सिद्धान्त "the more perfect the artist, the more completely separate in him will be the man who suffers and the mind which creates." में मेरा पूरा विश्वास है। फिर कुछ समय बाद मैं कहानी को उठाती हूँ और उसे दुरुस्त करती हूँ। जब ख़ुद अपनी कहानी से संतुष्ट नहीं हो जाती, छपने के लिए नहीं भेजती।

प्रश्न : आपकी तक़रीबन सभी कहानियों में स्त्रियों की पीड़ा, समस्याओं का चित्रण है। क्या 'लेखन' से स्त्री स्वतंत्रता अर्जन की लड़ाई लड़ सकती है?

उत्तर : सुधा जी, लेखन से कभी कोई क्रान्ति नहीं होती है। मगर लेखन क्रान्तिकारियों को एक राह अवश्य सुझा सकता है। 'मेरा रंग दे बसन्ती चोला', या 'सरफ़रोशी की तमन्ना' लिख लेने या गा लेने से क्रान्ति नहीं होती। बदलाव या क्रान्ति लाने वाले लोग दूसरे होते हैं, जो अपनी जान कुर्बान करने में भी नहीं हिचकिचाते। हाँ लेखक अपनी रचनाओं के माध्यम से समाज में प्रचलित बुराइयों की ओर इशारा कर सकता है, उनका चित्रण कर सकता है। और वही मैं कर भी रही हूँ। मेरी अधिकांश कहानियाँ ब्रिटेन के समाज की महिलाओं की स्थितियों को हाईलाइट करती हैं।

एक लेखक के तौर पर मैं ब्रिटेन की महिलाओं के जीवन और समस्याओं की ओर विश्व का ध्यान आकर्षित करने का प्रयास करती हूँ। जैसे आपने महसूस किया कि मैं स्त्रियों की पीड़ा और समस्याओं का चित्रण करती हूँ, ठीक वैसे ही शायद इन बातों की ओर उन लोगों का ध्यान भी जाए जो सत्ता में बैठे हैं और इन समस्याओं का हल निकाला जा सके।

प्रश्न : वैश्विक परिदृश्य में स्त्रियों की स्थिति में भारतीय स्त्रियों की तुलना में क्या समानता या विभेद है ?

उत्तर : सुधा जी, 6 फ़रवरी 1918 को ब्रिटेन में महिलाओं को चुनाव में वोट डालने का अधिकार मिला था। इसका श्रेय हम लिली मैक्सवेल नाम की महिला को दे सकते हैं। यानि कि सिर्फ़ और सिर्फ़ सौ साल पहले तक ब्रिटेन जैसे विश्व नेता देश में भी महिलाओं की स्थिति दोयम दर्जे की थी। तो आप अन्दाज़ा लगा सकती हैं कि पश्चिमी देशों में भी जो बदलाव हुए हैं वो पिछले सौ साल में ही हुए हैं। महारानी विक्टोरिया के ज़माने में भी औरतें घर की ज़ीनत हुआ करती थीं। हुआ यों कि पश्चिमी देशों में विज्ञान ने मज़हब को कहीं पीछे धकेल दिया जबकि भारत में आज भी चुनाव जाति और मज़हब के आधार पर लड़े जाते हैं। मज़हबी किताबों में तो औरत की दुर्गति तय की जा चुकी है। भारत के महानगरों की महिलाएँ अब पश्चिमी देशों की औरतों की ही तरह स्वतन्त्र व्यक्तित्व विकसित कर रही हैं। समस्या यह है कि भारतीय नारी, या अलग-अलग धर्मों के कल्चर की दुहाई देते हुए भारतीय उपमहाद्वीप में नारी को दबा कर रखा जाने के प्रयास किए जा रहे हैं। मुझे विश्वास है कि भारत में भी बेटी बचाओ का जो नारा लगाया जा रहा है, उसे अमली जामा भी पहनाया जाएगा और भारत की स्त्रियाँ भी पश्चिमी स्त्रियों की तरह अपनी पहचान बनाने में सफल होंगी।

प्रश्न : बाज़ारवाद के दौर में स्त्री एक नए प्रकार के शोषण का शिकार हुई है। आप इसे किस तरह से देखती हैं?

उत्तर : बाज़ारवाद में नारी के अंगों का बेहूदा प्रदर्शन अवश्य बढ़ा है। विजय माल्या का अंग-प्रदर्शन करते साल दर साल के कैलेण्डर सबूत हैं कि जैसे जैसे बाज़ारवाद का शिकंजा समाज पर बढ़ रहा है नारी एक भोग की वस्तु बनती जा रही है। मगर वहीं यह भी सच है कि बाज़ारवाद नारी को पुरुषों के बराबर का मौक़ा भी उपलब्ध करवा रहा है। मल्टीनेशनल कम्पनियों में औरतों को भी पुरुषों के बराबर ही अवसर मिल रहे हैं। हाँ मी-टू के मामलों में ज़रूर बढ़ोतरी हुई है। जैसे जैसे औरत को बाहर जाने के अवसर मिल रहे हैं वैसे वैसे ही वो अपने आपको नए ख़तरों के सामने एक्सपोज़ भी कर रही है।... कुछ समय लगेगा मगर चीज़ें कंट्रोल में आ जाएँगी।

प्रश्न : बाज़ारवाद ने किस तरह से हिन्दी साहित्य को प्रभावित किया है?

उत्तर : हिन्दी साहित्य की एक ख़ासियत यह भी है कि वक़्त-वक़्त पर नए नारे ईजाद होते रहे हैं। वक़्त-वक़्त पर आंदोलन होते रहे हैं। हिन्दी साहित्य अपने आसपास के माहौल और साथ ही विदेशी साहित्यिक एक्टिविटी से प्रभावित होता रहा है। बाज़ारवाद ने हिन्दी साहित्य में एक आंदोलन सा शुरू कर दिया है जो पूरी तरह से निगेटिव टोन लिए है। हर साहित्यकार बाज़ारवाद की बुराइयों को लेकर ही साहित्य रच रहा है। मज़ेदार बात यह है कि उसी बाज़ारवाद का लाभ उठा रहा कहानीकार या कवि भी बाज़ारवाद की आलोचना करता दिखाई देता है। मेरा सोचना है कि बाज़ारवाद पर किसी ना किसी लेखक को कुछ ऐसा भी लिखना चाहिए जिससे बाज़ारवाद द्वारा समाज को दिए जाने वाले नए एवेन्यूज़ के बारे में भी बात हो। जैसे हिन्दी लेखक कभी भी विज्ञान पर नहीं लिखते.. शायद संजीव एक अकेले कथाकार हैं जिन्होंने कभी कभार कुछ लिखा है। हिन्दी लेखन विचारधारा के दबाव में रहता है। लेखकों को स्वतन्त्र सोच के साथ लिखना चाहिए।

प्रश्न : आपकी उपलब्धियाँ क्या हैं?

उत्तर : यह तो बहुत ही मुश्किल सवाल है। ज़ाहिर है इतने मुश्किल सवाल का जवाब मेरे पास तो नहीं है।... हाँ यह कह सकती हूँ कि हिन्दी कि इतनी महत्त्वपूर्ण कहानीकार मेरा इंटरव्यू कर रही है... यह क्या कम उपलब्धि है।...

प्रश्न : ज़किया जी, यह आपका बड़प्पन है। आजकल नया क्या लिख रही हैं?

उत्तर : मेरा लेखन अब कहानियों से ही जुड़ गया है। कविताएँ आजकल कम ही उतर रही हैं। कुछ कहानियाँ दिमाग़ में चलती रहती हैं... जब उन्हें भीतर रखना मुश्किल हो जाता है, तो वे स्वयं ही काग़ज़ पर उतरने लगती हैं... ऐसा आज भी हो रहा है... जल्दी ही आपको कुछ नई कहानियाँ पढ़ने को मिलेंगी।

हार्दिक धन्यवाद ज़किया जी! आपने अपने व्यस्त जीवन से समय निकाल कर मुझे इंटरव्यू दिया।

***

कितना सहेगी आनंदिता

अरुण अर्णव खरे

''पापा सी देयर - हाऊ स्केरी इज़ देट ऑण्टी।'' - प्रशांत के बारह वर्षीय पुत्र प्रथम ने हाथ के इशारे से आनंदिता को दिखाते हुए कहा -- ''अरे वह तो इसी ओर आ रही हैं।''

प्रथम अपनी बात समाप्त कर पाता, इससे पूर्व ही आनंदिता का बेटा रुद्र चिल्लाते हुए उसकी ओर लपका - ''ओए क्या बोला तूने -- स्केरी -- मैं बताता हूँ इसका मतलब तुझे।''

''रुद्र बेटे रुको -- ऐसा नहीं करते'' - आनंदिता और शेखर दोनों ने ही बेटे को रोकना चाहा लेकिन तब तक रुद्र ने प्रथम को धक्का देकर नीचे गिरा दिया था और उसके गालों पर ताबड़तोड़ दो तीन तमाचे जड़ दिए थे - ''क्या बोला तूने मेरी माँ के लिए -- फिर से बोल -- देख मैं क्या हाल करता हूँ तेरा।''

शेखर ने रुद्र को पकड़ कर अलग किया। आनंदिता ने गुस्से से काँप रहे बेटे को मीठी डाँट लगाते हुए कहा - ''बेटा इतना गुस्सा अच्छा नहीं होता -- माफी माँगो इनसे - हम यहाँ एलुमिनी मीट में पुराने दोस्तों से मिलने आए हैं -- अगर तुम ऐसा ही करोगे तो हम वापस चलते हैं।''

''सॉरी'' - रुद्र ने माँ की आज्ञा मानते हुए प्रथम की तरफ दोस्ती का हाथ बढ़ाया। प्रशांत ने भी बेटे से हाथ मिलाने को कहा लेकिन प्रथम आँख दिखाता हुआ कमरे के अन्दर चला गया।

''सॉरी प्रशांत -- ये अच्छा नहीं हुआ -- हम शर्मिन्दा हैं -- रुद्र को ऐसा नहीं करना चाहिए -- बच्चा है हम समझाएँगे उसे।'' - शेखर ने प्रशांत से हाथ मिलाते हुए कहा। इनसे मिलो - ''ये हैं मेरी बेटर-हॉफ आनंदिता -- तुम्हें याद होगा मैं तुमसे अक्सर इनके बारे में ही बातें किया करता था।''

''नमस्ते'' - प्रशांत की आवाज़ सुनकर आनंदिता ने असहज महसूस किया लेकिन तुरन्त ही सम्भलते हुए बोली - ''नमस्ते भाई साब।''

इसी बीच प्रशांत की पत्नी रोहिणी भी कमरे से बाहर आ गईं थी। औपचारिक परिचय हुआ। वर्षों रूम मेट रहे दो मित्रों की मुलाकात अजीब सी कड़वाहट भरे माहौल में हुई। शेखर और आनंदिता रुद्र के व्यवहार को लेकर दुखी थे। उसने पहले कभी ऐसा व्यवहार नहीं किया था - उस समय भी नहीं जब प्रिंसीपल ने आनंदिता को विनय पूर्वक स्कूल के कार्यक्रमों में आने से मना किया था। शायद उस समय का गुस्सा था जो मौका पाकर अब

संपर्क : डी-1/35 दानिश नगर,
होशंगाबाद रोड, भोपाल (म0प्र0), पिन: 462026
ई-मेल: arunarnaw@gmail.com
मोबाइल: 9893007744

बाहर आ गया था।

शेखर के सामने फादर विलियम्स का चेहरा घूम गया और उनके कहे शब्द कानों में गूँजने लगे – ''आई होप यू विल अण्डरस्टेण्ड माय पोज़ीशन -- मुझे स्कूल के दूसरे बच्चों का भी ध्यान रखना है -- मिसेज़ अग्निहोत्री जब भी स्कूल आती हैं मैंने स्वयं कुछ बच्चों की आँखों में भय महसूस किया है – हम रुद्र को पढ़ाना चाहते हैं -- ही इज़ ए मेरीटोरियस स्टूडेण्ट लेकिन आपको मेरी बात ध्यान में रखनी होगी मिस्टर अग्निहोत्री -- प्लीज़ डोंट ब्रिंग हिज़ मदर फॉर पीटी मीटिंग्स एण्ड इन अदर स्कूल एक्टीविटीज़ -- इट्स माय हम्बल रिक्वेस्ट।''

तब आनंदिता ने आगे बढ़ कर उसको इस असमंजस से उबारा था – ''शेखर अपने बच्चे के लिए इतना त्याग तो मुझे करना ही चाहिए – मैं सह सकती हूँ इतना तो -- जीवन में जब इतना सहा है तो ये कौन सी बड़ी बात है।''

आनंदिता की बात सुनकर अन्दर तक भीग गया था वह और कितना सहेगी आनंदिता। पिछले बीस सालों से सह ही तो रही है और शायद आख़िरी साँस तक सहती ही रहेगी। भगवान् भी किसी-किसी की हथेली पर कैसी लकीरें उकेर कर भेजता है -- हर पल नई चुनौती -- नई परीक्षा -- हर आँख घूरती हुई -- उपेक्षा और घृणा का भाव लिए -- क्या गलती है आनंदिता की..... किसी के बहशीपन की सज़ा भुगत रही है वह तो। उसे पता ही नहीं कि किसने उसके ऊपर तेज़ाब फेंका था! क्या अपराध था उसका? क्या चाहता था वह? नहीं जानती..... पर उसके निशाने पर वही थी यह जानती है। जब यह हादसा हुआ था उस समय वह अकेली ही थी। खरी फाटक के मोड़ के आगे सुनसान सड़क पर -- कोचिंग क्लास से लौटने में देर हो गई थी उस दिन उसे -- रात गहराने लगी थी -- वह जल्दी से घर पहुँच जाना चाहती थी, पर नहीं रोक पाई वह गहराते हुए अँधेरे को -- और अगले कुछ ही क्षणों में सारी ज़िन्दगी उसी अँधेरे के हवाले हो गई -- पर हिम्मतवाली है आनंदिता। इतना सब होने के बाद भी ज़िन्दगी से हारी नहीं -- उठ कर खड़ी हो गई। दरिन्दगी को ठेंगा दिखाते

हुए ज़िन्दादिली की मिसाल बनकर। अब तक कितनी ही विपरीत परिस्थितियों से -- घूरती आँखों और कड़वी ज़ुबानों से बिना उफ किए लड़ती आई है -- आगे भी लड़ेगी इसी बहादुरी से।

''मुझे माफ कर दो माँ, अब दोबारा ऐसी गलती नहीं करूँगा।'' रुद्र आनंदिता से लिपट कर बोल रहा था ''आपको दुख पहुँचाया मैंने, क्या करूँ मैं, आपकी तरह अच्छा नहीं बन पाया, कोशिश करूँगा, फिर आपको दुखी न करूँ।''

आनंदिता ने खींच कर उसे गले लगा लिया। ''गलती का अहसास हो जाना, पछतावे के बराबर है बेटा। अब आगे ध्यान रखना। फिर कभी मेरे लिए इस तरह किसी से बिहेव मत करना। यदि कोई तुम्हें बदसूरत माँ का बिगड़ैल बेटा कहेगा तो मैं नहीं सह पाऊँगी। मैं सबसे लड़ सकती हूँ पर खुद से लड़ने की शक्ति नहीं है मुझमें।''

''अरे तुम दोनों यहाँ आओ मेरे पास। बैठो, हमें शाम के कार्यक्रम के बारे में फायनल करना है। तुम अपनी सीडी भी चेक कर लो रुद्र, जिस पर तुम डांस करने वाले हो।'' शेखर ने रुद्र और आनंदिता का ध्यान बँटाने के लिए कहा – ''अनंदी तुम भी एक बार रुद्र को प्रेक्टिस करा दो, और स्वयँ भी भजन गुनगुनाकर देख लो कि कहीं कुछ भूल तो नहीं रही हो। बहुत दिनों से अभ्यास नहीं किया है तुमने भी।''

आनंदिता और रुद्र अभ्यास में लग गए जैसे कुछ हुआ ही न हो। शेखर पलंग पर दो तकियों के सहारे टिक गया। थोड़ी देर तक वह रुद्र के डांस स्टेप्स को देखता रहा फिर आँखें बोझिल होने लगीं। उसके सामने बार-बार प्रशांत और उसके बेटे की तस्वीरें आकर मन में हलचल मचा रहीं थी। क्या प्रथम के रूप में प्रशांत पुन: लौट आया है – वैसी ही उद्दण्डता, बेशर्मी और अक्खड़पन के साथ। पाँच साल उसने प्रशांत के साथ एक ही रूम में रहते हुए गुज़ारे थे और वह उसकी कितनी ही कारगुज़ारियों का प्रत्यक्षदर्शी था। कितनी बार उसने प्रशांत की ज़्यादतियों का खामियाज़ा भी भुगता था पर प्रशांत के चेहरे पर कभी आत्मग्लानि की हल्की सी शिकन तक नहीं देखी थी।

रुद्र के स्टेप्स देखते हुए शेखर यादों में खो गया..... मस्तिष्क में उभर आई, प्रशांत के साथ हुई पहली मुलाकात, एस.ए. इंजीनियरिंग कॉलेज के ओल्ड हॉस्टल में उसे और प्रशांत को एक ही रूम अलॉट हुआ था। शेखर पहले हॉस्टल में रहने आ गया था। प्रशांत ने दो दिनों बाद वॉर्डन को रिपोर्ट किया था। उसने प्रशांत का स्वागत करते हुए परिचय दिया था – मैं शेखर अग्निहोत्री, नरसिंहपुर से। प्रशांत ने पूरी तरह बेरुखी दिखाई और बिना कोई उत्तर दिए अपना सामान शेखर के पलंग पर रख दिया, ''तुम अपना बिस्तर उठाकर उस पलंग पर रखो, मैं यह पलंग लूँगा। ये टेबल और अलमारी भी खाली कर दो, मैं अपना सामान इनमें रखूँगा।''

शेखर आवाक रह गया था पर संयत रहा था। उसने अपना बिस्तर और अन्य सामान हटा लिया। तीसरे दिन ही प्रशांत एक सीनियर से उलझ गया, जिसके कारण उसकी पिटाई तो हुई ही शेखर भी सीनियर्स के राडार पर आ गया। रात में जब-तब उसे रैगिंग के लिए बुला लिया जाता, पिटाई होती और घण्टों एक पैर पर खड़ा रखा जाता। पाँच सालों में ऐसी कितनी ही ज़्यादतियाँ शेखर ने सहन की थीं। प्रशांत अक्सर ही उसके सेसनल पेपर और ड्राइंग शीट्स फोल्डर से निकाल कर अपने नाम से सब्मिट कर देता। शेखर को दोबारा मेहनत करनी पड़ती और टीचर्स की डाँट मिलती वह अलग। शेखर के विरोध का कभी कोई असर प्रशांत पर नहीं हुआ। वह तो जैसे शेखर की हर चीज़ पर अपना हक समझता था। धीरे-धीरे शेखर भी सावधानी बरतने

लगा और वह अपने नोट्स, ड्राइंग शीट्स अलमारी में लॉक करके रखने लगा। चार माह बीत गए। प्रशांत बदलने लगा। उसके व्यवहार में काफी परिवर्तन आ गया और वह विनम्र होने के साथ ही दोस्ताना भी हो गया। शेखर से उसकी जमने लगी। दोनों अपनी बहुत सी बातें भी आपस में शेयर करने लगे।

विश्वविद्यालयीन स्पर्द्धा हेतु कॉलेज की बेडमिण्टन टीम का सेलेक्शन होना था। चार नाम तो लगभग तय थे। केवल दो स्थानों के लिए ही क्वालिफाइंग मुकाबले होने थे और इत्तफाक से शेखर और प्रशांत इन स्थानों के लिए दावेदार थे। शेखर ने ट्रायल मैचों में शानदार प्रदर्शन किया। उसने टीम के कप्तान को भी हराया और अपना स्थान सुरक्षित कर लिया। दूसरी ओर प्रशांत, कप्तान और सेकेण्ड ईयर के छात्र अविनाश पुरी से हार कर सेलेक्शन की रेस से बाहर हो गया। शेखर उसके हार जाने से दुखी था पर प्रशांत अपेक्षा के विपरीत शान्त था। तीन दिन बाद ही टीम को स्पर्द्धा हेतु सीहोर जाना था। उस दिन सभी मेस में नाश्ता करने एकत्र हुए थे। सदा की तरह शेखर और प्रशांत साथ ही बैठे थे कि उन्होंने अविनाश को भी पास बैठने के लिए बुला लिया। नाश्ते में उस दिन सांभर-बड़ा बने थे। नाश्ता सर्व करते समय गादीराम अचानक स्लिप हुआ और खोलते हुए सांभर का बर्तन अविनाश के ऊपर जा गिरा। अविनाश के हाथ और जाँघों पर फफोले उभर आए। अविनाश टीम के साथ नहीं जा सका। प्रशांत को टीम में जगह मिल गई लेकिन इस तरह टीम में स्थान पाने को लेकर वह बहुत अपसेट था। शेखर और कप्तान के बहुत समझाने के बाद ही वह नॉर्मल हुआ था।

हमीदिया कॉलेज के विरुद्ध पहले मैच में पहला सिंगल्स मुकाबला खेलते हुए प्रशांत हार गया। एक लाइन-काल को लेकर वह अम्पायर से उलझ गया और उन्हें माँ की भद्दी गाली दे बैठा। विश्वविद्यालय की अनुशासन समिति ने प्रशांत को दोषी मानते हुए स्पर्द्धा से बाहर कर दिया, अत: उसे वापस लौटना पड़ा। प्रशांत के इस तरह बाहर जाने से शेखर दुखी था। उसने उसे सान्तवना देना चाहा तो वह बेरुखी से ''रहने दे'' कहता हुआ अपना सामान पैक

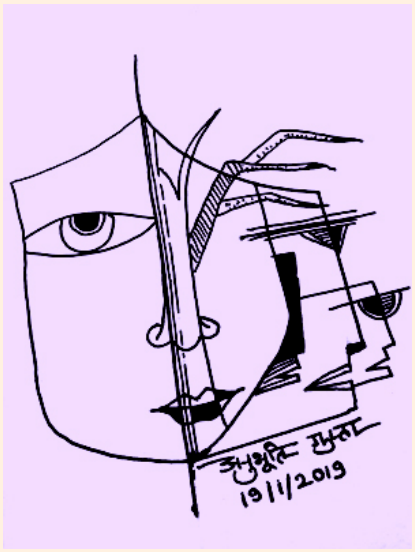

करता रहा। उसे सुबह की बस से वापस लौटना था। शेखर का मन नहीं माना। वह प्रशांत के पास ही बैठ गया - ''भाई ये सबक है आगे के लिए, मैच में एग्रेशन के साथ ही कूल रहना भी बहुत ज़रूरी है। मैच में उतार-चढ़ाव तो आते ही हैं। हर स्थिति में चित्त को स्थिर रखना ही चाहिए। यही मैच टेम्परामेण्ट है। अगले साल फिर से मौका मिलेगा खुद को सिद्ध करने का।''

''घण्टा मौका मिलेगा। इस साल कैसे मौका मिला था! पता है न तुझे।''

''पता है भाई, आप उत्तेजित न हों।''

''खाक पता है तुमको। यदि मैंने गादीराम को पैर अड़ा कर गिराया न होता तो क्या अविनाश टीम से बाहर होता और मुझे टीम में जगह मिलती। सारे किए धरे पर पानी फिर गया।''

प्रशांत की बात सुनकर शेखर स्तब्ध रह गया। उसे पूरा घटनाक्रम याद हो आया। तो यह प्रशांत का सोचा समझा प्लान था। अविनाश के जलने पर उसका दुखी दिखना भी उसके इस खतरनाक प्लान का ही एक भाग था। कितना शातिर खेल खेला था उसने। शायद इसी शातिराना खेल की सज़ा मिली है उसे। शेखर स्वयं को असहज महसूस करने लगा। वह कल के मैच के लिए आराम करने का बहाना बना कर चला आया वहाँ से।

अगले दिन शेखर अपना मैच खेलकर सुस्ताने बैठा ही था कि बगल के हाल से आ रही तालियों की आवाज़ ने उसका ध्यान आकृष्ट किया। वह उत्सुकतावश उठ कर उस ओर चला आया। एक सुन्दर सी लड़की अपने पॉवरफुल स्मैश और सटीक नेट ड्रॉप्स से प्रतिद्वंद्वी लड़की को पूरे कोर्ट में नचा रही थी। शेखर मंत्रमुग्ध सा उसके खेल को देखता रहा। मैच की समाप्ति पर शेखर उसको बधाई देने से खुद को रोक नहीं सका, ''कांग्रेचुलेशन्स! योर ड्रॉप्स आर अमेजिंग!''

''थैंक्स शेखर सर''

अपना नाम सुनकर शेखर कोतुहल से उसकी ओर देखने लगा। वह शरमाते हुए बोली, ''कल दोपहर में मैंने आपका मैच देखा था और शाम को बहुत देर तक आप सरीखे बैकहैण्ड ड्रॉप्स की प्रेक्टिस की थी।''

आनंदिता के साथ शेखर की यह पहली मुलाकात थी। उस रात लेटा-लेटा वह बहुत देर तक आनंदिता के बारे में सोचता रहा। पहली ही नज़र में भा जानेवाली देहयष्टि। गोरा रंग, आकर्षक चेहरा, बड़ी-बड़ी आँखें, लम्बी गर्दन, करीने से कटे हुए बाल, बिजली सी चपलता और सबसे बढ़कर स्त्रियोचित हया। अगले दिन वह पुन: शेखर के मैच के समय कोर्ट पर उपस्थित थी। दोनों की नज़रें मिलीं। उसने आँखों ही आँखों में गुडलक कहा। शेखर आसानी से मैच जीत गया। बाद में वह भी आनंदिता को चीयर करने गया। दोनों ने मैच के बाद काफी पी। तभी उसे पता चला कि आनंदिता भी विदिशा से खेलने आई है। वह जैन कॉलेज में बी.काम. फर्स्ट ईयर की स्टूडेण्ट है।

दोनों की अगली मुलाकात दो माह बाद एक रेस्त्रां में हुई। शेखर अपने क्लासमेट की बर्थडे पार्टी में वहाँ गया था जबकि आनंदिता पहले से कुछ सहेलियों के साथ वहाँ उपस्थित थी। दोनों ने एक दूसरे को देखा लेकिन दोस्तों की उपस्थिति के कारण बातचीत नहीं हो सकी। वह समय था ही ऐसा, लड़के-लड़की को बात करते देखा नहीं कि बतंगड़ बनना शुरू हो जाता। आनंदिता जल्दी ही सहेलियों के साथ चली गई और शेखर दूसरी टेबल पर बैठा उसे दरवाज़े से बाहर जाते देखता रहा। आनंदिता ने दरवाज़े से बाहर पैर रखने के पहले एक बार मुड़कर देखा था उसे। उसकी नज़रों में कुछ जादू था। शेखर ने दिल में कुछ अलग सा, अप्रतिम सा, महसूस किया था, उसे

अपनी साँसे पहली बारिश के बाद फ़िज़ाँ में घुलती मिट्टी की सौंधी-सौंधी खुशबू से सराबोर महसूस होने लगीं थीं।

आनंदिता इसके बाद शेखर की सुधियों में बस गई। उसका मन उसकी एक झलक देखने के लिए व्याकुल रहने लगा। वह दो तीन बार क्लास से बंक मार कर जैन कॉलेज के चक्कर भी लगा आया था लेकिन साध अधूरी ही रही। जब मुलाकात हुई तो इतनी अप्रत्याशित कि उसे आँखों पर विश्वास ही नहीं हुआ। उसके कॉलेज में स्टूडेण्ट यूनियन के चुनाव के दौरान दो समूहों में झगड़ा हो गया था। मारपीट में छ: स्टूडेण्ट्स को काफी चोटें आईं थी, जिनमें प्रशांत भी शामिल था। उसका सिर फटने से काफी खून बह गया था। उसे खून की तुरन्त ज़रूरत थी लेकिन अस्पताल में उसके समूह का खून उपलब्ध नहीं था। शेखर जानता था कि उसका ब्लड-ग्रुप भी वही है जिसकी प्रशांत को ज़रूरत थी लेकिन वह खून देने में हिचकिचा रहा था और मदद के लिए भागदौड़ कर रहा था। वह अस्पताल के ब्लड-बैंक में मदद की आशा में फिर से आया था कि सामने आनंदिता को ब्लड-डोनेट करता देखकर चौंक गया। वह सब कुछ भूल कर आनंदिता को देखता रहा। ब्लड-डोनेट कर आनंदिता जब बाहर आई तो शेखर सामने आ गया, ''कौन एडमिट है आपका, जिसके लिए आपने ब्लड-डोनेट किया।''

''मेरा कोई अपना एडमिट नहीं है। मैं तो एक बच्चे को हर तीन-चार माह में एक यूनिट ब्लड देती हूँ। उसे थेलेसीमिया है।''

''आपने कहा आपका कोई अपना एडमिट नहीं है। फिर ये बच्चा, कौन है आपका!'' शेखर आश्चर्य से आनंदिता की ओर देखते हुए बोला।

''वह दीदी बोलता है तो बहन समझ लीजिए।''

''प्लीज पहेलियाँ मत बुझाइए।''

''मैं सच में ज़्यादा नहीं जानती उसके बारे में। हमारी मेट सर्वेण्ट के भाई का लड़का है। पाँच साल का है। जन्म से ही थेलेसीमिया से पीड़ित है। पर आप यहाँ कैसे?''

''मैं --'' शेखर उत्तर देते हुए अचकचा गया लेकिन तुरन्त ही सम्भलते हुए बोला - ''मैं भी ब्लड डोनेट करने आया हूँ। मेरे दोस्त को ज़रूरत है।''

''आप बहुत अच्छे हैं। बेहतरीन खिलाड़ी के साथ-साथ एक नेकदिल इंसान भी।''

आनंदिता चली गई। ज़िन्दगी का एक नया फलसफा सिखा कर। उस दिन ब्लड डोनेट कर शेखर ने स्वयं को मन्दिर में जलते हुए दिए के प्रकाश सा आलोकित महसूस किया। इसके बाद तो शेखर अपनी हर धड़कन में आनंदिता की उपस्थिति अनुभव करने लगा। धीरे-धीरे दोनों एक-दूसरे के निकट आने लगे, एक-दूसरे के बारे में दोनों ही बहुत कुछ जान गए। शेखर के पिता नरसिंहपुर में दाँतों के डॉक्टर हैं जबकि आनंदिता के माता-पिता नहीं थे। जब वह दो साल की थी तभी एक नाव दुर्घटना में बेतवा नदी में बह गए थे। उसे बचा लिया गया था। तभी से अपने मामा के यहाँ रह रही है। बेटी से बढ़कर पाला है। आनंदिता नाम भी उन्होंने ही दिया है।

समय के साथ शेखर और आनंदिता नज़दीक आते गए। बैडमिण्टन ने भी इसमें अहम रोल अदा किया। पहले साल यूनिवर्सिटी बैडमिण्टन के सिंगल्स में उपविजेता रहने के बाद शेखर अगले वर्ष चैम्पियन बन गया। आनंदिता भी ज़्यादा पीछे नहीं रही। वह उस वर्ष की उपविजेता बन कर लौटी। शेखर के टिप्स और कोर्ट पर उसकी उपस्थिति हमेशा प्रेरणादाई सिद्ध होती। प्रारम्भिक आसक्ति ने प्रेम का स्वरूप कब ले लिया दोनों को पता ही नहीं चला। एक-दो हफ्ते तक जब मिलना नहीं होता तो मन की बेचैनी दोनों के रिश्तों को परिभाषित करती प्रतीत होती। यह प्यार दोनों ही अपने दिलों में अधिक समय तक दबा कर नहीं रख सके। दोनों को ही एक-दूसरे का साथ हमेशा सुखकर लगता था। उन्हें अहसास होने लगा था दोनों एक-दूसरे के बिना अधूरे हैं। उन्होंने एक दिन सदा साथ देने का वादा एक दूसरे से कर डाला। इसके बाद शेखर आनंदिता के घर भी आने-जाने लगा। मामा-मामी को भी वह पसन्द था। शेखर ने अपनी माँ को भी आनंदिता के बारे में बता दिया था। सब कुछ मन मुताबिक और सुगमता से हो रहा था। बस इंतज़ार था तो पढ़ाई पूरी कर एक अच्छे से जॉब का।

शेखर ने जिस वर्ष मैकेनिकल में अपनी इंजीनियरिंग पूरी की उसी साल आनंदिता ने भी एम.काम. कर लिया। आनंदिता सीए करना चाह रही थी अतएव उसने पंचरत्न कोचिंग संस्थान ज्वाइन कर लिया। शेखर का केम्पस सेलेक्शन भी किर्लोस्कर ग्रुप्स में ट्रेनी इंजीनियर के रूप में हो गया। जुलाई में उसे ज्वाइन करना था। प्रशांत उसे विदा करने स्टेशन तक आया। उसके दो पेपर रुके हुए थे अतएव सप्लीमेण्ट्री एग्ज़ाम तक प्रशांत को होस्टल में ही रुकना था।

''अरे कितना सोओगे। हम कबसे आपके जागने का इन्तज़ार कर रहे हैं। मुकुल भाई साहब मिलने आए थे लेकिन आपको सोता देख कर लौट गए। नीचे डाइनिंग हाल में बुला गए हैं।'' आनंदिता की आवाज़ ने शेखर को सपनों की दुनिया से यथार्थ की ज़मीन पर ला दिया।

''ओह, चार बज गए, मैं दो मिनट में पहुँचता हूँ वहाँ। तुम लोग चलो।'' कहता हुआ शेखर वाशरूम में घुस गया।

शाम का कार्यक्रम सुव्यवस्थित और मन्त्रमुग्ध करने वाला रहा। रुद्र और प्रथम सहित अनेक बच्चों ने शानदार प्रस्तुतियाँ दी। शेखर के कहने पर रुद्र ने प्रथम से एक बार पुन: सुबह की घटना के लिए सॉरी बोला। प्रथम ने भी उसका हाथ थामकर सॉरी कहा। दोनों को बात करते देखकर शेखर और आनंदिता का मन हलका हो गया। अगले दिन सभी का साँची देखने का प्रोग्राम था। उसी दिन शाम को महिलाओं के लिए वूमेंस स्पेशल नाइट का आयोजन किया गया था। आनंदिता ने मन तड़पत हरी दर्शन को गाकर समाँ बाँध दिया। बाद में सभी ने डीजे पर जम कर डांस किया।

उस दिन आनंदिता के गायन को सभी ने बहुत सराहा। शेखर को भी बधाइयाँ मिली। नींद की आगोश में भी शेखर खुद को गर्वित महसूस करता रहा। एसिड से जलने के बाद आनंदिता का बैडमिण्टन खेलना छूट गया था लेकिन ज़िन्दगी से हारना उसे स्वीकार नहीं था। उसने विलास सिरपुरकर का संगीत-विद्यालय ज्वाइन कर लिया। उन्हीं से उसने शास्त्रीय-संगीत की शिक्षा ली थी। लगन की पक्की तो वह शुरू से थी। थोड़े समय में ही उसे स्वर साधना आ गया। वह सब कुछ भूल कर संगीत को समर्पित हो गई

थी।

शादी के लिए भी शेखर को कितना मनाना पड़ा था। वह तो विवाह के लिए तैयार ही नहीं थी। विद्रूप चेहरा लेकर किसी के जीवन को ग्रहण लगाना नहीं चाहती थी वह। शेखर को भी ट्रेनिंग के बाद ही पता चला था उस हादसे के बारे में। आनंदिता को देखकर दहल गया था। इतनी सुन्दर और सुशील लड़की के साथ इतना घिनौना कृत्य। कौन राक्षस है जिसने ऐसा किया होगा? कई दिनों तक सोचता रहा था शेखर। आनंदिता भी अनभिज्ञ थी। उसका तो कभी किसी से मामुली विवाद भी नहीं हुआ था।

पूरे सात साल इंतज़ार किया था उसने आनंदिता का। सबने उसे मना किया था। धिक्कारा था। चेतावनी दी थी। पर वह आनंदिता को कैसे छोड़ सकता था! उसने सदा साथ निभाने का वादा किया था उससे। आख़िरी दम तक हार न मानने की ट्रेनिंग ली थी बैडमिण्टन कोर्ट पर, फिर ज़िन्दगी के सबसे महत्त्वपूर्ण मैच में वह घुटने कैसे टेक सकता था। आनंदिता ने पूरी कोशिश की थी उसे डिगाने की, उसके हर प्लेसमेंट को सूझबूझ के साथ रिटर्न करती रही। वह हर प्वाइंट के लिए जूझता रहा, लेकिन मैच प्वाइंट पर आकर आनंदिता भावुक हो गई और उसके अनुरोध को टाल नहीं सकी। दोनों ने आर्य समाज मन्दिर में शादी की। उन्हें आशीर्वाद देने आनंदिता के मामा-मामी और शेखर के पापा-मम्मी ही उपस्थित थे। अपनों की उपस्थिति ने दोनों को असीम ऊर्जा दी थी और साहस भी। ज़िन्दगी की हर परीक्षा में उत्तीर्ण होने का, निश्चिन्त हो आगे बढ़ते जाने का।

एलुमिनी मीट के अन्तिम दिन सभी का गुलाबगंज के पास बमौरी गाँव के भ्रमण का कार्यक्रम था जिसे एलुमिनी एसोसिएशन ने कॉलेज प्रबन्धन के सहयोग से गोद लिया था। गाँव में बच्चों के लिए एक कम्प्यूटर सेण्टर और लायब्रेरी का लोकार्पण तथा निराश्रित महिलाओं के संवर्द्धन हेतु सिलाई मशीनें भेंट की जानी थी। आनंदिता के सुझाव पर ही एसोशिएशन ने सामाजिक दायित्वों के निर्वहन की इस पहल को खुशी-खुशी स्वीकार किया था।

अगले दिन सभी को वापस लौटना था। देर रात तक लोग एक दूसरे से मिलते रहे। प्रशांत को अकेला देखकर आनंदिता उसके पास चली आई, ''भाई साब, मैं आपसे कुछ बात करना चाहती हूँ।''

''यदि आप प्रथम की बात को लेकर दुखी हैं तो मैं आपसे माफी माँगता हूँ।'' प्रशांत ने कहा।

''नहीं, वह तो बच्चा है, मैं हूँ ही ऐसी। पहली बार जो भी मुझे देखता है, डर जाता है।''

प्रशांत को कोई उत्तर नहीं सूझा। वह चुप रहा। आनंदिता बोली, ''कुछ पूछना है आपसे।''

''हाँ, नि:संकोच पूछिए।''

''मुझसे क्या गलती हुई थी जो आपने इतनी बड़ी सज़ा दी मुझे।''

''आपसे गलती, मैं कुछ समझा नहीं।'' प्रशांत विस्मय से आनंदिता की ओर देखते हुए बोला।

''मुझे पता है वह आप ही थे। मैं आपकी आवाज़ कभी भूल ही नहीं पाई। पहले दिन जब आपने नमस्ते बोला था तभी मैं समझ गई थी। उस दिन आपके कहे शब्द 'सबक सिखा दिया। सुरु जल्दी चल यहाँ से।' अभी भी कानों में गूँजते रहते हैं..... इतना सह लिया है ज़िन्दगी में, कि अब कोई दर्द माने नहीं रखता। आप विश्वास कीजिए आपकी खुशहाल ज़िन्दगी को नरक नहीं बनाऊँगी। बस मेरा अपराध बता दीजिए ताकि दुनिया से विदा होते समय दिल पर कोई बोझ न रहे।'' वर्षों से दिल के अन्दर दबा दर्द पिघल कर आनंदिता की आवाज़ में घुल गया था।

प्रशांत को काटो तो खून नहीं। दिसम्बर अन्त की शीतल रात में भी माथे पर पसीने की बूँदें झिलमिलाने लगीं। उसका शरीर निढाल होने लगा। वर्षों पीछे छोड़ा गया समय इस तरह सामने आ खड़ा होगा, उसने कल्पना भी नहीं की थी। बड़ी मुश्किल से वह बोल पाया - ''मैं ईर्ष्या में अन्धा हो गया था इसलिए इतना बड़ा अन्याय कर बैठा।''

''कैसी ईर्ष्या?''

''शेखर से ईर्ष्या। मैं हर तरह के हथकण्डे अपना करके भी कभी उससे आगे नहीं निकल सका। वह हर बात में मुझसे बीस सिद्ध हुआ करता। पढ़ाई में मुझसे बहुत आगे रहता, अनुशासनहीनता के कारण बेडमिण्टन में मैं दोबारा टीम में स्थान नहीं पा सका। दो बार क्लास रिप्रेज़ेण्टेटिव के चुनाव में उससे हार गया। मेरी सनक के कारण स्कूल-गर्लफ्रेण्ड ने भी मुझसे नाता तोड़ लिया। उसी समय शेखर को आप मिल गईं। वह अक्सर आपसे मुलाकात के किस्से सुनाता। बहुत तारीफ करता आपकी। मैं सुनता और अन्दर ही अन्दर सुलगता रहता। बहुत गुस्सा आता अपनी नाकामियों पर और उसकी उपलब्धियों पर। जब किर्लोस्कर में उसका केम्पस सेलेक्शन हो गया और मैं दो पेपर्स में फेल हो गया तो बहुत रोया था। जिस दिन वह जा रहा था मैं उसे छोड़ने स्टेशन तक गया था। बहुत खुश था वह। उसने बताया था कि ट्रेनिंग के बाद आपसे शादी करने वाला है। तभी मैंने निर्णय कर लिया कि ज़िन्दगी में अभी तक जितनी आसानी से उसे सब कुछ मिलता रहा है अब उतनी आसानी से आपको नहीं पा सकेगा। मैं ज़िन्दगी का सबसे भयंकर सबक सिखाऊँगा उसे। मैंने कई बार आपका पीछा किया। आपकी गतिविधियों पर नज़र रखी। सप्लीमेण्ट्री एग्ज़ाम के बाद जिस रात मुझे वापस लौटना था उसी शाम को मैंने आप पर तेज़ाब फेंकने का फैसला कर लिया था। मेरे दोस्त सुरेश ने इसमें मेरा साथ दिया। उसी ने अपने स्कूटर से मुझे भागने में मदद की थी। मैंने आपकी ज़िन्दगी नरक बना दी, पर शेखर तो अलग ही मिट्टी से बना इंसान निकला। इस स्थिति में भी आपको अपना कर कितना खुश है आज भी। उस जैसे लोगों के कारण ही दुनिया में मानवता ज़िंदा है। मैं अपराधी हूँ आपका! माफी के काबिल नहीं हूँ.... माफी माँग कर अपने गुनाह की सज़ा से बचना भी नहीं चाहता। ईश्वर किसी को इतना ईर्ष्यालू न बनाए कि वह मानव-सभ्यता के लिए कलंक बन जाए।'' - कहते हुए प्रशांत की आँखों से आँसू बहने लगे।

आनंदिता ने उसके कन्धे पर हाथ रखा - ''रो लीजिए, मन हलका हो जाएगा। पर आपको मेरी कसम। प्रथम और रोहिणी भाभी से कुछ मत कहिएगा, वे ज़िन्दगी भर इस सदमें से उबर नहीं पाएँगे।'' कहते हुए आनंदिता तेज़ी से कदम बढ़ाते हुए अपने कमरे की ओर चल दी।

***

मधुर मुकेश को किसने मारा ?

रिम्पी खिल्लन सिंह

शहर के जाने-माने पत्रकार मधुर मुकेश की दिनदहाड़े हत्या कर दी गई थी। वह अभी अपने घर से निकला ही था। उसे वामपंथियों द्वारा आयोजित उस जलसे में शिरकत के लिए जाना था। वह व्यक्ति की आज़ादी को किसी भी चीज़ से ऊपर मानता था। समतावाद, साम्यवाद की बात उसकी ज़ुबान पर थी। उसका गठबंधन नक्सलियों के साथ था। वह उन इलाकों में अक्सर आया जाया करता था। उन लोगों से जुड़ा बहुत सा पैसा उसके कार्यालय के माध्यम से ही एकत्र किया जाता था।

घर में बूढ़े माँ-बाप थे। पिता के आज़ाद ख्याल उसे विरासत में मिले थे। पत्नी थी, जिसे वह एक लम्बा अरसा पहले छोड़ चुका था। शायद उसकी आज़ाद दुनिया में सम्बन्धों के लिए जगह बना पाना कठिन था। उसका अख़बार जिसे वह निकालता था वह भी खुली दुनिया की एक तस्वीर थी। उसकी हत्या की खबर कुछ ही देर में आग की तरह फैल गई थी। उसके शरीर को सफेद कपड़े में लपेट कर घर के आँगन में रख दिया गया था।

उस विचारधारा के बहुत से लोगों में सरगर्मी थी, रोष था। यह रोष सत्ता के प्रति था। उस सत्ता के प्रति जिसकी विचारधारा में आज़ादी के एबसोल्यूट होने पर संशय ज़ाहिर किया जाता था। वास्तव में मधुर जिस एबसोल्यूट की तलाश में था, वह निजी तौर पर तो सम्भव हो भी सकता था पर किसी समूह या विचारधारा में उसके लिए कोई जगह न थी। शायद उसके अपने धड़े में भी नहीं। जहाँ गरीब आदिवासियों की ज़मीन, उनकी जड़े बचाने की बात तो होती थी पर जिनके लिए यह बात होती थी उन्हें खुद ही नहीं पता था कि उनके लिए जो यूटोपिया खड़ा किया गया था, वह सच था या किसी काउन्टर नैरेटिव को खड़ा करने का माध्यम भर था।

उसके पुरुष मित्रों के साथ-साथ कई महिला मित्र भी थे, जिनके साथ अक्सर शाम को बैठ कर वह बैठकें किया करता था। वहाँ विचारधारा की गरमागरम बहस से लेकर जाम और धुआँ सब चलता था। शाम अपने पूरे जोश पर थी। मधुर दो ड्रिन्क ले चुका था। ''कब तक हम इतने बैकवर्ड रहेंगे, यू मिन आई हैव टू सैक्रीफाइज़ माई लिविन्ग हैबिट्स, वट् रबिश। अब ये मुझे बताएँगे कि मैं क्या खाऊँगा, क्या नहीं खाऊँगा, कैसे रहूँगा कैसे नहीं रहूँगा। किसके साथ सोऊँगा, किसके साथ नहीं।''

उसकी महिला साथी ने भी ड्रिन्क के साथ गला गीला किया और उसके नैरेटिव में मल्टी डायमेन्शन एड करने लगी, ''भई ये शहर में औरतें किसी के साथ भी बैठती हैं तो इन्हें तकलीफ़ क्यों है? अब लड़कियाँ ब्वाय फ्रैन्ड भी इनसे पूछकर बनाएँगी? कुछ भी नहीं बोलने देंगे हमें?'' उस महिला मित्र का नाम सोफी था।

मधुर सोफी से मुखातिब होकर बोला, ''सोफी लगातार काउंटर नैरेटिव बनाना होगा, लगातार। इस बार जो फन्ड मिला है उसमें से मैं कुछ ही भेज पाऊँगा, कह देना गणेश

संपर्क: हिन्दी विभाग, इन्द्रप्रस्थ महिला महाविद्यालय, (दिल्ली विश्वविद्यालय), सिविल लाइन्स, दिल्ली 54
ई-मेल: Rimpi.Khillan@gmail.com
मोबाइल: 9899155563

को।'' गणेश नक्सलियों का बड़ा नेता था। ''इस बार थोड़ा इधर-उधर से जुगाड़ कर ले। मंदी का दौर है, थोड़ा मिल जुलकर काम चलाना पड़ेगा। जब तक चीज़ें बदल नहीं जाती थोड़ा सम्भल कर चलना पड़ेगा भई। '' मधुर खिसिआया था। सोफी शायद उसकी बात से सहमत नहीं थी। वह तुरंत बोली, ''पर गणेश ने कहा है कि, फन्ड का रेशो फिक्स है।''

सोफी की इस बात को सुनकर मधुर अपना आपा खो बैठा था।

''फिक्स, फिक्स तो कुछ भी नहीं होता। तुम कब से फिक्स वाली भाषा बोलने लगी? समय के साथ चलना होता है। मौके की नज़ाकत देखनी होती है। हम इस विचारधारा का थिन्क टैंक हैं भई। सोचने के लिए फुर्सत चाहिए और फुर्सत के लिए पैसा। मैं एक बड़ा आन्दोलन खड़ा करना चाह रहा हूँ। पैसा तो चाहिए, तुम समझती क्यों नहीं? गणेश को नहीं पता छोटी से छोटी सभा में आजकल कितना पैसा लग रहा है। माहौल वैसे भी ठीक नहीं है। रिस्क फैक्टर बढ़ गया है। वो तो अपने सुरक्षित इलाके में बैठा है। यहाँ शहर में अब बुद्धिजीवियों के रंग-ढंग तक बदल गए हैं। कन्विन्स करना उतना आसान नहीं रहा। ज़्यादा कार्यकर्ता चाहिए, ज़्यादा लोग। अब भीड़ जुटाने के लिए भी पैसा खर्च करना पड़ रहा है।''

सोफी मधुर की बातों से परेशान थी उसने धीरे से कहा, ''पर मधुर मैं गणेश को कैसे कन्विन्स करूँगी? और फिर इस सबमें उसने तुम्हारी कितनी मदद की है। तुम्हें भी तो समझना पड़ेगा''। मधुर ने सोफी को फिर से प्यार से समझाने की कोशिश की, ''स्वीटी, देखो इस बार थोड़ा कम से ही काम चला लो। पार्टी के पास भी उतना पैसा नहीं है। बाहर से मदद आने में समय लगेगा और फिर उसके लिए भी कुछ ज़्यादा काम करना पड़ेगा।''

सोफी ने अपने कन्धे उचकाते हुए जवाब दिया, ''ठीक है तुम गणेश से खुद फ़ोन पर बात कर लो''। मधुर सकपकाया था ''फ़ोन पर बात करना बिल्कुल सेफ नहीं है, तुम्हें पता है ना, यहाँ साँसें तक गिनी जा रही हैं।'' इस बार सोफी का मिजाज़ बदल गया था। वह शेरनी की तरह दहाड़ी ''ठीक है, मैं तुम्हें बस इतना बता सकती हूँ कि इस बार अगर तुमने पूरे फन्ड को देने में डिले किया तो बहुत बुरा हो सकता है।''

''क्या तुम मुझे धमकी दे रही हो '' मधुर अपना आपा खो चुका था। उसने सोफी का गिरेबान पकड़ लिया था। वह हिस्टीरिक की तरह चीख़ा था, ''कमीनी, तुम्हारी हिम्मत कैसे हुई? ये बकवास करने की। वहाँ अपने सुरक्षित इलाकों में पड़े-पड़े तुम लोग हरामखोर हो गए हो। तुम्हें पता है मैं नहीं लिखूँ या मेरे जैसे थिन्क टैंक तुम्हारे पास न हों तो कुत्ते की मौत मारे जाओगे तुम। यू भी अब क्या बचा है तुम्हारे पास! बस लोगों को देने के लिए इस आज़ादी का यूटोपिया, जिसका महल तुमने तैयार किया है। अपने रहने के लिए, उनके रहने के लिए नहीं। उनसे तो तुम बस ईटें और दीवारें ही फिक्स करवाओगे। समझी फिक्स की बच्ची।''

सोफी मधुर को हैरानी से देख रही थी। उसने कहा, ''मधुर क्या हो गया है तुम्हें? तुम भी उन फासीवादियों की ज़बान में बात करने लगे हो। तुम्हें अपने साथियों की कोई भी परवाह नहीं है। हम तुम लोगों के लिए ही तो लड़ रहे हैं। कभी भी सरकार की गोली का शिकार हो सकते हैं।'' सोफी की बात पर मधुर ने अपने दाँत निपोर लिए और तड़फड़ाते हुआ बोला, '' सच ! तुम मेरे लिए लड़ रही हो स्वीटी? या अब तुम्हें आदत हो गई है उस ज़िन्दगी की। उस आज़ादी की, जिसमें तुम किसी के लिए भी जवाबदेह नहीं हो, खुद अपने लिए भी नहीं।''

सोफी अभी भी सकते में थी, ''मधुर मुझे लग रहा है कि मैं किसी दूसरे मधुर से बात कर रही हूँ शायद! तुम सचमुच दुशमनों की भाषा बोल रहे हो। मधुर को सोफी की इस प्रतिक्रिया पर और भी गुस्सा आ गया था। वह और ज़ोर से चिल्लाया, ''मैं, मैं दुश्मनों की भाषा बोल रहा हूँ या तुम सभ्य औरत की भाषा भूल गई हो, उस गणेश के पहलू में रहकर। खा-खाकर मोटा हो गया है साला। उसे किसानों की चिंता है? गरीबों की परवाह है? उसका अपना बेटा तो विलायत में पढ़ रहा है। खूब पैसा भेजता है उसे। बीवी -बच्चे दोनों को वहीं सैटल करके खुद भी कब फुर्र हो जाएगा, किसे पता? और तुम, तुम भी। सम्भल जाओ। कहीं पता चले कि तुम्हें भी शहीद करके ही जाए। वैसे मुझे उसकी नीयत बहुत पहले से ही पता थी।''

अब सोफी का पारा भी चढ़ रहा था। वह गुस्से से कुलबुलाई और बोली, ''मधुर तुम ज़रूरत से ज़्यादा बोल रहे हो। इन्टलेक्चुअल मास्टरबेशन करते -करते तुम्हारा दिमाग चल गया है। तुम्हें हाड़-माँस की औरत चाहिए। अभी भी वक्त है अपनी पत्नी के पास वापिस चले जाओ वरना बुढ़ापा भी अकेलेपन में गुज़ारोगे और लोग तुम्हें सनकी कहेंगे।'' मधुर पहले से भी ज़्यादा भन्ना गया था, ''तुम्हें कब से मेरे अकेलेपन की परवाह होने लगी स्वीटी ? पहले अपनी चिंता तो कर लो और कह दो उस गणेश से अब से रेशो मैं फिक्स करूँगा, वो नहीं। अब उसके दिन लद गए। इस से पहले कि कुछ और चीज़ें बदलें मुझे भी कुछ सोचना पड़ेगा। ''

मधुर की इस प्रतिक्रिया पर सोफी का माथा ठनका था और उसने पूछा, '' किस बारे मे सोचना पड़ेगा मधुर? कहीं तुम इस विचारधारा पर ही तो सन्देह नहीं करने लगे ?'' मधुर पूरी तरह सोफी का दिमाग दुरूस्त करने के मूड में था। वह फिर से तेज़ी से दहाड़ा था, ''विचारधारा माई फुट? तुम्हें सचमुच लगता है कि हम किसी विचारधारा के लिए लड़ रहे हैं या कोई विचारधारा अब इस तेज़ी से बदलती दुनिया में चलेगी। मेरे जैसे लोग बातों की खाते हैं और जब बातें ही बदलने लगें तो बात करने का तरीका भी बदलना पड़ता है। ये मेरा दिमाग है, मेरी सोच है। इस पर किसी धारा का कोई ज़ोर नहीं चलता। भूल गईं, डार्विन ने क्या कहा था। तुम कैसे भूल सकती हो सर्वाइवल की इस दौड़ में अभी भी फिट खड़ी हो तुम। अगर गणेश तुम्हें छोड़ कर चला जाए तो क्या आत्महत्या कर लोगी, जिओगी ना तुम? उसके साथ या उसके बिना? विचारधारा लोग चलाते हैं, हमारे जैसे लोग और जिस इलाके में तुम हो ना, उस जगह रहने वाले बेचारे। पिछड़े लोग हमारी विचारधाराओं से चलते हैं। जिनके पास न विचार होते हैं, बस जो धारा उनके लिए बना दी जाती है, उसमें बह जाते हैं पर अब बहाव बदल रहा है। धारा के विरुद्ध तैरते -

तैरते मैं भी थकने लगा हूँ। अब कुछ बीच का रास्ता देखना पड़ेगा। नए काउंटर नैरेटिव बनाने पड़ेंगे। शायद अब किसी यूटोपिया से लोगों का काम नहीं चलेगा, उसे थोड़े यथार्थ की भाषा में बोलना पड़ेगा, लिखना पड़ेगा।''

सोफी उसकी बातें सुनते-सुनते परेशान होने लगी थी। वह बस इतना ही कह सकी- ''तुम तो भाषा के बड़े खिलाड़ी हो मधुर। यह भाषा ही तो है जिससे तुम साँप को रस्सी और रस्सी को साँप दिखाते आए हो, तुम्हारे साँप का काटा तो पानी भी नहीं माँगता।'' मधुर उसकी इस बात पर फिर से बौखला उठा था, उसने गिलास में वाईन डालते हुए कहा ''ओ-ओ, होल्ड-आन स्वीटी, तुम भूल रही हो कि मेरी बनाई रस्सी से लटककर तुम लोगों ने भी बहुत सारी ऊँचाइयाँ तय की हैं। उन ऊँचाइयों की निचाईयों का दौर अब है तो तुम्हें मान लेना चाहिए। कम से कम मैं मान चुका हूँ।''

सोफी इस लम्बी बहस से तंग आ चुकी थी। वह वहाँ से जल्द ही निकल जाना चाहती थी। ''ठीक है, मधुर, मैं चलती हूँ। गणेश तक तुम्हारा मैसेज पहुँच जाएगा। वैसे तुम मिलने आ सके तो अच्छा रहेगा।'' मधुर किसी भी बात को मानने के मूड में नहीं था। उसने साफ इनकार करते हुए कहा, ''पागल तो नहीं हो गई हो तुम। इस समय मुझपर कितनी आँखें लगी हैं,पता है तुम्हें? कुछ भी हलका सा होता है तो लोग मेरी तरफ देखने लगते हैं। ये पासीबल नहीं है। वैसे भी मिलने से फिलहाल कुछ भी बदलने वाला नहीं है।'' सोफी उठकर चलने लगी ''ठीक है, वक्त ज़्यादा हो गया है, मुझे निकलना है।'' हाथ हिलाते हुए वह वहाँ से निकल गई थी।

इस बातचीत को एक महीने से ज़्यादा का वक्त नहीं हुआ था। मधुर मुकेश अपने डेली रूटीन के हिसाब से सुबह की सैर के लिए निकला था। घर का दरवाज़ा खोलकर वह अपने आहाते से कुछ कदम आगे तक ही चला था कि उसकी छाती में गोली लगी थी जो छाती में छेद करती हुई बाहर निकल गई थी। शायद गोलियाँ छह की छह चलाई गई थीं। वह धम्म से नीचे गिर गया था। काफी समय बाद जब दूध वाला दूध देने आया तो वह खून से सना शरीर देख कर

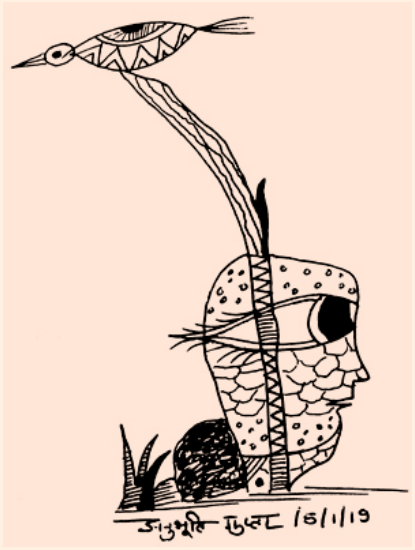

भय से चिल्लाने लगा था। उसका चिल्लाना सुनकर आस-पास के इलाके से भारी भीड़ जमा हो गई थी।

गोली साईलेन्सर लगी बन्दूक से पास से चलाई गई थी। इसलिए अभी तक मधुर के माता-पिता को भी इसकी कोई भनक नहीं लगी थी। वे भी बाहर की चीख़ चिल्लाहट सुनकर किसी तरह बाहर निकले। उनके बेटे की लाश उनके सामने थी। पर जैसे उन्हें तो साँप ही सूँघ गया हो। कोई भी प्रतिक्रिया चेहरे पर नहीं थी। एक चुप उनकी आँखों तक में दिखाई दे रही थी। उनकी उम्र का तकाज़ा जैसे उन्हें बता रहा था कि मौत ही अंतिम सत्य है या फिर उन्हें पता था कि उनका बेटा जिस रास्ते पर था, वहाँ शायद वह मंज़िल थोड़ा जल्दी ही नज़दीक आ सकती थी।

ख़बर धीरे-धीरे आग की तरह फैलने लगी थी। मधुर के बुद्धिजीवी मित्र भी तेज़ी से जुटने लगे थे। उसकी मौत ने जैसे उन्हें एक मुद्दा दे दिया था। कोई कह रहा था कि उसके शरीर को पार्टी के दफ्तर में एक दिन के लिए रखा जाना चाहिए ताकि अन्य मित्रगण उसे श्रद्धांजलि दे सकें। कुछ लोग पोस्टर तैयार करने की बात कर रहे थे ताकि सत्ता की तानाशाही के खिलाफ रैली निकाली जा सके। कुछ लोग उसके घर के सामने ही चिल्ला रहे थे ''नहीं चलेगी, नहीं चलेगी तानाशाही नहीं चलेगी।

नहीं दबेगी, नहीं दबेगी आवाम की आवाज़ नहीं दबेगी। हमें चाहिए आज़ादी, बोलने की आज़ादी, सोचने की आज़ादी।'' मधुर मुकेश की मौत ने फिर से एक नई आज़ादी की चाह पैदा कर दी थी पर यह आज़ादी किससे थी ? कैसी थी ? और कहाँ थी ? इस बारे में वे सभी नारा लगाने वाले ठीक से जानते भी थे, कहा नहीं जा सकता। मधुर का शरीर अंतिम संस्कार का इंतज़ार कर रहा था पर बनाने वाले उसके शरीर पर भी नई विचारधारा बनाना चाहते थे।

लोग श्रद्धांजलि देने आ रहे थे। कोई पड़ोस की महिला उसके पार्थिव शरीर पर श्रद्धांजलि देते हुए बोली, ''भगवान् उनकी आत्मा को शान्ति दे।'' तभी बगल में खड़ा एक आदमी बुदबुदाया था, ''भई मधुर बुद्धिजीवी था। उसे कहाँ ईश्वर पर यकीन था। अब जब उसे आत्मा पर भी यकीन नहीं ही था तो फिर इस तरह की श्रद्धांजलि का उसके लिए क्या अर्थ?'' वह महिला इस तरह की प्रतिक्रिया पर बौखलाई और बोली, ''मरने वाले को तो अब चैन से जाने दो। अब इस पर भी सियासत करोगे?'' जवाब आया था, ''भई ऐसे लोगों का तो जीना-मरना सियासत ही है। हम थोड़े ही ऐसा कर रहे हैं। यह तो होता ही है।''

मधुर की बूढ़ी माँ बुझी आँखों से दूर देख रही थी। उसके कई बुद्धिजीवी मित्र उसके शरीर को अपने कब्जे में ले चुके थे। उसे पार्टी कार्यालय ले जाया जा रहा था। मुख्यमंत्री ने भी उसकी हत्या पर शोक ज़ाहिर किया था। यह वही मुख्यमंत्री था, जिसकी सरकार अब तक भ्रष्टाचार के आरोपों से घिरी थी। वह अब तक भ्रष्टाचार के इन आरोपों की वजह से मीडिया का निशाना बना हुआ था। उसे भी इन आरोपों से बाहर आने का एक सुनहरी अवसर मिल गया था। मुख्यमंत्री ने सीधा इस हत्या को लेकर केन्द्र पर निशाना साधा और पूरा इलज़ाम दक्षिण-पंथियों पर लगा दिया था। यह आसान तरीका था अपना पल्ला पूरी तरह झाड़ लेने का।

मुख्यमंत्री आरोप लगाने की जल्दी में यह भी भूल गए थे कि ला एन्ड आर्डर राज्य का मुद्दा था और इसके प्रति राज्य की जवाबदेही थी। वह लगातार कहते जा रहे थे, ''भई लोकतंत्र से लोगों की आस्था ही उठ चुकी है। जो भी खुलकर बोलता है, मारा जाता है। यह तो अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता की हत्या है।''

अगले दिन पूरे राज्य में चक्का जाम था।

सड़कों पर बसें जलाई जा रही थीं। पूरे शहर में बन्द घोषित हो गया था। शायद मधुर मुकेश ने भी यह नहीं सोचा था कि वह इतना बड़ा बुद्धिजीवी था कि जिसकी मौत इतनी बड़ी हलचल पैदा कर सकती थी। बहरहाल, सभी चैनल आज यही स्टोरी कवर कर रहे थे। शहर में दंगा हो सकता था इसलिए जगह-जगह पुलिस के दस्ते तैनात कर दिए गए थे। देश का बड़ा दबंग चैनल इस पर एक बड़ी डिबेट आयोजित कर रहा था जो प्राईम टाईम पर थी ''देश के थिन्क टैंक को किससे ख़तरा है? क्या हमारा लोकतंत्र एक मुखौटा भर है जिसे कोई तानाशाह पहन कर घूम रहा है? कौन लोग नहीं चाहते कि लोग खुलकर सोचें, खुलकर बोलें और खुलकर लिखे? क्या आज सारे देश के पत्रकारों की जान खतरे में है? क्या अब केवल देश में एक ही रंग नज़र आएगा?'' मधुर का शव अब भी अंतिम संस्कार की प्रतीक्षा में था।

उधर गणेश को भी शहर के बिगड़ते हालात की खबर मिल चुकी थी। वह अपने साथियों से एक ही बात दुहरा रहा था ''यही वक्त है, अभी मुद्दा गर्म है। लोगों को खतरा दिखाई दे रहा है, सुनाई दे रहा है। सभी पत्रकारों में गुस्सा है। उनकी सहानुभूति बटोर लो। यह मुद्दा लगातार चलना चाहिए। अपने मीडिया कर्मी भाइयों से कान्टेक्ट करो और अपने लोगों को इस कहानी पर ज़ोर-शोर से काम करने के लिए कहो।'' सब के चले जाने पर सोफी मुस्कुराई और गणेश का हाथ पकड़ कर धीरे से बोली ''बहुत कूद रहा था साला। हमारा रेशो फिक्स करने चला था, खुद ही फिक्स हो गया। ज़रूरी था, उसका फिक्स होना। चलो अब काम पर लगते हैं।''

पूरा मीडिया एक नया आन्दोलन खड़ा कर था ''मधुर मुकेश को किसने मारा''? यह एक ऐसा सवाल था जो मास और क्लास दोनों में ही एक नई उत्तेजना पैदा कर रहा था। इस उत्तेजना को जिलाए रखना ज़रूरी था। राजनीतिक हलकों में एक नई सरगर्मी दिखाई दे रही थी। बुद्धिजीवियों के पास गोष्ठियाँ करने के लिए एक नई कहानी मौजूद थी। एक ऐसी कहानी जिसका हीरो मधुर मुकेश था। अगली सुबह मधुर के शरीर को अग्नि के सुपुर्द करने से पहले तोपों की सलामी दी गई थी। बड़ा अजीब था जिस राज्य के खिलाफ वह लड़ता रहा था, वही उसे राजकीय सम्मान दे रहा था। बहुत बड़ी तादाद में अलग-अलग हलकों से बुद्धिजीवी उसे श्रद्धांजलि देने पहुँचे थे। क्या फ़िल्म वाले, क्या लेखक, क्या दूसरी पार्टियों के लोग, दूसरे राज्यों के दूसरी विचारधाराओं के मुख्यमंत्री। इसमें से बहुत सारे ऐसे भी थे जो मधुर को जानते तक भी नहीं थे पर सबको इस मौत में ऐसा कुछ नज़र आ रहा था, जो उन्हें एक कर रहा था।

केन्द्र के खिलाफ एक नया फ्रंट उठता दिखाई दे रहा था, एक नया मोर्चा परवान पर था। एक नई लहर देश में कुलान्चे भर रही थी। उसकी चिता की आग अभी बुझी भी नहीं थी कि देश में कई चिनगारियाँ भड़कने लगीं थीं और उनको लगातार हवा दी जा रही थी। उसका शरीर अब मिट्टी हो चुका था। मधुर मुकेश पञ्च तत्वों को नहीं मानता था इसलिए शायद हवा, पानी, अग्नि, भूमि, आकाश में वह न भी विलीन हुआ हो तो भी वैज्ञानिक टर्म के हिसाब से उसका वह 'मोर्टल' शरीर अब गायब हो चुका था। उसका वह दिमाग भी, जिससे कई नए विचार निकले थे, जिसकी धारा में कई लोग आँखें बन्द कर के बहे थे। शायद उसे यह सोचने का मौका भी न मिला हो कि वह कभी भी मारा जा सकता था या फिर जिस दिमाग को वह इतना आज़ाद मानता था, उसकी आज़ादी का रिमोट कन्ट्रोल रखने वाले भी कहीं मौजूद थे? वह पचपन की उम्र में जा चुका था। उसे किसने मारा, कहना मुश्किल था। पर अब फिर से आज़ादी के नारे हवाओं में गूँज रहे थे। लोग सड़क पर थे और गणेश अपने काम पर। सत्ता अपने तौर तरीकों से चल रही थी। हर तरफ के थिन्क टैंक अपने अपने नैरेटिव लेकर बाज़ार में थे।

मरती हुई गणेश की पार्टी फिर से जीवित होने की एक नई आशा पाल रही थी। गणेश सोफी से कह रहा था ''भई अब मधुर की जगह उसका अखबार किसी को तो चलाना चाहिए। उसके पिता से कहकर हमें इसकी बागडोर किसी नए पढ़े-लिखे लड़के के हाथ में दे देनी चाहिए। आख़िर अभिव्यक्ति के लिए तो खतरे उठाने ही होंगे। सोचने की आज़ादी को बनाए रखना होगा तभी तो काम चलेगा।'' सोफी ने ताकीद की ''पर इस बार सोच समझ कर किसी नए लड़के का चुनाव करना! वो जो नया लड़का आज कल लगातार दिख रहा है टीवी गोष्ठियों में। वह विश्वविद्यालयों में भी अक्सर बड़ी भीड़ इकट्ठा कर लेता है। भई ऐसा ही कोई दबंग चाहिए जिसे पता हो कि नब्ज़ कहाँ है और कौन सी रग दबानी है? कहाँ कितनी नाटकीयता की ज़रूरत है ? तुम ठीक कहती हो सोफी अब उसे कन्ट्रोल में रखना पड़ेगा। ये आज़ादी-वाज़ादी हमारे नारों तक ही ठीक है। इसे बोल बोलकर कोई किसी एब्सोल्यूट आज़ादी की तलाश में निकल पड़े इमोशनल होकर तो फिर वही होता है जो मधुर के साथ हुआ।''

''कुछ भी हो ध्यान खींचने में माहिर था साला'', सोफी अजीब सी हँसीं हँसी थी। हँसते-हँसते जब थक गई तो एक गहरी साँस लेकर आईने में देखते हुए अपने ओंठ घुमाते हुए बोली, ''पता नहीं अब ये नया रंगरूट विश्वविद्यालयों के बाहर पके घड़ों की अटेन्शन कितनी जल्दी सीक कर पाएगा? भई अभी उम्र का भी कच्चा है और बात का भी। बात करने और फैलाने की कला तो पकते-पकते ही पकती है।''

''ठीक ही कह रही हो तुम'' गणेश ने उसकी बात का समर्थन किया।

''पर तुम्हारी जैसी तजुर्बेकार औरत कब काम आएगी।'', उसने सोफी को आगोश में भरते हुए कहा।

मधुर की हत्या हुए एक महीना बीत चुका था। डर का कारोबार कम होता दिखाई दे रहा था। नया रंगरूट भी काम पर लगाया जा चुका था। तभी, पता चला कि शहर में एक और पत्रकार मारा गया था। खून की ताज़ी खुशबू हवाओं में लहक उठी थी। 'आज़ादी' फिर सिर चढ़कर बोलने लगी थी। सबके पास इन हत्याओं को लेकर कहानियाँ थीं और उन कहानियों के बीच कई तन्त्र मौजूद थे जिन पर लोक चल रहा था। नए विचारों की नईधारा में फिर से नए लोग तैयार थे बहने के लिए। किस तरफ? यह सोचने की परवाह किसे थी ? अब तो लोगों ने यह भी पूछना करना बंद कर दिया था कि आख़िर मधुर मुकेश को मारा किसने था ?

***

'और तुझे क्या चाहिए...औरत'

उषा राजे सक्सेना

'और तुझे क्या चाहिए....औरत?' पहली बार घनश्याम ने उससे तब कहा था जब उसे लंदन आए सिर्फ दो घंटे हुए थे। इस नए अँग्रेज़ी वातावरण में वह कुछ नर्वस और घबराई हुई सी- थी। यूँ भी ढेरों सपने तो उसने आँखों में पाले ही नहीं थे, पर फिर भी कुछ मीठी सी चाह तो मन में ज़रूर ही उमड़ आई थी। पर घनश्याम के उन चार शब्दों ने जैसे उसे पथरीली और बंजर ज़मीन पर पटक दिया। इसलिए वह जो हल्का सा 'पिया मिलन' का सरूर उसके हृदय में जगह बना रहा था वह भी घुँटते हुए आँसुओं में बह गया।

घनश्याम एयरपोर्ट से सीधा उसे 84 फ्रेशवाटर रोड के उस पुराने से घर में लाया था जो उस समय उसे राजमहल जैसा नया-निकोर सा- लगा था। रास्ते भर घनश्याम एक शब्द नहीं बोला। उसने कोशिश की तो डपटते हुए बोला, 'स्टूपिड, देख नहीं रही है, ड्राइविंग कर रहा हूँ। एक्सीडेंट करवानी है क्या?' चौबीस घंटे की जगी, हवाई जहाज़ की गड़-गड़ और दिन-रात का फर्क उसका दिमाग वैसे ही चकरघिन्नी हो रहा था। उसे लगा वह होश भी खो देगी।

सरू तब सिर्फ सात वर्ष की दुबली-पतली बच्ची थी। वह गुड़ी-मुड़ी उसकी गोद में सोती रही और वह खुद जगती रही। घनश्याम का ऐसा रुख देख कर उसकी ज़बान को काठ मार गया था। कैसे चलेगी ज़िंदगी इस पराए देश में! वैसे भी घनश्याम के आगे उसकी ज़ुबान कभी खुली ही नहीं। शादी के बाद एक ही हफ्ते तो घनश्याम उसके साथ रहा। उस एक हफ्ते में उसने उससे सिर्फ देह की भाषा में ही बातें की। रात को देर से आना, सुबह जल्दी ही निकल जाना। जैसे मन ही मन कुछ पक रहा हो। माँ-बाप की उसने कभी कोई परवाह नहीं की। किसी के काबू में आए तब तो..... वह तेज़ मिजाज़ और उदंण्ड था। सीधे मुँह कभी किसी से बात नहीं करता था। घर में सबसे लड़ता-झगड़ता रहता और फिर एक दिन दहेज में मिले उसके गहने और रुपए चुरा कर, दो लाइन की एक चिट्ठी छोड़, वह इँग्लैण्ड भाग गया।

घनश्याम के ग़ायब हो जाने के पंद्रह-बीस दिन बाद मंदा को जब पहली उल्टी आई तो सास ने उसकी तेज़ चलती नब्ज़ देख कर बताया कि वह गर्भवती है। सास और ससुर दोनों खुशी से झूम उठे। सोचा बाप बनने की खुशी में घनश्याम ज़रूर घर आएगा, बीवी और बच्चे को साथ ले कर इंग्लैंण्ड जाएगा। उन्हें अपनी कोई चिंता नहीं थी। भगवान् ने खाने-पीने को बहुत कुछ दिया हुआ था। उसकी गोल-मटोल खूबसूरत पोती और बहू, बेटे के साथ लंदन में रहें, यही उनकी सबसे बड़ी चाह और खुशी की बात होगी।

पास-पड़ोस की देवर-देवरानियाँ जब मंदा को दबी-दबी ज़बान में बोलीयाँ मारती और आपस में खुसर-पुसर करती हुई कहतीं, 'सुना है घनश्याम ने गोरी पाल रखी है। दो लड़के भी हैं।' तो मंदा का कलेजा दहल जाता था। सास समझदार थी हमेशा उसे दिलासा देती रहती कि भगवान् तेरे सब्र की परीक्षा ले रहा है। भगवान् पर आस्था रखते हुए अपने पर भरोसा रख मंदा। अपनी छूटी हुई पढ़ाई पूरी कर और इस साल का फारम भर दे। अपने पैरों

संपर्क: 54 Hill Rd, Mitcham, CR42HQ, UK
ईमेल: usharajesaxena@gmail.com
मोबाइल : +44 (0) 7443483235

पर खड़ा होना सीख। अच्छे दिनों का इंतज़ार करते हुए अपनी पढ़ाई भी पूरी कर मंदा। वही ज़िंदगी में तेरा सच्चा साथी होगा।

सरू उस समय दो साल की थी जब उसने पहली बार बी.ए फाइनल का फॉर्म भरा था। पहली बार कुछ नम्बरों से फेल हो गई। सास ने सरू को सँभाला और कहा दूसरी बार फिर फार्म भर। इस बार जब परीक्षा दी तो दूसरे नम्बर से पास हो गई। बाद में बी.टी की ट्रेनिंग भी कर ली। पड़ोस के स्कूल में टीचर की नौकरी भी मिल गई।

घनश्याम का कुछ ठीक पता नहीं चल रहा था। पहले तो कभी-कभार उसकी कोई चिट्ठी-पत्री आ भी जाती थी। बाद में तो वह भी आनी बंद हो गई। हाँ यह ज़रूर हुआ कि सरू के पैदा होने के तीन-चार महीने बाद कोई अजनबी आकर ढाई लाख रुपए एक चिट के साथ उनके घर पहुँचा गया जिसमें धमकी के साथ लिखा था कि 50 हज़ार खर्चे के लिए है और 2 लाख के गहने मंदा को बनवा देना। यहाँ पैसे पेड़ पर नहीं फलते हैं। वह हाड़-तोड़ मेहनत करता है।

बाप रे! इत्ती दूर रहते हुए भी सबको धमकाता रहता है। हाँ इतना अब ज़रूर हुआ कि हर पाँच-छै महीने के बाद एक अजनबी उन्हें पचास हज़ार रुपए दे जाता। उस अजनबी से कुछ पूछो तो वह कहता कि मैं तो जी हरकारा हूँ। मालिक ने बोला कि पैसा आपको दे दिया जाए बस इतना मेरा काम है। मुझे और कुछ नहीं मालूम है।

अम्मा उससे चिट्ठियाँ लिखवाती रहतीं पर कोई जवाब नहीं! बाद में जब घर में फ़ोन लग गया तो अम्मा भी घनश्याम को धमकाने लगी। जवाब में कभी कहता, 'अभी मेरे खुद के रहने का कोई ठिकाना नहीं है। सारे पैसे तुम लोगो को भेज देता हूँ। मैं खुद फुटपाथ पर सोता हूँ। भला मैं दो और प्राणी को कैसे बुला लूँ।' कभी कहता कि अभी पेपर्स नहीं तैयार हैं तो कभी कहता कि पैसों का जुगाड़ कर रहा हूँ। इस तरह सात वर्ष गुज़र गएँ, फिर जब सास-ससुर ने ज़हर खा लेने की धमकी दी....और अचानक ही ससुर का हार्ट-फेल हो गया तो उसने उसे और सरू को बुलाने के स्पाँसरशिप डिक्लेरेशन के काग़ज़-पत्तर पोस्ट से भेज दिए पर खुद नहीं आया....

और तभी अचानक गाड़ी झटके के साथ रुक गई और वह घनश्याम की दुनिया में लौट आई....

लाल ईंटों से बने, एक से दिखते घरों के बीच, 84 नम्बर के घर का गेट खोल, घनश्याम ने चाबी से घर का दरवाज़ा खोलते हुए, बाहर रखी बड़ी सी कचरा-पेटी के बारे में मंदा को बताया तो उसका दिमाग़ ही चकरा गया। आँखे झुकाए वह बस उसे सुनती रही। वैसे भी उसे घनश्याम से हमेशा डर लगता रहा है। उसकी आवाज़ कड़क थी। आज तो वह आकंठ दहशत में थी। कैसा तो अँग्रेज़ साहबों जैसा गोरा-चिट्टा हो गया है, ऊपर से काला लंबा कोट, हैट, गले में मफ़लर, हाथ में दस्ताने। शटर-पटर बात-बात में अँग्रेज़ी बोलता है। एकदम अजनबी-सा। क्या पता किस बात पर भड़क जाए, इसलिए पहले तो वह चुप ही रही। फिर धीरे से बोली-

'कचरा पेटी? ये तो इतना सुंदर और कीमती हैं जी। इसमें तो कपड़े-लत्ते, खाने-दाने रखे जा सकते हैं।'

'बेवकूफ़, अक्ल की दुश्मन..... जितना बताऊँ उतना ही समझा कर। यहाँ रहने-सहने के अपने अलग तरीक़े हैं। कपड़े रखने के वार्डरोब होते हैं।' वह क्या होता है जी? उसने मन ही मन सोचा।

'सुन, यहाँ कानून बड़ा सख्त है औरत, गलत काम करेगी तो सीधा जेल जाएगी। ये पेटी तेरे बाप के नहीं हैं। ये काउंसिल की प्रॉपर्टी है।' उसने उसे डराया। वह और डर गई थी। यह कहाँ आ गई? अब मर! पहले नहीं सोचा। काग़ज़-पत्तर देखते ही पगला गई। आने के लिए उतावली हो गई थी। वह भी क्या करती। सास ने भी धक्का दिया। पास-पड़ोसियों के ताने खा-खा कर कलेजा वैसे ही छलनी हो चुका था। आगे सरू भी बड़ी हो रही थी। ठीक तरह से उसकी पढ़ाई-लिखाई उस छोटे से शहर में कहाँ होती! ठीक है, अम्मा लोगों के कहने-सुनने की फिकर बिल्कुल नहीं करतीं पर उसे पता है पास-पड़ोस के मर्द और छड़े उसे किस नज़र से देखते थे। यहाँ अपना घर है। रह लेगी जैसे भी होगा। सब सीख जाएगी। पढ़ी-लिखी है। अंग्रेज़ी बोल लेती है।अब जो होगा देखा जाएगा। इंसान रेत-रेगिस्तान में रह लेता है फिर यह तो घर है। सीख जाएगी सब कुछ। तमाम डरों के बीच भी उसने अपने मन को समझाते हुए दृढ़ संकल्प लिया। मुझे समझदारी और हिम्मत से काम लेना है, इसकी बातें तो एक कान से सुननी और दूसरे से निकाल देनी है। जाने इसके मन में क्या चलता रहता है कभी सहज ही नहीं हो पाता है।

'मेरी बातें ध्यान से सुन, गँवार औरत। अब चल तुझे सारे घर का भूगोल समझा दूँ।' उसके समझ में कुछ नहीं आया सोचा, भूगोल तो दुनिया का होता है घर का भूगोल क्या? तमाम दहशतों के बीच भी वह मन ही मन हँस पड़ी। 'हाँ, जी।' कह कर वह साए की तरह उसके पीछे- पीछे चल पड़ी। घनश्याम उसे एक-एक कर के सारे कमरे वार्डरोब, क्लॉज़ेटस, नॉब और स्विचेज़ वगैरह दिखाता रहा। खासकर गैस, किचेन-कैबिनेट, टायलेट-शावर और उनके इस्तेमाल करने के तरीके और उनकी साफ-सफाई।

'यह तो सारा घर ड्राइंग-रूम जैसा लगता है जी, पाखाना से रसोई तक कैसा चमचमा रहा है। पर आप देखते रहना, मैं कभी शिकायत का मौक़ा नहीं दूँगी, सारा घर शीशे की तरह चमका कर रखुँगी।' उसने हिम्मत कर के आँखों के कोर से घनश्याम को छुप-छुप कर देखते हुए कहा। घनश्याम की देह-गंध रह-रह कर उसे भरमा रही थी। सात सालों से वह इसी देह-गंध के लिए तड़प रही थी।

'कैसी गँवार है।' 'टॉयलेट और किचेन।' घनश्याम ने उसे घुड़कते हुए सुधारा।

'फ्रिज में तंदूरी चिकन और रुमाली रोटियाँ पड़ी हैं, खा लेना फिर साफ़-सफ़ाई कर के सो जा। लड़की तो सो ही गई है। कल संडे है आराम कर, चीज़ों को समझ और परख, परसों उसका स्कूल में नाम लिखाना ज़रूरी है। वह देख, वह जो हरा सा गेट दिख रहा है न, लेफ्ट में नुक्कड़ पर....' उसने खिड़की से उसे दिखाते हुए कहा, 'वही ग्रेवनी स्कूल है। वहीं चली जाना। पासपोर्ट और स्कूल लीविंग सर्टिफिकेट साथ में ज़रूर ले जाना। वर्ना सोशल वर्कर घर में धमक जाएँगी।' घनश्याम ने टॉप कोट पहनते हुए कहा।

'आप किधर चले जी, मुझे क्या स्कूल

अकेले जाना पड़ेगा?' वह डरते हुए बोली।

'मैं तेरा नौकर हूँ! यहाँ हर किसी को अपने काम आप करने होते हैं समझी।' शायद रात की ड्यूटी होगी, मंदा ने सोचा। इसी लिए जल्दी मचा रहा है।

'कोई बात नहीं जी। आपका फ़ोन नम्बर तो मेरे पास है न। ज़रूरत पड़ी तो फ़ोन कर लूँगी।'

'खबरदार जो मुझे फ़ोन किया। तेरे बाप का नौकर नहीं हूँ, समझी! वह नम्बर अब काम नहीं करता है। अपने काम अपने आप करना सीख और अपने आप जीना सीख, समझी...।' आँखें तरेरता चेहरे पर आई सख्ती को और बढ़ाता हुआ ऊँचे सुर में बोला, 'मुझे काम करना होता है। सब देख समझ ले! घर भाड़े पर है। कोई तोड़-फोड़ की तो तुझे ही भरना पड़ेगा।'

'आप जा कहाँ... ' वह अपना वाक्य भी पूरा नहीं कर पाई कि वह घुड़का...

'घर, मकान, कपड़ा-लत्ता, दाना-पानी सब है और तुझे क्या चाहिए....औरत ?....बहुत चपड़-चपड़ मत कर वर्ना वापस भेज दूँगा।' उसे घुड़ने के बाद घनश्याम ने अपने आपको संयत करते हुए सोचा, सब कुछ इतना नया-नया है। पता नहीं इसे कुछ ठीक से समझ भी आया या नहीं। एक बार फिर उसे घर का चक्कर लगवाना ठीक रहेगा। मंदा फिरकिनी की तरह उसके पीछे-पीछे घूमती रही। ऊपर से इंसान खुद को चाहे कितना तराश-तुराश ले पर अँदर का उसका रख-रखाव नहीं बदलता है। मंदा मन- ही- मन सोच रही थी।

उधर घनश्याम मन-ही मन सोच रहा था, शायद अब तक के उसके कड़क और रूखे व्यवहार ने मंदा के मन में उसके लिए ज़रूर वितृष्णा पैदा कर दी होगी और धीरे-धीरे वह उसके मन से उतरता जा रहा होगा। वह आश्वस्त था कि मंदा पहले से कहीं अधिक परिपक्व और समझदार है। वह अपना जीवन ज़रूर सँवार लेगी।

घनश्याम ने पलंग पर सोई सरू को देखते हुए कहा, 'और देख, लड़की को जल्दी ही अलग कमरे में सोने की आदत डाल, इस कन्ट्री में बच्चे अलग कमरे में सोते हैं।' शायद इसके दिल में भी कुछ हो रहा है। ऊपर से सख्ती दिखा रहा है। मंदा बात के पीछे छिपे अर्थ को समझकर दुल्हन की तरह शर्मा गई, उसे वे रातें याद आ गई, जब उतावला घनश्याम उसे अकेले पाते ही अपने बलिष्ठ हाथों में उठा, बाहों में कसता-मसलता पलंग पर पटक उसके अँग-अँग पर मुँह-होंठ रगड़ता, काटता, नोचता- खसोटता उसके अँदर अमृत-सुख का सोता बहा देता था। घनश्याम के बदन की गंध और नज़दीक़ी इस समय मंदा के रेशे-रेशे में बिजलियाँ भर रही थीं। वह देह सुख के लिए विह्वल हो उठी। यह घनश्याम मुझे इस तरह क्यूँ सता रहा है! क्यूँ नहीं पहले की तरह झपट्टा मार कर मुझे दबोच लेता है! वह तो कबसे लरज रही है कि घनश्याम उसे कोई इशारा तो करे।

सरू की छोटी सी देह पलँग पर गुड़-मुड़ पड़ी हुई थी।

उसने घनश्याम से किसी नई-नवेली दुल्हन की तरह झिझकते हुए कहा, 'यह तो ऐसे ही गहरी नींद सोती है जी, रात को जगती भी नहीं है। आप चाहो तो उसे दूसरे कमरे में सुला दो।'

'नहीं! नहीं! सोने दे उसे। मत जगा।'

'ठीक है जी', उसने कामना और उत्तेजना से आरक्त हो आए अपने चेहरे को दुप्पटे से ढँकते हुए, लरजते, चुगलियाँ करते कंपित देह को नियंत्रित करते, सधी हुए आवाज़ में कहा, 'कोई नहीं जी आज रात हम ही टैडी-बीयर वाले कमरे में सो जाएँगे।' घनश्याम उसकी बातों को अनसुना कर आगे बढ़ खुली नंगी खिड़कियों को देखते हुए बोला 'अरे! हाँ, तुझे मैंने पर्दे डालना तो बताया ही नहीं। यहाँ शाम होते ही हर कमरे के पर्दे डाल देते हैं। घर की रोशनी बाहर नहीं जानी चाहिए।' पर्दों की डोरियाँ खींचने के लिए जैसे ही घनश्याम ने बाहों को मोड़ा उसकी कोहनी पीछे खड़ी मंदा के धड़कते सीने के उभार को कोंच गया। मंदा लरज गई उसकी साँस चौबिस सौ हॉर्सपावर के इंजन सी तेज़ चलने लगी, बिजली सी तड़पकर वह बिस्तर पर निढाल गिर पड़ी। घनश्याम पर्दो की डोरियाँ खींच, जब पलटा तो देखा कि मंदा बिस्तर पर औंधी पड़ी हुई थी। घनश्याम पल भर को तो विचलित हो उठा पर जल्दी ही उसने अपना संतुलन बना लिया।

'सो गई क्या?' उसने मंदा के पैर के अँगूठे को हिलाते हुए कहा, 'अभी तुझे और भी बहुत सारी बातें बतानी हैं उठ।' उसने टॉपकोट के बटन लगाते हुए गले में स्कार्फ डाला और जेब से दस्ताने निकाल कर हाथों में डालने लगा। अचानक मंदा तकिए को गोद में लेकर उठ बैठी।

'आप इतनी रात कहाँ जा रहे हो जी, आज पहला दिन है।' मंदा ने हिम्मत कर मनुहार करते हुए कहा।

'अरे! कमाल करती हो। सब कुछ तो है यहाँ... और तुझे क्या चाहिए? बेवकूफ़ औरत। कल आऊँगा फिर सिर फोड़ने किसी समय.....।' भौंहे चढ़ाते हुए खुद पर काबू करता हुआ जल्दी से घनश्याम ने कहा और सीढ़ियाँ उतरता हुआ दरवाज़ा भेड़ कर बिना मुड़े चला गया।

'...और तुझे क्या चाहिए....' '....और तुझे क्या चाहिए....' '....और तुझे क्या चाहिए.... औरत, जैसे मेरी कोई भावना नहीं है.....मेरा कोई वजूद नहीं है।' बुदबुदाती हुई मंदा थोड़ी देर बुत बनी बैठी रही फिर भट्टी से दहकते चेहरे पर बिना किसी सूचना के गालों पर छन्न-छन्न गर्म आँसू टप्प-टप्प टपकने लगे। कम्बख्त ये आँसू भी न... और बेदर्दी से उसने उन्हें उँगलियों के पोर से पोंछ दिये। पता था सब कुछ पर फिर भी चली आई नामुराद, ज़लील होने के लिए, उसने खुद को कोसा। वह सोच भी नहीं सकती थी कि घनश्याम उसे सामने पाकर भी ऐसा पत्थर सा- निर्लिप्त होगा। सात साल वह अपने कमबख़्त देह को जेठ -देवरों और मनचले पड़ोसियों से बचाती फिरी। किस लिए.....?

चलते वक्त सास ने कहा था,' घनश्याम का मिज़ाज तो तू जानती है। उस निकम्मे ने आज तक कभी किसी की नहीं सुनी। पर तू धीरज से काम लेना। तूने अपनी सेवा से यहाँ सबका मन जीत लिया है। मेरा आशीर्वाद अकारथ नहीं जाएगा। घनश्याम एक दिन रास्ते पर आ जाएगा। मैं यहाँ तेरे लिए मंदिर में माथा टेकती रहुँगी। रो मत पगली। हिम्मत से काम लेना। तू पढ़ी-लिखी है, समझदार है। जब पहचाने हुए सारे रास्ते खो जाते हैं तो इंसान को नए रास्ते बनाने पड़ते है....।'सोचते-सोचते मंदा को नींद आई ही थी कि सरू ने उसकी बाँहें हिलाते हुए कहा,'मम्मी-मम्मी, उठ ना। हम लंदन आ गए क्या? यह हमारा घर है

क्या? मम्मी पापा कहाँ हैं?'

मंदा को समझ नहीं आ रहा था कि वह क्या कहे.....सरू को क्या बताए....कैसे बताए वह उस नन्हीं सी बच्ची को कि हम ताड़ से गिरे और खजूर में अटक गए, बच्चे। उसने खुद को सँभाला। चेहरे पर हँसी लाते हुए बोली, ' तेरे लिए बाहर से कुछ सामान लाने गएँ हैं। दोपहर में आएँगे। पापा जब आए तो खूब प्यार करना अच्छा....।'

'हाँ, मम्मी यह भी कोई कहने की बात है। मैं तो उनके गोद में चढ़ जाऊँगी और खूब पुच्चियाँ दूँगी। मम्मा अभी तो भूख लगी है। पेट में चूहे कूद रहे हैं। '

'अरे हाँ, चल आजा, तेरे लिए पापा तंदूरी मुर्गा लाए थे।' सरू की आँखें फिर नींद से बोझिल होने लगी थीं। उसने मुर्गी खाई और फिर गहरी नींद में सो गई।'

दूसरे दिन दोपहर बाद घनश्याम आया, उसके हाथ में खाने के दो-तीन पैकेट थे। उन्हें किचन टॉप पर रखते हुए बोला, 'मैं किसी और शहर में काम करता हूँ और वहीं रहता हूँ। तीन महीने का एडवांस किराया दिया हुआ है इस मकान का। खाने-पीने का सारा सामान लार्डर में है। फिर ऊपर से खाने और रसोई का सारा सामान तू अपने साथ चार बक्सों में अनाज-दालें और कपड़े-लत्तों के साथ भर कर लाई ही है उनसे काम चला....।'

फिर जाते-जाते बोला, 'सुन, कल सबेरे साढ़े आठ बजे जब पास-पड़ोस के बच्चे स्कूल जाने लगे तो तू भी लड़की को लेकर उनके साथ चली जाना। स्कूल के ऑफ़िस में जा कर लड़की का दाखला करा देना...और देख, फिर से याद दिलाता हूँ पासपोर्ट और स्कूल लीविंग सर्टिफिकेट साथ ले जाना मत भूलना। यहाँ स्कूलों में फीस-वीस नहीं लगती है। किताबें-कुताबें भी वही लोग देते है. ...और देख इस बीच तमाम औरतों और माँओं से पता कर के किसी फैक्ट्री या हिंदुस्तानी दुकान में काम ले लेना। यहाँ कोई खाली नहीं बैठता है।' और वह दरवाज़ा खोल बाहर निकलने ही वाला था कि चलते-चलते दस-दस के दस नोट और कुछ छुट्टे मेज़ पर रखते हुए बोला, ' और तुझे क्या चाहिए...औरत?' और फिर बिना उसकी ओर देखे एक पल में बाहर निकल गया।

मंदा सन्न रह गई, उसका मन किया कि भाग कर घनश्याम को पकड़ ले और एक बार मनुहार करती हुई कहे कि मुझे आप चाहिए, मुझे सरू का पापा चाहिए पर वह मूर्ती सी ख़ामोश खड़ी रही घनश्याम ने सुनना तो था नहीं। आगे वह और ज़ोर-ज़ोर से झगड़ा करता और सरू जग जाती.... सात साल वह उसके बगैर रही है और अब आगे भी रह लेगी। आख़िर उसकी भी कोई आन है, इज़्ज़त है। नहीं रहना चाहता है मेरे साथ तो ना रहे.....गोरी के साथ रहना चाहता है तो रहे...मुझे क्या?

सोचते हुए उसने दुपट्टे के कोर से आँखें पोंछी, फिर सोचा मैं पढ़ी-लिखी हूँ कोई जाहिल तो नहीं हूँ। अपनी जगह इस दुनिया में आप बनाऊँगी, किसी की मोहताज नहीं रहूँगी। मंदा रोती जाती साथ में तरह-तरह के संकल्प लेती हुई जल्दी-जल्दी घर का सारा सामान क़रीने से लगाती जाती फिर कभी रुक जाती और कभी आइने में खुद को देखती और स्वयं को समझाती..... कभी एक दम से सरू का ख़्याल आ जाता तो सोचती सरू उठेगी और पापा के बारे में पूछेगी तो क्या कहेगी... कभी सोचती, क्या अम्मा को कुछ बताने की ज़रूरत है। नहीं, अभी नहीं। अम्मा कुछ कर तो सकेंगी नहीं, नाहक परेशान होंगी बस्स।

अचानक जाने क्या मन में आया कि सारा काम छोड़ कर उठी, जल्दी से घर का एक चक्कर लगाया और खुद से बोली, 'अभी तो ज़रूरत की सभी चीज़ें घर में मौज़ूद हैं। उसकी और सरू की तो वैसे भी कम में रहने की आदत है।'

गहनों और इधर-उधर से खरीदे और जोड़े हुए पौंडों की एक पोटली जो चलते-चलते सास ने उसे सँभालवाए थे, उन्हें वह थोड़ी देर हाथ में लिए खड़ी रही। फिर अचानक पोटली छोड़, जल्दी से अपने टीचर्स ट्रेनिंग की सर्टिफिकेट को फाइल में से निकालकर सीने से लगाते हुए खुद से कहा, तुम हो मेरा सबसे बड़ा सहारा, मेरे जीवन भर की इन्श्योरेन्स मनी। सच, पढ़ाई-लिखाई ही सबसे बड़ा धन है जिसे चोर भी नहीं चुरा सकता है। उसे अम्मा की याद आई और उसने झटपट गालों पर झर-झर बहते आँसू पोंछे और फिर एक दृढ़ निश्चय के साथ मुस्काराई, मैं स्वयं सिद्धा हूँ क्यों हूँ ना? फिर सस्वर बोली, 'ये आँसू भी न, बड़ी बेकार की चीज़ है इनसे आज तक कोई काम नहीं निकला है।' उसे अपने आपको ही नहीं सरू को भी टूटने से बचाना होगा। उसने सावधानी के साथ फाईल में सरू का पासपोर्ट और स्कूल लीविंग सर्टिफिकेट के साथ अपना पासपोर्ट और डिगरियाँ भी सँभाल कर रख लीं.....

घनश्याम तो हमेशा से ऐसा ही था। यह कोई नई बात तो नहीं है...और फिर तू अपने आप में पूरी की पूरी भरी-पूरी ज़िंदा औरत है। अपने लिए जीना सीख, सरू के लिए जीना सीख....तू 'स्वयं-सिद्धा' है। मंदा ने 'स्वयं-सिद्धा' शब्द इस तरह उच्चारित किया मानों यही उसका नाम हो। सोचते-सोचते जाने कब वह सरू के पास जा कर लेट गई।

उधर मंदा की खूबसूरत देहयष्टि, कामना से आरक्त चेहरा, आसक्त आँखें, नन्हीं कोमल-कोमल, सुन्दर सोहणी घनश्याम को क्या कम विचलित कर रही थी। इससे पहले कि वह मंदा के चुलबुलाते देह को अपने हाथों में उठा कर सीने से लगाने की ग़लती करता.... वह जल्दी से जल्दी मंदा के पास से भाग जाना चाहता था। वह भी मजबूर था। उस रईस औरत पैमेला के यहाँ ड्राइवर की नौकरी करते-करते कब वह उसका सहचर-प्रेमी बन गया और उपहार में उससे एड्स ले आया उसे पता ही नहीं चला। बुखार और सिरदर्द के साथ-साथ उसका वज़न भी तेज़ी से घट रहा था। क्या जाने कब उसका डॉक्टर उसे अस्पताल में भर्ती करा दे, सोचते हुए उसने गाड़ी का एक्सेलेटर कुछ इस तरह दबाया मानों वह ज़िंदगी से रेस कर रहा हो....

सोमवार को सुबह-सवेरे तक़रीबन साढ़े तीन बजे ही सरू उठ बैठी, उठते ही मंदा को हिलाते हुए बोली, 'मम्मी, मम्मी पापा कहाँ है? मम्मी पापा ने तो बहुत सुंदर घर बनाया है।'

मंदा को नींद कहाँ आ रही थी। वह भी झट से उठ बैठी और सरू को बाहों में लपेटते हुए बोली, 'हाँ बेटा सरू, अपनी घड़ी में देख आज तारीख और दिन क्या है? ज़रा बता तो सही हम भारत से कब और किस तारीख चले थे! तू पूरे अड़तालीस घंटे सोती और जगती रही है।'

'अरे मम्मी, सच! मैं पूरे दो दिन सोती रही, आपने मुझे उठाया क्यों नहीं?'

'तू उठी थी मेरी बच्ची, खाना खाया, पानी पीया और सोनिया बूआ की बेबी की तरह फिर सो गई। इतनी लंबी यात्रा के बाद तो ऐसा होता ही है पूरे साढ़े पाँच घंटे का फर्क है न टाइम का। फिर यहाँ दिन भी कितनी जल्दी हो जाता है। देख ना अभी सुबह के चार बजे हैं....और कैसा सुंदर दिन निकल आया है। देख न, कैसा खूबसूरत दिन है! सूरज भी चम-चम चमक रहा है।'

'हाँ-हाँ वह सब तो मुझे पता है मैम ने मुझे सब बता दिया था। जाड़े में सब इसका उलटा हो जाता है....पर मम्मा पापा कहाँ हैं, क्या वे इत्ती जल्दी काम पर चले गएँ।'

'हाँ- बेटा, उनकी नौकरी किसी दूसरे शहर में लग गई है, उन्हें जाना पड़ा। देख न कितना सुंदर कमरा सजाया है उन्होंने तेरे लिए....उन्होंने कहा है कि आज ही तेरा दाख़ला स्कूल में करा दूँ।'

'...पर मम्मा मैं तो पप्पा के बारे में बात करना चाहती हूँ।'

'हाँ, मेरी रानी बेटी, हम उनकी ढेरों बातें करेंगे पर अभी नहीं। पापा ने कहा है, सबसे ज़रूरी काम तेरा एडमिशन, वर्ना मुश्किल हो जाएगी।'

'इधर देख कैसी उजली डबलरोटी है। मैं तेरे लिए अंडा और टोस्ट बनाती हूँ। तू तब तक ब्रश करके तैयार हो जा। अरे! तूने अपना कमरा तो देखा ही नहीं। यहाँ तेरा अलग कमरा है। देख कितने टैडी बीयर हैं।'

'बीयर नहीं मम्मी बेयर।' मँदा हँस पड़ी, 'अरे हाँ तू तो अभी से अँग्रेज़ों जैसा बोलने लगी है।'

ब्रेकफास्ट के बाद मंदा और सरू दोनों ने मिल कर बेड रूम ठीक किया। मंदा बर्तन धोती तो सरू पोंछ कर उसे डिश रैक में लगाती रही। मम्मी यहाँ तो काम करने में बड़ा मज़ा आएगा। सब कुछ साफ सुथरा जो है। पापा जब यहाँ आएँगे तो बहुत खुश होंगे।'

'हाँ, बेटे, अब आठ बजने वाले है हम स्कूल के लिए तैयार हो जाते हैं। साढ़े आठ बजे स्कूल के लिए निकल पड़ेंगे।' उसने सरू के कमर में हाथ डालते हुए खिड़की से उसे ग्रेवनी स्कूल का गेट दिखाया और कहा, 'चल तैयार हो कर हम नीचे गार्डेन में गेट पर खड़े हो जाएँगे और जैसे ही बच्चे स्कूल जाने के लिए निकलेंगे, हम भी उनके साथ बातचीत करते हुए स्कूल को चल पड़ेंगे।'

जब तक तैयार हो कर सरू और मंदा नीचे आए, बच्चों का पहला झुंड जा चुका था। दूसरा झुंड आ रहा था। इसके पहले कि मंदा आगे बढ़ती, सरू बच्चों के साथ कदम से कदम मिला कर चलने लगी मंदा भी उनके साथ हो ली। तभी एक बच्चे ने सरू के लंबे काले लहराते बालों को छू कर कहा, 'हाय! आर यू कमिंग टु ग्रेवनी स्कूल।'

'यस, आई एम अ न्यू गर्ल। दिस इज़ माई मदर, मंदा..।'

'आई कैन सी दैट, आई विल शो यू मिस मार्टिन्स ऑफिस।'

'थैंक यू। माई नेम इज़ सरीन, यू कैन कॉल मी सरू।'

'आई एम जैक्सन, बट यू कैन कॉल मी जै।'

'ह्वाट अ ब्यूटिफुल नेम, डू यू नो दैट जै मीन्स विक्ट्री।' सरू ने कहा।

'अफ्कोर्स आई नो, माई टीचर इज़ इंडियन, शी टोल्ड मी। शी हैज़ लांग ब्लैक हेयर लाइक यू ऐन्ड आई लव हर। शी इज़ वंडरफुल.....।'

साथ चलती हुई मंदा बच्चों की बातें सुन कर मन ही मन खुश हो रही थी कि देखो बच्चे कितने अच्छे, सच्चे और निडर होते है और हम वयस्क ही हर वक्त न जाने क्यों इतने घुन्ने, आतंकित और डरे-डरे रहते हैं।

सरू को देख कर मंदा ने भी दो-चार लोगों से हाय-हेलो किया। लगभग हर किसी ने उससे सहजता से बातें की। मंदा का आत्मविश्वास बढ़ा उसने हाथ में पकड़ी फाइल को एक नए उत्साह और निश्चय के साथ सीने से लगाया और साथ चलते माता-पिता और बच्चों से बातें करती वह ग्रेवनी स्कूल के गेट तक पहुँच गई।

सामने सुबह का उगता सूरज, स्कूल का हरा फाटक, मैदान में खेलते बच्चे, साथ चलते लोग, उसे लगा वह अकेली नहीं है। लोग चल रहे हैं वह उनके साथ चल रही है। उसे लगा न जाने कितने बंद दरवाज़े धीरे-धीरे उसके लिए खुलते जा रहे हैं...।

***

लेखकों से अनुरोध

'विभोम-स्वर' में सभी लेखकों का स्वागत है। अपनी मौलिक, अप्रकाशित रचनाएँ ही भेजें। पत्रिका में राजनैतिक तथा विवादास्पद विषयों पर रचनाएँ प्रकाशित नहीं की जाएँगी। रचना को स्वीकार या अस्वीकार करने का पूर्ण अधिकार संपादक मंडल का होगा। प्रकाशित रचनाओं पर कोई पारिश्रमिक नहीं दिया जाएगा। बहुत अधिक लम्बे पत्र तथा लम्बे आलेख न भेजें। अपनी सामग्री यूनिकोड अथवा चाणक्य फॉण्ट में वर्डपेड की टैक्स्ट फ़ाइल अथवा वर्ड की फ़ाइल के द्वारा ही भेजें। पीडीऍफ़ या स्कैन की हुई जेपीजी फ़ाइल में नहीं भेजें, इस प्रकार की रचनाएँ विचार में नहीं ली जाएँगी। रचनाओं की साफ़्ट कॉपी ही ईमेल के द्वारा भेजें, डाक द्वारा हार्ड कॉपी नहीं भेजें, उसे प्रकाशित करना अथवा आपको वापस कर पाना हमारे लिए संभव नहीं होगा। रचना के साथ पूरा नाम व पता, ईमेल आदि लिखा होना ज़रूरी है। आलेख, कहानी के साथ अपना चित्र तथा संक्षिप्त सा परिचय भी भेजें। पुस्तक समीक्षाओं का स्वागत है, समीक्षाएँ अधिक लम्बी नहीं हों, सारगर्भित हों। समीक्षाओं के साथ पुस्तक के कवर का चित्र, लेखक का चित्र तथा प्रकाशन संबंधी आवश्यक जानकारियाँ भी अवश्य भेजें। एक अंक में आपकी किसी भी विधा की रचना (समीक्षा के अलावा) यदि प्रकाशित हो चुकी है तो अगली रचना के लिए तीन अंकों की प्रतीक्षा करें। एक बार में अपनी एक ही विधा की रचना भेजें, एक साथ कई विधाओं में अपनी रचनाएँ न भेजें। रचनाएँ भेजने से पूर्व एक बार पत्रिका में प्रकाशित हो रही रचनाओं को अवश्य देखें। रचना भेजने के बाद स्वीकृति हेतु प्रतीक्षा करें, बार-बार ईमेल नहीं करें, चूँकि पत्रिका त्रैमासिक है अत: कई बार किसी रचना को स्वीकृत करने तथा उसे अंक में प्रकाशित करने के बीच कुछ अंतराल हो सकता है।

धन्यवाद

संपादक

vibhom.swar@gmail.com

हथेलियों में क्षितिज

आभा सिंह

जब से वह कैलिफ़ोर्निया आया था। उसे भारत के सपने आते थे। डैडी के, मम्मी के, भाई बहनों के, देह तो वक़्त के साथ आगे बढ़ती रही, पर जैसे टूटे रिकार्ड पर सुई अटक जाए, उसी तरह दिमाग भारत में रहता, घर-परिवार में रहता। नई जगह, नए लोग, नई धरती, नए विचार, नया पहनावा, नया सामन्जस्य, सब कुछ नया-नया, अनजाना, अजनबी, पर अब दो साल तक यहीं रहना था, यहीं पढ़ना था। डैडी, मम्मी और भाइयों-भाभियों से फ़ोन पर बात तो करता था, पर वह भी सीमित ही होती थी, क्योंकि उसे मालूम था कि स्कॉलरशिप के पैसों में ही रहना सीखना था। पैसा-पैसा जोड़ना था, अपने आप रहना था, खाना बनाना था। रात को थक कर आए, तब भी अपना काम ख़ुद ही करना था। आगे आने वाले कल की तैयारी करनी थी। साथ ही नए मौसम में स्वयं को ढालना था। यूँ तो आस-पास हिन्दुस्तानी विद्यार्थी थे। दिन-रात हिन्दी गाने, हिन्दी फिल्में, हिन्दी बोलना, फिर भी बड़ी असुरक्षा लगती थी। मन घर के लिए हुड़कता था, शायद इसीलिए अवचेतन मन की इस चाह की परिणति सपनों में होतीं। आते समय सामान अधिक हो जाने पर बैग से कुछ जीन्स, कपड़े, किताबें निकालनी पड़ी थीं। वही सारा सामान डैडी ने पार्सल से भेज दिया। सामान साधारण था। न आता, तो भी आराम से काम चलता। डैडी तो डैडी ही थे। 2000 रुपये लगाकर उन्होंने पार्सल किया तो फ़ोन पर ही उनसे लड़ लिया 'डैडी दो हज़ार रुपये पार्सल में लगाए, सामान ऐसा ज़रूरी नहीं था। यहाँ सब मिलता है।' माँ ने कहा था ''सारी लड़ाई आज ही लड़ लेगा क्या ? अभी तो एक और पार्सल मिलेगा किताबों का, थोड़ा लड़ना उस दिन के लिए भी तो बचाना है।''

घर कितना याद आया था उस दिन, आमने-सामने हो कर और भी ढेर सी बातें करने का दिल कर आया था। अपनी परेशानियाँ बहुत कम बताता था उन्हें। हिन्दुस्तान से मदद आना मुश्किल होगा अवचेतन मन में यह बात अच्छी तरह समझ में आ गई थी। यहाँ चार छात्रों ने मिलकर एक घर किराए पर लिया था, सेकेन्ड-हैन्ड फर्नीचर, टी.वी., वाशिंग मशीन भी। सबने मिल कर ख़रीदा था। एक-एक कमरा रहने का मिला था उन सबको। ड्रांइग-रुम, डाइनिंग रुम, किचन कॉमन थे। खाना वे चारों बारी- बारी से बनाते। शनिवार, इतवार वे सब

संपर्क: मकान 80-173, मध्यम मार्ग, मानसरोवर, जयपुर 302020 (राज.)
ई-मेल: abhasingh1944@gmail.com
फ़ोन: 0141-2781183,
मोबाईल:099284-94119,
088290-59234

मिल कर बनाते। यदि बजट में प्रावधान हो जाता तो बाहर खा लेते थे। धीरे-धीरे रहना आ रहा था। चाहे खाना बारी -बारी से बनाना होता था और मुश्किल से हफ़्ते में एक दिन ही, पर कितना आलस आता था, उसकी अपनी बारी आने पर उल्टा-सीधा जो माँ से सीखने पर याद रहा था, बना देता, कभी कच्चा, कभी अधपका, फ़ोन पर मम्मी- डैडी सब कुछ पूछते थे। उन्हें उसके बारे में अधिक से अधिक जान लेने की इच्छा होती थी। उनकी बातों से ध्वनित होता था कि उन्हें सब कुछ मालूम होना चाहिए था, कहीं ऐसा न हो कि उनकी अनभिज्ञता से उनका बच्चा दु:ख पाए। माँ-बाप को इसीलिए तो अमोल कहा जाता है। कोई भी रिश्ता कहीं भी फल-फूल सकता है, पर यही रिश्ता ऐसा है जो खो जाए तो मिल नहीं सकता। ऐसा सोच कर वह भावुक हो जाता था। उसे ऐसा सोचना अच्छा लगता था। गुपचुप मुँह में कुछ घुलने जैसा, मीठा सा अहसास होता था डैडी-मम्मी के बारे में सोच कर। घर से आए तीन -चार महीने हो चुके थे।

उस दिन भी वह लैब में वह काफी देर से पहुँचा। वहाँ ई-मेल आया था कि डैडी का एक्सीडेंट हो गया है। पाँच दिन से वे अस्पताल में है। उनकी तबियत का पूरा विस्तृत वर्णन भाई ने भेजा था। यह भी कि तबियत अब सम्भल रही है। घबराने जैसी कोई बात नहीं है। फिर भी मन बहुत घबराया था। लैब के बाहर खुले में थोड़ी देर टहला था। तसल्ली थी कि डैडी ख़तरे से बाहर है। उनका हाल जानने के लिए वह शाम को घर पर फ़ोन करेगा। इस वक्त् हिन्दुस्तान में दिन का बारह- एक बजा होगा। यही सोचता वह वापिस लैब में मुड़ गया। रास्ते में श्रीकांत ने बताया कि घर जाकर बात कर लो। श्रीधर ने बुलाया है। उसने सोचा ज़रूर श्रीधर और जॉन्टी का फिर कोई झगड़ा हुआ है। हमेशा की तरह झगड़ा सुलझाने के लिए बुला रहा है। यह भी कोई बात हुई। महत्त्वपूर्ण काम करने के लिए वह लैब जा रहा है और ये लोग घटिया सी बात के लिए फ़ोन कर रहे हैं, काम ख़त्म करके ही जाना ठीक रहेगा, उसने सोचा था।

वह लैब पहुँचा, काम शुरू किया। पर

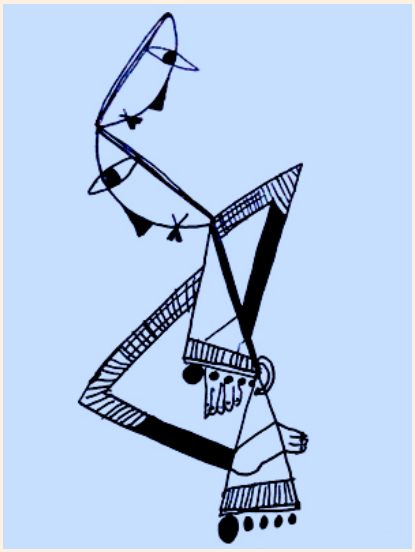

काम में मन नहीं लगा। कहीं कुछ अधूरा सा लग रहा था जो जुड़ नहीं पा रहा था। शायद ध्यान उखड़ गया था। ये श्रीधर और जॉन्टी भी कितना बेतुका लड़ते हैं। एक बिचैलिया चाहिए इन्हें, नहीं तो लड़-लड़ कर आधे हो जाएँगे। जो उनमें से किसी की खाना बनाने की बारी हो तो उस दिन सब को भूखा ही सोना पड़े। वह साइकिल उठा कर घर की ओर चल पड़ा। घर पहुँचा तो श्रीधर, जॉन्टी, श्रीकान्त चुपचाप बैठे थे। श्रीधर बोला 'डैडी का ऐक्सीडेंट हो गया है।' उसे लगा शायद विनय की बात हो रही है। उसका सीनियर था विनय। वह सबकी बहुत मदद करता था। नए लड़के-लड़कियों को रहने-बसने में आधा दायित्व स्वयं ही निभाता था। उसी के पास कार थी, तो एयरपोर्ट से लाने- ले जाने का भी उसी का ज़िम्मा था। सभी उसे डैडी कहते थे। एक दिन पहले वह हिन्दुस्तान गया था। शायद उसी के हवाई जहाज़ को कुछ हो गया था, फिर भी पूछा 'डैडी? कौन डैडी ?' 'तुम्हारे ब्रदर का फ़ोन आया था, तुम्हारे डैडी की डैथ हो गई है। उन्होंने फ़ोन नम्बर छोड़ा है, बात कर लो', श्रीकांत ने पास बैठाते हुए कन्धों को थपथपाते हुए कहा। वह चुपचाप उन्हें देखता रह गया। सब कुछ असली सा नहीं लगा। भीतर से कुछ अहसास भी नहीं हुआ। इस ख़बर की वास्तविकता ने छुआ ही नही। घर पर फ़ोन किया शायद भैया या चाचा ने उठाया। उनकी भर्राई हुई आवाज़ से यह बात सच लगी। वे फ़ोन पर रो रहे थे। पूरी बात को सुबकियों के कारण टुकड़ों-टुकड़ों में बताने का प्रयास कर रहे थे, पर उनसे बात करना ठीक से बन नहीं पड़ रहा था। मझले भाई से बात की। उसकी तमाम बातें सुन कर रूलाई सी आने लगी। माँ से बात करनी चाही, पर वे चुपचाप फ़ोन पकड़े रही और फूट-फूट कर रोती रहीं। वह तड़प कर बोल उठा 'मैं आ रहा हूँ'। वे जैसे-तैसे इतना ही कह पाई 'आजा'।

सारे काम ख़त्म करके जितना जल्दी हो सके चल देना था। पास में पैसे न थे। उसे हिन्दुस्तान से आए चार महीने भी नहीं हुए थे, पैसे जुड़ने का सवाल ही कहाँ था। वह बहुत चिंतित हो गया था। दोस्तों ने सौ-सौ डॉलर करके पैसा इकठ्ठा किया, टिकट ख़रीदा। खाना खिलाया, ऑरेन्ज जूस पिलाया। कॉलेज में प्रोफ़ेसर साहब से मिल कर उन्होंने पूरी बात बताई। वे बहुत भले इंसान निकले। विदेशों में भी परिवार के महत्त्व को समझा जाता है। उन्होंने कहा ''परिवार वाले पहले हैं। तुम्हें वहाँ जाना चाहिए। उसने चीनी दोस्त की मदद से कॉलेज के ज़रूरी काम निपटाए। कागज़ों पर हस्ताक्षर किए। सब काम पूरे करके बैग में दो चार कपड़े डाले और वे सब दोस्त उसके साथ एयरपोर्ट के लिए निकल गए।

श्रीकांत दूसरों के बारे में बहुत सोचता है वह ही बोला 'देख यहाँ तो सब हैं, पर हवाई जहाज़ में तुम अकेले होगे। ज़्यादा सोचना नहीं। अपना ध्यान रखना, कहीं तबियत घबराये तो आस-पास किसी से बात करने की कोशिश करना। पर उसे कुछ भी नहीं लग रहा था, दिमाग जैसे बिल्कुल ख़ाली हो गया था। सच तो यह था कि घर की या डैडी की कोई बात वह सोच नहीं रहा था, सोचने जैसा लग नहीं रहा था। अवचेतन मन में था कि डैडी हैं, जब दिल्ली एयरपोर्ट पर उतरूँगा, तो हमेशा की तरह वे तो मिलेंगे ही। मुस्कुरा कर गले लगाएँगे, पीठ थपथपाएँगे। इससे परे भी कुछ होगा सोचने में ही नहीं आ रहा था। अप्रत्यक्ष रूप से वह निश्चिंत था कि डैडी तो आएँगे ही। बस यों ही सोचते-सोचते उसने सफ़र काट लिया।

दिल्ली एयरपोर्ट पर मुँहबोली बहन व उसके पति मिले। दोनों उदास थे। वे तुरत-फुरत उसे बस स्टेशन ले गए। आख़िरी बस रवाना होने को थी। टिकट खरीदा, हाथ में नाश्ता थमाकर उन्होंने उसे विदा किया। रात

भर ऊँघता सुबह जयपुर पहुँचा। छोटा भाई व चाचा लेने आए थे। दोनों के चेहरे बहुत उतरे हुए थे। नज़रें रेगिस्तान थीं व गला रूआँसा था। एक भी बोल ठीक से नहीं निकल रहा था। चाचा ने देखते ही सीने से चिपका लिया। अब मृत्यु शब्द दिमाग में आने लगा, पर उसकी गहराई तक जाना और तकलीफ़देह अनुभव से गुज़रना नहीं हो पा रहा था। चाचा रो रहे थे, पर उसे एकाएक रोना नहीं आया।

घर तक पहुँचते-पहुँचते मानों डैडी साथ थे, उनकी बातें, एक्सीडेंट, अस्पताल में रहना, पाँच दिन ठीक-ठीक लगना। अचानक तबियत बिगड़ना, उनके चले जाने का सदमा भाई सिलसिलेवार सब बता रहा था और उसे लग रहा था कि जैसे आँखों के सामने सब देख रहा हो। घर आ गया। वह सीढ़ियाँ पार कर ड्रॉइगरूम में पहुँचा। बड़ा भाई मिला। सिर घुटा हुआ था, अजीब सा लगा। भाई ने प्यार से सीने से लगाया। डैडी की तस्वीर थी। उसने नमस्ते के लिए हाथ जोड़ दिए। जैसे वे प्रत्यक्ष हो। उनकी मुस्कराहट ने आश्वस्त किया। सामने माँ बैठी थी। उसे वे एकदम बूढ़ी प्रतीत हुई। सुना था, दु:ख में एक रात में ही लोग बूढ़े हो जाते हैं। माँ वैसी ही लगी, बिना बिंदी का सुनसान सा चेहरा, पनीली आँखें। उसने पाँव छुए, माँ ने सिर पर हाथ फेरा, छू-छू कर देखती रहीं। डैडी की बात करती रहीं। बात-बात पर रोती रहीं। उसने माँ को इतना रोते कभी नहीं देखा था। सब जने अनजाने से लग रहे थे। जैसे हमेशा लगते थे, वैसे नहीं लग रहे, न व्यवहार में, न ही दिखने में।

घर में मेहमानों से भरा था। उसे लगा डैडी कहीं चले गए हैं। उसकी आँखें उन्हें ढूँढ़ रहीं थी, उनके स्पर्श के लिए मन अकुला रहा था। डैडी की अलमारी खोलकर देखी। करीने से तहा कर रखे कपड़े डैडी की रुचि दर्शा रहे थे। हैंगर पर टँगे सूट, घूमने जाते वक़्त पहनी गई टी-शर्ट, शायद किसी शादी के समारोह में पहनी गई ड्रेस थी, जिसमें से सैंट की हल्की सी ख़ुशबू आ रही थी, बैल्ट, टाई और रूमालों का डिब्बा, नीचे के शैल्फ़ में जूते-चप्पल, ड्रार में रखा चश्मा, घड़ी, पर्स, शेविंग का सामान, शीशा, पैन, डायरी सब उनकी उपस्थिति का आभास करा रहे थे।

तेरह दिन तक चलने वाला कार्यक्रम अतिव्यस्त था। मेहमानों से भरे घर में स्वयं को तलाशता उसका मन डैडी का सहारा खोजता ही रहा था। भाई-बहन-भाभियाँ, माँ- चाचा-मौसी और सभी सामान्य कहाँ लग रहे थे। तेरहवीं के बाद एक-एक कर सब मेहमान विदा हो गए। माँ हिलक-हिलक कर रोती तो मन तड़प सा जाता। वे कहती, सब आसपास होते हैं, तू हर बार कहाँ चला जाता है? 'वह उन्हें क्या बताता ? सबने डैडी का अंतिम संस्कार होते देखा है। सब डैडी को तलाशते हैं, कमी महसूस होने पर रोते हैं, पर वह उन्हें खो देने की उस स्थिति में अपने को नहीं पाता है उसे इतना सा लगता है कि डैडी किसी कमरे में होंगे।

जब सब चले गए, केवल परिवार के लोग ही रह गए, तब लगने लगा था कि परिवार का कोई एक सदस्य कम है। कहीं चला गया है, ऐसे ही एक अभाव में जाने कब हफ़्ता भर निकल गया। पता ही नहीं चला और विदेश वापिस जाने का समय भी आ गया। पूजा में तथा डैडी की तस्वीर को ढोक दी। डैडी तस्वीर में मुस्करा रहे थे। आश्वस्त कर रहे थे। दुलरा रहे थे। उनकी मुस्कुराहट एक जीवित सच लग रही थी। आँखें मूद कर मन ही मन उन्हें प्रणाम किया। एक धैर्य भीतर तक संजो लेने का प्रयास किया। दोनों भाई व माँ दिल्ली तक छोड़ने गए। जयपुर से दिल्ली के रास्ते में माँ से ढेर सी बातें कीं, डैडी की बातें, रोज़मर्रा की काम की बातें, भाई की हनुमान चलीसा सदा जेब में रखने की सलाह, पूजा में ढोक देने की सलाह। माँ ने अपनी बसन्त की एक कविता सुनाई। उसने माँ से उस कविता को अपनी डायरी में लिख देने का आग्रह किया। उसे कविता बहुत अच्छी लगी और उससे भी अच्छा लगा था कविता सुनाते वक्त माँ का मुस्कुराना। भाई ने कहा ''तुम्हारा लम्बा सफ़र है थोड़ा सो लो तो अच्छा रहेगा''। माँ ने भी लाड़ से सिर सहलाया। वह आँखें मूद कर अधलेटा सा हो गया। दिल फिर डैडी के पास चला गया। उनकी मुस्कुराहट के बारे में सोचता-सोचता वह सो गया। जागा तो गाड़ी दिल्ली के रास्ते में ही थी। बड़े भाई ने एक बहुत ही छोटी सी हनुमान चालीसा दी। हर वक्त साथ रखने के लिए कहा। कानों में डैडी की हनुमान चालीसा पढ़ते हुए आवाज़ गूँजने लगी। आँखों में उनकी शक्ल तैर गई, माँ फिर कुछ याद करके रोने लगी, उसने माँ को बाहों में घेर लिया। ''आप अस्पताल की बातें याद मत किया करिए, उससे आप को दु:ख होता है। अपने जीवन के अच्छे - अच्छे क्षण याद कीजिए। दु:ख कम होगा'' माँ ने स्वीकृति में सिर हिलाया था।

रैस्ट हाऊस में थोड़ी ही देर भाइयों और माँ से बातचीत हो पाई। रात को उड़ान थी इसलिए सभी आराम करने व थोड़ा सो लेने की सलाह दे रहे थे। अब जाना है, सब यहीं रह जाएँगे। पिछली बार डैडी भी छोड़ने आए थे, तो उसके आराम का, खाने का, पैसों का कितना ध्यान रख रहे थे। उसे विदेश में कोई तकलीफ़ न हो। वे भरसक प्रयास कर रहे थे। कितने सारे डॉलर भी दिए थे। उन्हें चिंता थी कि जाते ही स्कॉलरशिप नहीं मिलेगी कम से कम महीने भर के पैसे तो हों पास में ख़र्च के लिए। कितना ध्यान था उन्हें। यही सब सोचता वह सो गया।

रात को एयरपोर्ट में भाइयों ने सीने से लगा कर विदा किया। पीठ थपथपाई, डैडी का पीठ थपथपाना याद आ गया। शायद परिवार के सदस्यों के व्यवहार का आपस में मिलना जैनेटिक होता है। माँ ने सिर सहलाया और ढेर सी हिदायतें दीं। पहुँचते ही फ़ोन करने को कहा। सफ़र शुरू हो गया। थका देने वाली लम्बी यात्रा पूरी कर वह डेविस पहुँचा। दोस्त उसे लेने आए थे। उन्हें देखते ही महसूस हुआ कि वह अपने जीवन का एक बेशकीमती भाग खोकर आया है। श्रीकांत ने आगे बढ़ कर कुछ कहना चाहा, पर वह तो उसका हाथ थाम कर उसके कंधे से जा लगा और पहली बार बहुत दु:ख महसूस करता हुआ ज़ोर से रो दिया। आते-जाते सभी यात्री देख रहे थे। सान्त्वना देते दोस्त समझाने लगे, पर वह डैडी में डूबा चुपचाप रो रहा था। डैडी के जाने का दु:ख अब समझ में आ गया था।

घर में, अपने कमरे में पहुँच कर बहुत अकेलापन लगा। कहाँ रिश्तेदारों से भरा घर, डैडी की बातें, उनकी तकलीफ़ से लेकर उनकी मृत्यु तक की सविस्तार बातों का सबके द्वारा अपनी-अपनी तरह दोहराना,

एक सतत शोर का माहौल और कहाँ अब यह चुप्पी, ख़ामोशी। लगता था, अब तो कोई काम ही नहीं है करने को, माँ की कविता और डैडी का फ़ोटो उसने अपनी स्टडी-टेबल के पीछे वाली दीवार पर लगा लिया। लगा, मानों कमरे का यह कोना जी उठा हो।

दिनचर्या धीरे-धीरे ढर्रे पर चलने लगी। डैडी के बारे सोचते रहना उस दिनचर्या का आधार बन गया। फ़ोटो में मुस्कराते हुए डैडी नज़दीक लगते। दिन-रात हिन्दुस्तान के सपने आते। सपने में कोई शादी-ब्याह जैसा समारोह दिखता, उन सपनों में डैडी ज़रूर होते, इधर-उधर आते- जाते, कभी काम करते दिखाई देते। हर बार, हर रात तकरीबन एक जैसा ही सपना आता। डैडी का दिखाई देना उसे बहुत अच्छा लगता। वह डायरी लिखने लगा। बचपन से अब तक की ढेरों बातें, ढेरों विवरण, ढेरों भावनाएँ समेटे वह डायरी जैसे मन का खुला कोना बन गई। पढ़ाई के थका देने वाले समय के बाद उस डायरी के पन्ने डैडी का पर्याय बन जाते। मन घर पहुँच जाता। सबके बीच हो जाता। अकेले कमरे में ही स्वप्निल सा हिन्दुस्तान वाला घर बस जाता। डैडी ने वह डायरी उसे बम्बई के हॉस्टल में दी थी, वह उसका कीमती धन थी।

उसे याद आया जब बम्बई में कॉलिज का पहला दिन था। नई जगह, हॉस्टल में रैगिंग का डर था। सब कुछ अजाना और विचलित करने वाला था। वह कॉलिज के बाद हॉस्टल की ओर चला। अन्दर कहीं दुःख था। महसूस हो रहा था कि डैडी जयपुर चले गए होगें। ऐसा सोचना असुविधाजनक लग रहा था। उसे असुरक्षा महसूस हो रही थी, जो कमरा उसे दिया गया था, वह गैलरी के बीचों-बीच था। उसने दरवाज़ा खोला। विश्वास था कि वहाँ सब कुछ अजनबी लगेगा, पर जैसे ही कमरे में पाँव रखा उसने पाया कि उसके कपड़े करीने से अलमारी में टँगे हुए थे। बाकी सारा सामान कमरे में एक तरफ़ रखा था। बिस्तर पर जानी-पहचानी चादर बिछी हुई थी। उसे घर का सा आभास होने लगा था। तकिये के सहारे एक डायरी रखी थी। उसे याद आया, डैडी ने कहा था कि वे एक डायरी में सबके फ़ोन नम्बर लिख कर छोड़ देगें। उसने डायरी खोली। पहले पन्ने पर एक छोटा सा वाक्य लिखा था ''प्यार व आशीर्वाद के साथ, डैडी'' पढ़ते ही भीतर तक एक सुरक्षा व स्नेह की गर्मी महसूस हुई थी। उसे लगा था कि डैडी कहीं आसपास ही है। अगले चार वर्षों तक वह डायरी उसके लिए अनमोल ख़ज़ाना थी। उसने उस डायरी को अब तक सौभाग्य सूचक चिह्न की तरह सम्भाल कर रखा था। वह उसके लिए बहुत कुछ थी। डैडी के बेइन्तहा अनकहे प्यार का प्रतीक। अपने छोटे-छोटे कार्यों, छोटी-छोटी चिन्ता से, छोटे-छोटे दुलार से कितना अधिक देते थे डैडी। यह सब वह कभी भुला नहीं पाया।

धीरे-धीरे यों ही करते-करते अब कैलिफोर्निया में दो साल पूरे होने जा रहे थे। पढ़ाई समाप्त हो रही थी। कहीं नौकरी ढूँढ़ने जैसा लगने लगा, उसे घबराहट भी थी। अमरीका में नौकरी के अवसर कम हो चले थे। वह यह बात हिन्दुस्तान में किसी से कहता तो कोई विश्वास नहीं करता, पर यह कितना बड़ा सच था। अमरीका में सॉफ़्टवेयर के क्षेत्र में मन्दी चल रही थी, इसे अमरीका में रहकर ही जाना जा सकता था। यदि तलाश की जाए तो अच्छी नौकरियों के अवसर भी मिल ही जाते। साथ ही डर भी था कि कहीं इतना पढ़ने के बाद अच्छी नौकरी ना मिल पाई तो? पढ़ाई के हिसाब से लगता था कि अमरीका में रहना और भाग्य आजमाना ठीक होगा, पर अपने मन का हिसाब हिन्दुस्तान बुलाता था। पशोपेश में दिन गुज़र रहे थे। माँ कुछ-कुछ अंतराल से फ़ोन कर रही थीं। ढेर सी बातें करती थीं। हाल-चाल जानना चाहती थीं, पर कुछ पूछना चाहती थीं जो हरबार रह ही जाता था। वह जान रहा था उनकी बैचेनी। वे अपने लाड़ले को अपने नज़दीक देखना चाहती थीं, पर, इतनी पढ़ाई करके के कोई निराशा उसके बेटे को तोड़ दे, इसीलिए वे कुछ न कहती थी।

उसने सोच समझ कर दो- चार कम्पनियों में नौकरी के लिए आवेदन कर दिया। डेविस में अभी कुछ काम शेष रहता था, उसे पूरा करना ज़रूरी था। वह उसी में जुट गया। महीने भर बाद जो ऑफ़र आए, उनमें से एक लॉसएंजिलस की यूनिवर्सिटी का था और दूसरा न्यूयार्क की एक कम्पनी का, जिसका हैड ऑफिस तो अमरीका में था, पर कार्य के लिए क्षेत्र हिन्दुस्तान में था, बैंगलोर।

बहुत सोचने पर दूसरा ऑफ़र ठीक लगा। तनख़्वाह हिन्दुस्तान के हिसाब से थी, पर पहली नौकरी के मुकाबले कम थी। चल जाएगा। ठीक-ठीक चल जाएगा। श्रीधर, जॉन्टी, श्रीकांत, विनय सब खुश हुए, पर उनकी सलाहें अलग-अलग थीं। कोई पहली नौकरी के पक्ष में था तो कोई दूसरी के। उसे ही निर्णय लेना था।

उस रात वह सोया तो कोई सपना नहीं आया, बल्कि नींद ही नहीं आई। करवटें बदलते-बदलते उसे बोर लगने लगा। न जाने कब उनींदा सा हो गया। उसे लगा कि जयपुर के लम्बे कमरे में डैडी पलंग पर लेटे थे। उनसे सटे-चिपटे तीनों भाई भी लेटे थे। कोई बात कह कर डैडी ज़ोर से हँसने लगे। उनसे चिपटे तीनों भाई भी उनके शरीर के साथ हिलने लगे। फिर तो जैसे हँसी का तूफ़ान आ गया। वह उनके पेट से सटा खूब हँसा। डैडी ने कहा ''चल निशू पाँव दबा दे''। वह डगडगाता सा उनके पंजों और एड़ियों को चल-चल कर दबाने लगा, फिर न जाने कैसे वह छोटा हो गया, बिल्कुल छोटा सा, छः सात महीने जितना। डैडी ने उसे गोद में उठा लिया, सिर पर हाथ फेरा, पीठ थपथपाई, गालों को चूम लिया। जाने कैसे एक धुँआँ सा भरने लगा। उसे डैडी दिखाई नहीं दिए। उसने बाँहे फैलाईं। उन्हें ढूँढ़ना चाहा, पर अब वे नहीं थे। उनकी आवाज़ ही सुनाई दे रही ''निशू-निशू'' वह जाग गया। सामने मेज़ पर डैडी की तस्वीर रखी थी। वे मुस्कुरा रहे थे, जैसे कह रहे हों ''मैं तो जानता हूँ तुम्हारी समस्याओं का हल। मुझे सब मालूम है कि क्या घटने वाला है, पर तुम भी स्वंय अपनी समस्या हल करके देखो। बड़ा आसान लगेगा''।

वह टहलता हुआ बाहर के कमरे तक आ गया। खिड़की के शीशों के पीछे आसमान था, तारे थे। वह डैडी को किसी तारे में खोजने की कोशिश करने लगा। उसने मन में बैंगलोर वाली नौकरी ले लेने का इरादा पक्का कर लिया। उसने सीने में भटकती रुलाई को हथेलियों में थाम लिया था। क्षितिज मुट्ठियों में कैद हो गया था।

***

मी टू

ज़हीर कुरेशी

अब तो उस औरत की उम्र 50 को भी पार कर चुकी है। आज की तारीख में वह ढेर सारी बीमारियों की खान है- थायराइड, शुगर, हाई ब्लड प्रेशर। ये तो मुझे मालूम हैं, इनके अलावा भी बहुत-सी बीमारियाँ हो सकती हैं। उसकी मेडीकल देख-भाल के लिए 'सरोज विला' की दूसरी मंज़िल का एक हॉल अस्पताल की तरह सज़ा हुआ है। जहाँ मालकिन सरोज का ही नहीं, घर के किसी भी सदस्य का चेक-अप... प्राथमिक इलाज हो सकता है।

अब तो मालकिन थुल-थुल हो गई हैं। उनके ब्लाउज़ से नीचे और कमर से थोड़े ऊपर अतिरिक्त माँस लटकता दिखाई देने लगा है। फिगर बिगड़ रहा है, उनको भी मालूम है। लेकिन, अब मालकिन फिटनेस पर अधिक ध्यान नहीं देतीं। पहले सुबह उठ कर रेग्यूलर योगा करती थीं, कैम्पस के अंदर दौड़ कर अपनी हवेली-नुमा सरोज विला के पाँच चक्कर भी लगाती थीं। मैंने जिस समय मालकिन को पहली बार देखा था, उस समय मेरी उम्र चौदह वर्ष थी- अनाथाश्रम के रजिस्टर में तो चौदह ही दर्ज थी। उस समय, मालकिन किसी सिने-तारिका की तरह लगती थीं। एक-दो बार मालिक और मालकिन अनाथाश्रम आए, मैनेजर ने मुझे उनके सामने पेश किया। फिर बात आई-गई हो गई।

लगभग चार महीने बाद, मालिक और मालकिन की कार फिर अनाथाश्रम के सामने आ कर रुकी। मैनेजर ने मुझे ऑफिस में बुलाया और कहा- किशन, तुम्हें अग्रवाल साहब ने गोद ले लिया है। सारी कानूनी कार्यवाही पूरी कर ली गई है। बेटा, अब तुम अनाथाश्रम में नहीं रहोगे। तुम्हें एक माँ और एक पिता मिल गया है। तुम अब अच्छे स्कूल में पढ़ोगे, तुम्हारा भविष्य सँवर जाएगा। मैंने अचकचा कर अग्रवाल दम्पति की ओर देखा। दोनों ने आश्वस्त किया कि तुम्हारी पढ़ाई जारी रखी जाएगी, तुम सरोज विला में घर के सदस्य की तरह रहोगे। मैनेजर साहब खड़े हो गए, उन्होंने मेरे सिर पर हाथ रख कर आशीर्वाद दिया।

उसी दिन, थोड़ी भयभीत मन:स्थिति में, मैं मालिक और मालकिन के साथ, सरोज विला आ गया। जहाँ महाराज (रसोइया), रहीम चच्चा (चौकीदार) और दो बच्चों ने मेरे आगमन पर आश्चर्य-मिश्रित खुशी जताई। मालकिन की लड़की मुझ से एक-दो साल बड़ी होगी, उसने होंठों को गोल बनाते हुए माँ से पूछा- व्हाय लेकिन, मालकिन का लड़का, जो मुझ से 4-5 साल छोटा था, उसने कोई प्रतिक्रिया व्यक्त नहीं की। सरोज विला के ग्राउण्ड फ्लोर का एक परित्यक्त-सा कोने वाला कमरा मुझे अलॉट कर दिया गया, जिसमें एक रोशनदान और गार्डन की ओर खुलने वाली छोटी-सी खिड़की थी। कमरा आठ बाई आठ से बड़ा नहीं था, शायद स्टोर रूम के रूप में उपयोग हो रहा था। अनाथाश्रम की तुलना में, मेरे जीवन का पहला परिवर्तन तो यह था कि मुझे स्वतंत्र और निजी कमरा मिल गया- जिसमें एक बेड, एक टेबिल-कुर्सी, नाइट लैम्प के अलावा पानी का जग, दो ग्लास, एक छोटा थर्मस जैसी आवश्यक सुविधाएँ उपलब्ध थीं। मेरे लिए बाथरूम और टॉयलेट कैंपस में बाहर स्थित था, जिसे कभी-कभार चौकीदार भी यूज़ कर लेता था।

शीघ्र ही, मालकिन ने भाग-दौड़ करके सरोज विला से एक किलो मीटर दूर सैण्ट मेरी स्कूल की कक्षा आठ में मेरा दाखिला करा दिया। ड्रेस, बस्ता, किताबें, ड्राइंग बॉक्स, टिफिन बॉक्स सभी मेरी सेवा में हाज़िर थे। मैं अपने इस नए और व्यवस्थित जीवन से बहुत अभिभूत था। रात दस बजे सोते समय रोज़ ईश्वर को धन्यवाद देता- जिसने मेरा जीवन बदल दिया था। प्रारंभिक तौर पर सरोज विला में मेरा इतना भर काम था कि ब्रेक फास्ट, लंच, डिनर के समय डायनिंग टेबिल पर भोजन लगाना, महाराज से सामंजस्य बनाए रखते हुए गरमा-गरम सब्ज़ी-रोटी परोसना। घर के सभी सदस्यों के खाने के बाद, उसी डायनिंग टेबिल पर खुद भी नाश्ता और दोनों समय का भोजन कर लेना। मालिक, मालकिन, कुलिश और सुमारा के घर के अंदर और बाहर के छोटे-मोटे काम कर देना। मालकिन की आवाज़ सुनने के लिए कानों को हमेशा सजग रखना।

संपर्क: 108, त्रिलोचन टावर, संगम सिनेमा के सामने, गुरुबक्श की तलैया, पो.ऑ. जीपीओ, भोपाल-462001 (म.प्र.)
मोबाइल : 09425790565
फ़ोन: 0755-2740081
ई-मेल: poetzaheerqureshi@gmail.com

मालकिन का बेटा कुलिश मुझे पसंद करता था, जबकि उनकी बेटी सुमारा हुक्म पर हुक्म देती रहती थी। मालिक घर में कम रहते थे, सरोज विला पर मालकिन का ही राज था। लेकिन, मालकिन सरोज रहीम चच्चा, महाराज से ले कर मुझ तक सभी से अच्छी तरह पेश आती थीं। सिर्फ नकचढ़ी सुमारा पर ही कभी-कभार उन्हें गुस्सा होते देखा जाता था। अगर समय पर ड्रायवर न आए तो मालकिन स्वयं कार चला कर बाहर के काम कर लेतीं थीं। कुलिश और सुमारा के स्कूलों के लिए बसें पहले से ही लगी थीं। मैं पैदल अपने स्कूल चला जाता था।

बहुत संकोच के साथ एक दिन मैंने रहीम चच्चा से पूछा कि मालिक काम क्या करते हैं। रहीम चच्चा ने हँसते हुए समझाया- मालिक बड़े नेता हैं। फूल वाली पार्टी के ज़िला अध्यक्ष हैं। नवंबर में होने वाले चुनाव में एम.एल.ए. का टिकिट मिल सकता है। अब तक मैं दसवीं की बोर्ड परीक्षा पास करके ग्यारहवीं कक्षा में आ चुका था। सैण्ट मेरी स्कूल मेरे परफॉर्मेंस से खुश था, मैं अपनी कक्षा में पढ़ाई में अव्वल मान लिया गया था। उधर सुमारा मुझसे एक क्लास आगे बारहवीं में थी, लेकिन, उसकी रुचि पढ़ाई से अधिक सजने-सँवरने और सिंगिंग में थी। कुलिश अब छठवीं कक्षा पार करने के बाद सातवीं में आ गया था। घर का माहौल बहुत पॉज़ीटिव था।

नवंबर में मालिक को फूल वाली पार्टी ने सतना जिले से विधायक का टिकिट दे दिया। मालिक के साथ मालकिन भी चुनाव प्रचार में जुट गईं। एक दिन मालकिन ने मुझे बुला कर कहा- किशन, तुम अब बड़े हो गए हो। जब मैं घर में न रहूँ, तुम सारे घर की देख-भाल करोगे। महाराज, रहीम, कुलिश और सुमारा सभी का चार्ज अब तुम पर रहेगा। मैं रात में जब भी आऊँ, पूरे दिन भर की रिपोर्ट तुम मुझे दोगे।

उस दिन के बाद, मैं घर में अपने आप को और अधिक महत्त्वपूर्ण समझने लगा। घर में सिर्फ सुमारा ही मेरी बातों को नज़र-अंदाज़ करती थी, कई बार मम्मी की तरह मुझे भी डाँट देती थी। विधान सभा चुनाव में फूल वाली पार्टी के टिकिट पर मालिक एम.एल.ए. का चुनाव जीत गए। शहर में मालिक के सम्मान में बहुत बड़ा जश्न हुआ। उसके बाद, मालिक और मालकिन भोपाल चले गए। चार दिन बाद, जब मालकिन भोपाल से लौट कर आईं तो बहुत खुश थीं। मैंने पानी का गिलास पकड़ाते हुए जब उनकी ओर देखा तो बोलीं किशन, तुम्हारे मालिक राज्य सरकार में मंत्री बनने वाले हैं। मैंने मालकिन को बधाई दी तो अनायास उठकर उन्होंने मेरा माथा चूम लिया। मालकिन के इस व्यवहार से मैं चकित भी हुआ और मेरा सारा शरीर झनझना उठा। मैं अपने कमरे में जा कर लेट गया और अग्रवाल दम्पति के कारण अपने बदले हुए जीवन के विषय में सोचता रहा।

दो दिन बाद, अखबार पढ़ते हुए रहीम चच्चा ने मुझे बताया- अपने साहब मध्य-प्रदेश सरकार में मंत्री बन रहे हैं, शायद उन्हें वन एवं पर्यावरण दिया जाएगा। उसी दिन, मालकिन ने मुझ से कहा- किशन, तीन दिन बाद शपथ-ग्रहण है। हम लोगों के साथ तुम भी भोपाल चल रहे हो!

मैंने कहा- मालकिन, मैं भोपाल जा कर क्या करूँगा! सतना में मुझे घर की देख-भाल भी तो करनी है।

मालकिन ने मेरी एक न सुनी। परिवार के साथ मैं भी भोपाल गया, शपथ-ग्रहण समारोह हुआ, मालिक राज्य सरकार में मंत्री बन गए। मालिक को छोड़ कर हम लोग सतना लौट आए। मालिक के मंत्री बनने के बाद, सरोज विला पर सरकारी सुरक्षा के लिए दो गार्ड तैनात कर दिए गए। मालकिन की व्यस्तता बढ़ गई। सतना में होने वाले अनेक सामाजिक और राजनैतिक तरह के उत्सवों में मालकिन सरोज अग्रवाल को चेयर पर्सन के रूप में बुलाया जाने लगा।

बीते तीन सालों में, मैं इण्टरमीडिएट बोर्ड टॉप करते हुए कॉलेज के बी.ए. सैकण्ड ईयर में पहुँच गया। सुमारा सैकण्ड डिजीवन में पास हो कर बी.एस-सी. में प्रवेश कर गई, लेकिन, सारेगामापा के प्रतिभागी के रूप में सिलेक्ट हो कर उसे मुँबई जाना पड़ा, साथ में उसकी मौसी गई।

अब मालिक कभी-कभार ही भोपाल से सतना आते थे। मालिक के हिस्से के सारे सामाजिक काम भी मालकिन को ही करने पड़ते थे। उनके हर काम में मैं उनका मददगार रहता था। मालकिन बहुत व्यस्त, थकी-थकी और चिढ़चिढ़ी-सी होती जा रही थीं। एक दिन मालिक का फ़ोन आया, गाँव में सतीश की लड़की की शादी है, दस लाख एमाउण्ट सहित गाँव जाना है, शादी में भाभी का रोल अदा करना है, मालिक नहीं आ पाएँगे।

मालिक के फ़ोन काल के बाद, पहले तो मालकिन बहुत बड़बड़ाईं, फिर मेरे साथ बैंक गईं। उसके बाद, हम लोग कार से गाँव में शादी के लिए रवाना हुए। गाँव पहुँचते ही, मालकिन और उनके परिवार को सतीश चाचा ने हाथों-हाथ लिया। मुझे गाँव में किसी ने ज़्यादा भाव नहीं दिया। वहाँ मुझे भोजन के लिए पूछा झुनिया ने, जो सतीश चाचा के हलवाहे हलकू की बेटी थी। भोजन करते हुए मैंने उसके बारे में जानना चाहा तो झुनिया ने बताया- दसवीं क्लास में पढ़ती हूँ। माँ शादी करना चाहती हैं। मैं डॉक्टर बनना चाहती हूँ। मैंने झुनिया को पढ़ने के लिए प्रोत्साहित किया, कहा- अगर माँ जबरन शादी करे तो मेरी मालकिन को बताना। मालकिन का नम्बर भी दिया।

शादी से लौटने के बाद, गाँव के पचीसों लोगों में मुझे केवल झुनिया ही याद रह गई। पन्द्रह-सोलह साल की भोली, सुन्दर, लेकिन समझदार लड़की। एक दिन अपने कमरे में पलंग पर लेटे-लेटे सोचता रहा- पता नहीं झुनिया का मुझको लेकर क्या विचार होगा।

दो साल और बीत गए। अब मैं बाईस साल का हो चुका था और स्नातकोत्तर महाविद्यालय, सतना के एम.ए. (समाज शास्त्र) प्रथम वर्ष का होनहार छात्र माना जाता था। पाँच फीट आठ इंच कद, नियमित व्यायाम और संतुलित भोजन ने मेरे नवयुवा व्यक्तित्व में चार चाँद लगा दिए थे। मालकिन के साथ एक बार और मुझे उनके गाँव जाना पड़ा। मालकिन को तो सतीश चाचा के परिवार ने लपक लिया, मेरी मेहमान-नवाज़ी हलकू के परिवार के हिस्से में आई। झुनिया एक बार फिर मुझे देख कर बहुत खुश हुई। अठारह-उन्नीस साल की झुनिया अब कच्ची कली से आगे खिल कर जुही का खूबसूरत फूल बन चुकी थी। चाचा जी के ही एक दूरस्थ कमरे में मेरा बिस्तर लगा दिया गया। झुनिया रात का भोजन ले कर आई तो उसके पीछे उसकी माँ भी चली आई। मैंने खाना खाना शुरू किया तो बुढ़िया

ने शादी-राग छेड़ दिया। मैंने झुनिया की माँ से कहा- अभी इसे पढ़ने दीजिए। इसकी शादी तो हो ही जाएगी।

बुढ़िया ने सवाल किया- इस अभागी से शादी करेगा कौन?

मैंने बुढ़िया को आश्वस्त करते हुए कहा, मैं! अगर झुनिया मेरी पढ़ाई पूरी होने तक प्रतीक्षा कर सके।

झुनिया ने तपाक से उत्तर दिया- 'कर लूँगी।'

सुबह होते ही, अगले दिन मैं और मालकिन सतना लौट आए। सतना लौट कर, अपने कमरे में मालकिन चुपचाप पड़ी थीं और बहुत रो रही थीं। कुलिश ने मुझसे माँ को चुप करने को कहा। मैं डरते-डरते मालकिन के कमरे में घुसा, रोने का कारण पूछा तो मालकिन ने अपना मोबाइल मुझे थमा दिया। मैंने मोबाइल खोला तो मुझे लगातार चार दृश्य नज़र आए- जिनमें मालिक किसी पराई औरत के साथ आपत्ति-जनक स्थिति में थे। फ़ोटोज़ देख कर, मैं भी सन्न रह गया, मैंने सान्त्वना में मालकिन की पीठ पर हाथ रख दिया। फिर तुरंत अपनी भूल सुधार करते हुए अपने कमरे में लौट आया।

इस घटना के बाद, घर का माहौल बहुत तनावपूर्ण हो गया। अब मालकिन ने सतना के किसी भी समारोह में आना-जाना बंद कर दिया। सुमारा सिंगिंग को अपना कैरियर बनाने के लिए मुँबई में ही स्ट्रगल कर रही थी। कुलिश सतना में था, जो समझ नहीं पा रहा था कि माँ इतनी परेशान क्यों है? वह इस गुत्थी को सुलझाने में मेरी मदद चाहता था। मैं खुद नहीं समझ पा रहा था कि क्या करूँ। इसी माहौल में एक महीना और बीत गया। एक दिन मैंने महसूस किया कि मालकिन अलस्सुबह उठ गईं हैं। सुबह उठ कर उन्होंने योगा किया, सरोज विला के तीन चक्कर लगाए। एक अर्से बाद, मालकिन को इस तरह के मूड में देख कर मुझे बहुत अच्छा लगा।

रोज़ की तरह, सुबह 8.00 बजे मैं कॉलेज चला गया। दो बजे लौटा, खाना खाया और अपने कमरे में आराम करने लगा। थोड़ी झपकी-सी लगी थी कि रहीम चच्चा ने द्वार खटखटाया, बोले, सैकण्ड फ्लोर पर झाड़ू ले कर मालकिन ने तुम्हें बुलाया है।

मैंने झटपट मुँह पर पानी के छींटे मारे, कपड़े पहने, झाड़ू ली और सैकण्ड फ्लोर पर पहुँच गया। मालकिन सुमारा के कमरे में थीं, बोली, झाड़ू फेंको और मेरी पीठ पर बाम मल दो, पीठ सुबह से बहुत पेन कर रही है।

मैंने कहा- 'नर्स को फ़ोन करके बुला लेते हैं।' मैं अपने मोबाइल में नर्स का नम्बर ढूँढ़ने लगा।

मालकिन ने थोड़ी ऊँची आवाज़ में कहा- 'मैंने तुम से कहा है, पीठ पर बाम मलो!'

मालकिन को पहली बार मैंने इस तरह व्यवहार करते हुए देखा। मैं पीठ पर बाम मलने के लिए खुद को थोड़ा-थोड़ा तैयार कर ही रहा था, तब तक मालकिन ने रूम लॉक कर दिया। मुझे समझ नहीं आ रहा था कि परिस्थिति से कैसे निपटूँ। मालकिन ने मुझे एक लोशन दिया, कहा, पूरी बॉडी पर मालिश करो।

मैंने मालकिन से कहा, 'आपको हमेशा मैंने अपनी माँ की तरह देखा है। यूँ भी आप मुझ से उम्र में काफी बड़ी हैं।'

मालकिन ढिठाई से बोलीं, 'तुमसे कितनी बड़ी हूँ- चौदस-पन्द्रह साल? तुम मुझे माँ की तरह नहीं, भाभी की तरह देखो। देवर का तो भाभी पर आधा अधिकार होता ही है।'

अब मैं समझ चुका था, मालकिन का कहा मान लेने में ही मेरी भलाई है। मैंने अपना पूरा संकोच त्याग कर लोशन से मालकिन के पूरे शरीर पर मालिश की। मालिश करते-करते मेरा भी रक्त-संचार बढ़ने लगा। फिर अनाड़ी पुरुष की तरह मैं वैसा-वैसा करता गया, जैसा वासना के आवेग में मालकिन ने मुझसे चाहा। एक प्रकार से, सरोज विला में पहली बार किसी स्त्री द्वारा मर्द की इज़्ज़त लूटी गई।

सैकण्ड फ्लोर से अपने कमरे में लौट कर मैं भी बहुत देर तक रोता रहा। मुझे समझ नहीं आ रहा था कि आगे मैं क्या करूँ। सबसे पहला विचार आया कि मैं सरोज विला छोड़ कर फिर अनाथाश्रम लौट जाऊँ। लेकिन, जिस तरह का सुविधा-जनक जीवन जीने का मैं आदी हो गया था, उसमें मैं यह हिम्मत नहीं जुटा पाया।

फिर मेरे सामने झुनिया को दिया हुआ वचन भी था। उसे तभी पूरा किया जा सकता था, जब मैं अपने पैरों पर खड़ा हो जाऊँ। यह बिना मालकिन की मदद पूरा होना मुश्किल लग रहा था।

इस प्रकार, मैं मैडम सरोज अग्रवाल का सेक्स स्लेव बन गया। मालकिन जब भी एकाँत और सुरक्षित समय देखतीं, मुझे सुमारा के कमरे में बुला लेतीं। सुख-सेज पर मालकिन की संतुष्टि के बाद, एक दिन मैंने उनसे पूछ ही लिया, मालिक से अपने इस प्रतिशोध के लिए आपने मुझे ही क्यों चुना?

मालकिन बोलीं, क्योंकि तुम ही सबसे सुरक्षित मर्द हो। मैं अपनी भी बदनामी नहीं चाहती और तुम्हारी भी नहीं। मैं तुम्हारे मालिक को जवाब देना चाहती हूँ कि औरत भी मर्द जैसे कारनामे कर सकती है!

पूरे पाँच साल तक मैं मैडम सरोज का सेक्स स्लेव बना रहा। इस बीच समय और परिस्थिति ने मुझे बहुत कुछ सिखा दिया। मानसिक रूप से कई बार मैं कमज़ोर पड़ा, फिर मैंने अपने आप को सम्हाला।

झुनिया ने पाँच साल तक मेरा इंतज़ार किया। हलकू और उसकी पत्नी ने उसको खूब प्रताड़ित किया। लेकिन, अंत में, हम दोनों की लगन काम आई। समाज शास्त्र में एम.ए. करने के बाद मेरी दिन-रात की मेहनत से पीएॅच.डी. भी पूरी हुई! अग्रवाल दम्पति के प्रभाव से मैंने स्टेट पी.एस.सी. क्रॉस की और शासकीय महाविद्यालय, शाजापुर में सहायक प्राध्यापक के पद पर नियुक्त हुआ।

शाजापुर में व्यवस्थित होने के फौरन बाद, मैंने झुनिया को शाजापुर बुलाया और पहले बाकायदा कोर्ट मैरिज की। बाद में, अग्नि को साक्षी मान कर सात फेरे भी लिए। झुनिया और मेरे दो बच्चे भी हैं। लेकिन, पाँच साल तक सेक्स स्लेवरी करने का दंश मुझे आज भी चुभता है।

कभी-कभी लगता है- अभिनेत्री तनुश्री दत्ता की तरह मैं भी लंबा-सा ब्लॉग लिखूँ, शाजापुर थाने में सरोज अग्रवाल के खिलाफ एफ.आई.आर. दर्ज करवाऊँ। लेकिन, डरता भी हूँ कि मैं कहीं इस मर्दानगी के चक्कर में अपनी पहली पसंद और प्यार झुनिया को न खो बैठूँ!

***

तबादला

विनीता परमार

कितने दिनों बाद आज मुझे एक ग्रैंड पार्टी का इन्विटेशन मिला था। सुबह से ही एक्साइटेड थी ऑफिस के लोगों के साथ - साथ कितने बड़े लोगों के बीच की पार्टी।

क्या पहनूँगी ? कैसी दिखूँगी ? जैसे हवाई किलों में उलझी सोचने लगी। कितनी मशक्कत से कमाई के पैसों में से कुछ पैसे जोड़े थे तो एक ढंग की साड़ी खरीद पाई थी।

सुबह से कितनी बार साड़ी को टटोलकर देखा था, मन अपने में उड़ रहा था। कांचीवरम् सिल्क पहनूँगी।

पार्टी में नियत समय पर पहुँच गई। ऑफिस वालों के आसम.... नाइस लुक.. सुन मन ही मन फूल रही थी। कल फेसबुक पे फोटोज़ डालूँगी जैसे विचारों से मन के लड्डू फूट रहे थे।

केक कटिंग होने का अनाउन्समेंट सुन सब इकट्ठे हुए। मिसेज शेट्टी ने केक काटा।

अचानक मेरी दोस्त भावना ने चिल्लाकर कहा - ''अरे ! तुम्हारी साड़ी और बॉस की साड़ी बिल्कुल एक जैसी है।''

दूसरे दिन ऑफिस में मुझे बॉस ने बुलाया और कहा -''तुम्हारा शिफ्ट जेनरल से बदल कर नाइट शिफ्ट कर दिया गया है और तुम्हें मुंबई से बाहर वाले ऑफिस में काम करना होगा। ''

तबादले के समय पुराने बक्से में पड़ा एक हज़ार रुपये की डिज़ाईन वाला स्वेटर वैसे ही है, उसकी गर्माहट में कोई कमी नहीं, वो मुझे फिर तीस बरस पीछे ले गया। बुनने वाली उसकी माँ, उसके साथ किसी चीज़ को पूरा करने का धुन, पोनी और लाल इमली के ऊन भी कहीं गुम हो गए। वो ''पोनी'' की सलाइयों और ''लाल इमली'' ऊन वाले दिन थे। वो बुनते रहती दिन के उजाले में रात के अंधेरे में लालटेन की रौशनी में। बुनने के लिए अंदाज़ा ही काफी था। कितने फंदे पड़ेंगे ? किस नंबर की सलाई से कितना मोटा ऊन बुना जा सकेगा, किस व्यक्ति पर किस रंग और डिज़ायन का स्वेटर अच्छा लगेगा। ये सब कुशल कारीगर की तरह याद था। स्वेटर पूरी करने के लिए एक धुन का सवार होना। वो समय स्वेटर की डिज़ाइनों वाला था। मर्द, औरत और बच्चों के स्वेटर के अलग-अलग नमूने। नमूने उनके इंटेलच्यूल प्रॉपर्टी राईट के अंतर्गत आते थे। नकल करने वालों से खटास की शुरूआत हो जाती। उन्नीस सौ अट्ठासी की सर्दियाँ शुरू हो गईं थी। कठिन वर्षों का वो साल जब नौकरीशुदा की सैलरी रोक दी गई थी। घर का खर्च डाकिया के इंतज़ार से चलता था। सैलरी रुकने की वज़ह भी ऐसी -वैसी नहीं पूरा तंत्र लगा दिया था। द्रोपदी की एक हँसी ने पूरा महाभारत रचवा दिया और उनकी उस साड़ी ने उनके परिवार की नींव हिला दी।

संपर्क:केन्द्रीय विद्यालय पतरातू (झारखंड), पोस्ट ऑफिस- डीज़ल कॉलोनी पतरातू (झारखंड) पिन- 829120
ई-मेल:parmar_vineeta@yahoo.co.in
मोबाइल :7633817152

घर-परिवार की ज़िम्मेदारी और तंगी की हालत में भी रहने के रंग- ढंग से कोई नहीं कह सकता था कि अफ़सर की बीवी नहीं है। ठसक में कोई कमी नहीं थी सूती साड़ी में कलफ चढ़ाकर कड़क रौब को दिखा देती।

''मतलब पहनता है हर कोई झमकाता है कोई - कोई''। छोटी सी जगह थी जहाँ कॉलोनीनुमा माहौल होने के बावजूद सबने अपनी चारदीवारी बना रखी थी।

ऑफिसवाले लोगों ने एक पार्टी रखी थी उन्हें भी बुलाया था। पति के अफ़सर की बीवियों के बीच आस-पास की औरतें के साथ -साथ कितने बड़े लोगों के बीच की पार्टी थी। ज़्यादा विकल्प नहीं थे। वही सूती साड़ी माड़ डालकर कड़क की हुई थी। लोगबाग कहते हैं कपड़े किसी दूसरे के लिए नहीं पहना जाता वो तो अपनी संतुष्टि के लिए होते हैं।

अफ़सर की वाइफ दूर से ही उनकी साड़ी में उलझी थीं। तब तक किसी औरत ने कहा था -

''अरे ! वीणा जी की साड़ी तो बहुत खूबसूरत है, गुलाबी रंग आप पर फ़ब रहा है। ''

साड़ी की बड़ाई अफ़सर की पत्नी के कलेजे में धँस गई। इतनी कम सैलरी में कैसे मेंटेन करती है। इसके ठसक को मैं निकलवाती हूँ। अब बॉस की वाइफ का सवाल सिर्फ़ साड़ी का नहीं रह गया। उसे पूरे ऑफिस की राजनीति से जोड़ मज़ा चखाने के लिए व्यूह रचना की जाने लगी। कुछ शकुनि इकठ्ठे हुए चाल चली जाने लगीं। कमजोरियाँ ढूँढ़ी जाने लगीं। पहली कमज़ोरी हाथ आई। पिताजी बीस वर्षों से एक ही जगह कार्यरत थे। अब तबादले के लिए एक विधायक को विधानसभा में प्रश्न पूछने के लिए तैयार किया गया। विधानसभा में सोच सकते हैं कैसे-कैसे मामले उठाए जाते थे। उन दिनों दर्द, भूख, ग़रीबी से भी गंभीर मामला एक अफ़सर की पत्नी की बराबरी एक मातहत कैसे कर सकता! शून्यकाल का तारांकित प्रश्न- ''श्री सूर्यनरायण बीस वर्षों से एक ही जगह कैसे कार्यरत हैं।'' अब विभाग ने ध्यान दिया। स्थानांतरण पूर्वी चंपारण से पश्चिम चंपारण कर दिया गया। कुछ ज़िद और ज़्यादा बीमारी में अब उस जगह स्थांतरित होना संभव नहीं। योगदान नहीं देने की स्थिति में विभाग ने वेतन रोक दिया। जी जिनकी साड़ी के कारण इतना कहर बरपा उनको कैसे छोड़ दिया जाता ? उनके प्रमाण पत्रों के नकली होने का अब शुरू हुआ दफ़्तरों का चक्कर, एक पटना और मोतिहारी की यात्रा। पति और पत्नी दोनों के वेतन मिल नहीं रहे थे। घर है, बच्चे हैं, तो खर्च रहेगा ही। इस मामले में मज़ेदार बात यह थी कि प्रश्नकर्ता विधायक गंगा पार का था, जिसे दूर-दूर तक यह नहीं पता था कि ये कौन हैं ! मामला अपनी जगह, मजबूरी और ज़िद अपनी जगह।

घर का खर्च श्री सूर्यनरायण के छोटे भाई के कंधों पर आ पड़ा था। छोटे भाई द्वारा भेजे गए रुपये के उस मनीऑर्डर पर सब की निगाहें टिकी रहती थीं। सबसे महत्त्वपूर्ण व्यक्ति हो गया था वो डाकिया। एक बार उसके स्वेटर के नमूनों में नज़र उलझ गई थी। उसे रोक कर फटाफट उसके डिज़ाईन की चोरी कर ली गई थी। अगले महीने फिर मनीऑर्डर का इंतज़ार। इस बार पैसे नहीं आए। अगले महीने भी नहीं आए। भेजनेवाले को चिट्ठी लिखी गई। वहाँ से समय पर पैसे भेजे गए। इसका जवाब आया। अब उस हज़ार रुपये के नमूने के चक्कर में डाकिए ने उसी घर को निशाना बना लिया था। जुए की लत और शकुनियों की चाल में डाकिए ने अपनी सरकारी नौकरी को ताख पर रख खुद ही दस्तख़त बना कर पैसे निकाल लिए थे। शिकायत हुई केस चला फिर अंत में उसकी नौकरी बचाने के चक्कर में सूर्यनरायण जी को झूठी गवाही देनी पड़ी थी।

लगभग दो वर्षों तक दफ्तरों के चक्कर सरकारी नियमों का ज़िक्र कर उस साड़ी की लंबी लड़ाई को जीत लिया गया था। उस साड़ी की उपस्थिति में मैं हूँ। मैं श्रेष्ठ हूँ को सिद्ध करवाना चाहा; लेकिन सत्य और जीवटता की लड़ाई जीती जा चुकी थी।

आज तीस बरसों के बाद वो एक हज़ार रुपये की डिज़ाईन वाला स्वेटर वैसे ही है। कहाँ कुछ बदला! तबादले के तरीकों में साड़ी जैसी चीज़ों ने अपना स्थान वैसा ही बनाए रखा है।

***

फार्म IV

समाचार पत्रों के अधिनियम 1956 की धारा 19-डी के अंतर्गत स्वामित्व व अन्य विवरण (देखें नियम 8)।

पत्रिका का नाम : विभोम स्वर

1. प्रकाशन का स्थान : पी. सी. लैब, शॉप नं. 3-4-5-6, सम्राट कॉम्प्लैक्स बेसमेंट, बस स्टैंड के सामने, सीहोर, मप्र, 466001

2. प्रकाशन की अवधि : त्रैमासिक

3. मुद्रक का नाम : जुबैर शेख़।

पता : शाइन प्रिंटर्स, प्लॉट नं. 7, बी-2, क्वालिटी परिक्रमा, इंदिरा प्रेस कॉम्प्लैक्स, ज़ोन 1, एमपी नगर, भोपाल, मप्र 462011

क्या भारत के नागरिक हैं : हाँ।

(यदि विदेशी नागरिक हैं तो अपने देश का नाम लिखें) : लागू नहीं।

4. प्रकाशक का नाम : पंकज कुमार पुरोहित।

पता : पी. सी. लैब, शॉप नं. 3-4-5-6, सम्राट कॉम्प्लैक्स बेसमेंट, बस स्टैंड के सामने, सीहोर, मप्र, 466001

क्या भारत के नागरिक हैं : हाँ।

(यदि विदेशी नागरिक हैं तो अपने देश का नाम लिखें) : लागू नहीं।

5. संपादक का नाम : पंकज सुबीर।

पता : रघुवर विला, सेंट एन्स स्कूल के सामने, चाणक्यपुरी, सीहोर, मप्र 466001

क्या भारत के नागरिक हैं : हाँ।

(यदि विदेशी नागरिक हैं तो अपने देश का नाम लिखें) : लागू नहीं।

4. **उन व्यक्तियों के नाम / पते जो समाचार पत्र / पत्रिका के स्वामित्व में हैं। स्वामी का नाम :** पंकज कुमार पुरोहित। **पता :** रघुवर विला, सेंट एन्स स्कूल के सामने, चाणक्यपुरी, सीहोर, मप्र 466001

क्या भारत के नागरिक हैं : हाँ।

(यदि विदेशी नागरिक हैं तो अपने देश का नाम लिखें) : लागू नहीं।

मैं, पंकज कुमार पुरोहित, घोषणा करता हूँ कि यहाँ दिए गए तथ्य मेरी संपूर्ण जानकारी और विश्वास के मुताबिक सत्य हैं।

दिनांक 20 मार्च 2019

हस्ताक्षर पंकज कुमार पुरोहित

(प्रकाशक के हस्ताक्षर)

बिट्टो

अंकिता भार्गव

बहुत भीड़ थी। स्टेशन पर लग रहा था जैसे पूरा लखनऊ ही स्टेशन पर आ गया है। ट्रेन के डिब्बे में भी बहुत भीड़ थी फिर भी किसी तरह लोगों को ठेल ठाल कर आख़िर वह डिब्बे में चढ़ ही गई। इस जद्दोजहद में किसने कहाँ छुआ यह देखने का उसे होश ही कहाँ था। वह नारंगी रंग की सिंथेटिक साड़ी बदन पर कस कर लपेटे थी और ब्लाउज भी कुछ ज़्यादा ही गहरे गले का पहने हुए थी। उसके परिधान को देख कर एकबारगी को समझ ही नहीं आ रहा था कि वह खुदको छुपाना चाहती है या दिखाना। सस्ते मेकअप की एक मोटी परत अपने चेहरे पर चढ़ाए वह डिब्बे में मौजूद अन्य महिलाओं से अलग लग रही थी। उसके हावभाव भी थोड़ा अलग ही थे। इसीलिए सभी यात्रियों के आकर्षण का केंद्र भी बनी हुई थी, खासकर पुरुषों के, डिब्बे में मौजूद सभी पुरुष उसे कुछ अलग सी नज़र से ताक रहे थे, कुछ सभ्य होने का दिखावा करते हुए छुप कर तो कुछ खुलेआम पर ताक सभी रहे थे।

डिब्बे में मौजूद औरतें भी कुछ अलग सा नज़रिया लिए उसके बारे में आपस में खुसर- फुसर कर रही थीं। मगर कौन उसे कैसी नज़रों से देख रहा है ना तो उसे इस बात की फिक्र थी और ना अपने प्रति लोगों के नज़रिए की। वह सब पर एक गहरी नज़र डाल अपनी सीट पर आ कर बैठ गई। असल में ना तो उसे पुरुषों से कोई लेना देना था और ना ही महिलाओं से बल्कि उसके आकर्षण का केंद्र सामने की सीट पर अकेली बैठी हुई लड़की थी।

जब से डिब्बे में चढ़ी, तभी से उसकी नज़र उस चौदह पंद्रह साल की लड़की पर अटकी हुई थी। किसी महंगे प्राइवेट स्कूल की ड्रेस पहने वह लड़की अमीर घर की लग रही थी। स्कूल बैग को कस कर अपने सीने से चिपकाए वह चौकन्नी सी इधर उधर देख रही थी, थोड़ी डरी हुई भी लग रही थी। वह ध्यान से उस लड़की के हाव- भाव देख कर उसकी मन:स्थिति का अंदाज़ा लगाने की कोशिश करने लगी। वह किसी से कुछ पूछ कर उस बच्ची को परेशानी में नहीं डालना चाहती थी, मगर इतना तय था कि वह लड़की घर से भाग कर आई थी और यदि अभी ना सँभाला गया तो किसी बड़ी मुसीबत में फंस सकती थी।

जाने क्यों उस लड़की में कहीं ना कहीं उसे अपना अक्स दिखाई दे रहा था। वह भी तो एक दिन यूँ ही घर से निकल आई थी, बिना किसी से कुछ पूछे, बिना किसी को कुछ बताए। घर से निकली तो आँखों में एक सपना सजा कर थी कि एक दिन बड़ी अभिनेत्री बन कर एक दिन माँ- बापू का नाम पूरी दुनिया में रोशन कर देगी, पर उसका सपना बस सपना बन कर ही रह गया। उस दिन घर की दहलीज लाँघना उसके जीवन की सबसे बड़ी भूल सिद्ध हुई और उसकी ज़िंदगी जाने कहाँ से कहाँ पहुँच गई। अचानक उसने देखा उस बच्ची की आँखों में आँसू थे; जिन्हें वह छुपाने की नाकाम कोशिश कर रही थी। ट्रेन ने सीटी दे दी थी। कुछ ही देर में ट्रेन लखनऊ का प्लेटफार्म छोड़ने को तैयार थी, अब वह और इंतज़ार नहीं कर सकती थी। उसने अपना मोबाइल उठाया और कुछ टाइप करने लगी।

ट्रेन के प्लेटफार्म छोड़ने के साथ ही वह कुछ बेचैन सी दिखाई देने लगी और उन्नाव पहुँचते- पहुँचते तो जैसे उसकी बेचैनी की कोई हद ही नहीं रही। वह कभी खिड़की से बाहर देखने लगती तो कभी अपने हाथों को मसलने लगती। यात्री उसकी हर हरकत को बड़े ही ध्यान से देख रहे थे मगर उसे किसी से कुछ लेना देना नहीं था, वह तो जैसे अपने आप में ही नहीं थी। ट्रेन उन्नाव का प्लेटफार्म बस छोड़ने ही वाली थी कि एक दंपति व्याकुल से डिब्बे में घुसे, 'मम्मी-पापा!' सामने की सीट पर बैठी वह बच्ची उन्हें देख कर ज़ोर से चिल्लाई। उन दोनों ने भी उसे 'बिट्टो' कह कर सीने से चिपटा लिया। ट्रेन के डिब्बे में मौजूद सभी यात्री इस दृश्य को आश्चर्य से देख रहे थे सिवाय उसके। उसके चेहरे पर हैरानी नहीं राहत के भाव थे। उसने अपनी आँखों से छलकने को आतुर आँसुओं को पल्लू में समेट लिया और फिर से वही कातिल मुस्कान अपने होठों पर सज़ा ली जिसके लिए वह जानी जाती है।

'हमारी बेटी दसवीं में नंबर कम आने पर डाँट के डर से घर से भाग रही थी, मगर आप में से किसी ने व्हाट्स एप पर हमारी बेटी के फ़ोटो के साथ यह मैसेज वायरल कर हमारी बेटी को हमसे मिलाने में मदद की है। मैं यह तो नहीं जानता कि वह फरिश्ता कौन है मगर जो कोई भी है मैं उसका दिल से शुक्रिया करता हूँ।' उस व्यक्ति ने हाथ जोड़ कर कहा। हर कोई इस भले काम का श्रेय लेना चाहता था मगर क्या कहे यह कोई नहीं समझ पा रहा था। किसी ने कुछ नहीं कहा, उसने भी नहीं। कहने की ज़रूरत भी नहीं थी, उसके लिए यही खुशी क्या कम थी कि उसने आज एक बिट्टो को अंधेरी गलियों में खोने से बचा लिया। काश! उसे भी उस दिन कोई फरिश्ता मिल गया होता तो आज वह भी चंपा नहीं अपने बापू की बिट्टो होती।

***

संपर्क: द्वारा अतुल कुमार, 111/54, विजय पथ, आगरा फार्म, मानसरोवर, जयपुर

धोखेबाज़ मौसम की जय हो!

प्रेम जनमेजय

संपर्क: 73, साक्षरा अपार्टमेंट्स, ए-3,
पश्चिम विहार, नई दिल्ली 110063
ई-मेल: premjanmejai@gmail.com
मोबाइल : 9811154440

ये नारा मेरा नहीं है, राधेलाल का है। कुछ प्रजातंत्र के मारे होते हैं और कुछ प्रजातंत्र को मारने वाले होते हैं। बेचारा राधेलाल प्रजा है अत: प्रजातंत्र का मारा है। हर समय सड़क से संसद की ओर टकटकी लगाए देखता रहता है। उसे विश्वास है कि एक दिन पश्चिम से सूर्य अवश्य निकलेगा।

प्रजातंत्र में जैसे सबकी भूमिका निर्धारित है। राधेलाल की भी निर्धारित है। कुछ सेवा करते हैं और मेवा पाते हैं। कुछ बिना सेवा किए मेवा पाते है। पर राधेलाल जैसे प्रजाजन सेवा करते हैं और सेवा ही पाते हैं। सेवा का यह तंत्र केवल संसद के गलियारों में नहीं है, धर्म के गलियारों में भी है। अपने सेवकों को माया मोह से दूर रखने की शिक्षा का मंत्र देने वाले महंत बिन सेवा के मेवा पाते हैं। न केवल मेवा पाते हैं, मेवे का व्यापार भी करते हैं। धर्म का सिक्का राजनीति, समाज, देश-विदेश आदि, सब जगह चलता है। जो भी इसके अवमूल्यन की कोशिश करता है उसका ही अवमूल्यन हो जाता है।

तो इन दिनों प्रजातंत्र का मारा राधेलाल बेरोज़गार है। राधेलाल कबीर नहीं है फिर भी भया उदास है। देश में आम चुनाव हो चुके हैं। इधर आम चुनाव खत्म हुए और उधर अनेक हो गए। देश में नारों की नदी सूख गई है। नारों में ज़िंदाबाद किसान अब मुर्दा पड़ा है। दलित की झोपड़ी किसी बूढ़ी वेश्या के खुले द्वार -सी उपेक्षित है। गले में हार डालने का सम्मान पाई पिछड़ी जातियाँ पुन: जूते की नोक पर हैं। जैसे युद्ध में विजयी राजा के राजमहल में उत्सव होता है और 'शहीद' हुए 'योद्धाओं' के घर मातम पसरता है, वैसा ही कुछ प्रजातंत्र में भी पसर गया हैं। अब अगले चुनाव तक तो पसरेगा ही। इसी कारण

राधेलाल फिलहाल बेरोज़गार हैं।

राधेलाल की भूमिका नारेबाज़ की है। जैसे बिन भ्रष्टाचार नौकरशाह, पुलिस, नेता आदि बेचैन रहते हैं वैसा ही बेचैन नारा विहीन राधेलाल है। वह नारों का नशेड़ी हो गया है। बिन नारा सब सून। उसका मन करता है कि किसी फेरीवाले की तरह वह गली-गली आवाज़ लगाए- नारे लगवा लो, नारे। सस्ते नारे लगवा लो! दो नारों के साथ चार फ्री नारे लगवा लो। उसे समझ नहीं आ रहा है कि वह करे तो क्या करे! पहला जमाना बढ़िया था, केवल चुनाव में ही नारों की आवश्यकता नहीं पड़ती थी। नारों का सैंसक्स हाई था। दिल्ली के जंतर -मंतर में हर समय आंदोलन का वंसत छाया रहता था। पैट्रोल या डीज़ल के दो रुपये बढ़ते थे तो हर गली में नारे शोभायमान होते थे, हज़ारों रुपये की कारें फूक दी जाती थीं। ग्राहक सुबह उठकर ब्रेड अंडा या मक्खन लेने जाता है तो पता चलता है कि बीस रुपये की ब्रेड पच्चीस की हो गई है, पाँच रुपये का अंडा सात का हो गया है यानी लगभग बीस परसेंट महँगे हो गए हैं। ग्राहक बस आश्चर्य व्यक्त करता है, 'इतना महँगा' और उतना महँगा लेकर चल देता है। लगता है कि बेरोज़गारी सुरसा, राफेली भ्रष्टाचार, किसानी आत्महत्या आदि परवाने चुनाव में पैदा होते है और चुनाव की शमा में जलकर मुक्त हो जाते हैं।

बेचारे राधेलाल ने बहुत देर तक प्रतीक्षा की और गिड़गिड़या भी - कोई नारा तो उछालो यारों! पर प्रतीक्षा न्यायालय की तारीख पर तारीख जैसी हो गई। ऐसे में राधेलाल ने मुझे देखा और नारा उछाल दिया - धोखेबाज़ मौसम की जय हो!

मैंने कहा - मौसम और धोखेबाज़ ! क्या प्रकृति में भी चुनाव का बिगुल बज गया है कि मौसम धोखेबाज़ होने लगा। उसे कौन-सा चुनाव लड़ना है कि वह धोखेबाज़ हो। मौसम तो प्रकृति के नियामानुसार चलता है।

किस धोखेबाज़ मौसम की बात कर रहे हैं आप!

यही जो आजकल हमारे देश में चारों ओर भ्रष्टाचार -सा छाया हुआ है। बरसात का मौसम।

मैंने कहा -भीषण गर्मी के बाद बरसात का जो मौसम आता है उसकी जय होनी ही चाहिए। कितना सकून मिलता है। संसद में हरियाली छाती हैं। सब्सीडाईज़ कैंटीन में बहार आती है। देशसेवा के चातकों की प्यास बुझती है। आश्वसनों की सूख चुकी चुनावी नदी में विकास की कुछ बूँदे टपकने लगती हैं। क्या बढ़िया मौसम होता है बरसात का।

राधेलाल बोला -बढ़िया! सबसे घटिया होता है बरसात का मौसम।

तभी कहीं से गाना बजने लगा-

हम तो समझे थे कि बरसात में बरसेगी शराब

आई बरसात तो बरसात ने दिल तोड़ दिया।

राधेलाल चहका - देख लिया। इस घटिया बरसात ने किसी का दिल तोड़ ही दिया न। और ज़रूर किसी गरीब का दिल तोड़ा होगा।

गरीब का दिल क्यों, अमीर का क्यों नहीं? अमीर के पास क्या दिल नहीं होता?

अमीर के पास दिल होता है पर वो उसका प्रयोग नहीं करता। वो तो दो दूनी चार के लिए दिमाग का प्रयोग करता हैं। उसे न तो चुनाव के समय शराब चाहिए और न ही बाद में। उसे तो शराब का व्यापार करना है- चुनाव से पहले, चुनाव में और उसके बाद भी। गरीब के लिए चुनाव में शराब बरसती है और उसके आगे भी बरसने के आश्वासन मिलते है, पर नहीं बरसती। शराब की जगह बाढ़ बरसती है जिसमें झोंपड़ियाँ मरती हैं। ये बरसात अमीर को उसके पेंट हाउस में मंहगी स्कॉच के साथ फुहार का आंनद देती है तो गरीब की झोंपड़ी बहाकर उसे बेघर करती हैं।

तो इसका मतलब ये हुआ कि बरसात सबके साथ धोखा नहीं करती, केवल गरीब के साथ करती है।

और क्या ? धोखेबाज़ी चाहे मौसम करे या सरकार गरीब के साथ ही होती है। सरकारें मौसम विभाग जैसी ही तो होती हैं- अविश्वसनीय। बेचारे को आश्वासन मिलता है कि आज बरसात नहीं होगी और वह बिना छतरी के चल देता है पर बरसात के साथ कीचड़ भी बरस जाता है। और जिस दिन चुनावी घोषणा होती है कि आज खूब बरसेगा पर उस दिन सूखा पड़ जाता है और छतरी ताने गरीब का मज़ाक बनता है।

प्यारे राधेलाल ! ऐसा तो नहीं है कि बरसात का मौसम हर बार धोखेबाज़ी करता है। कभी-कभी तो सच भी बोलता है।

कभी-कभी सच बोलने वाला झूठा ही माना जाता है। बरसात लाख कहे कि मैंने इस्तीफा दे दिया है, कोई मानता ही नहीं हैं। कुछ लोग इस्तीफे के लिए नहीं बने होते हैं। इस्तीफा देने वाले हाथ अलग होते हैं और लेने वाले अलग होते हैं।

कुछ भी कहो बरसात का मौसम बढ़िया होता है। क्या बादल घुमड़ते हैं, मोर नाचते हैं

और क्या श्रीमान ढेंगू जी कटियाते हैं और क्या मच्छर रिमिक्स गाते हैं!

क्या मिट्टी की सोंधी खुशबू मिलती है!

क्या सीवर का पानी गलियों में सुगंध बाँटता हैं शहर की रफ़्तार थमती है!

राधेलाल यदि मौसम धोखेबाज़ है तो उसकी जय क्यों बोल रहे हो?

जब सभी धोखेबाज़ों की जय हो रही है तो बेचारे मौसम की जय क्यों न हो? चल तूँ नारा बोल न...

कौन-सा नारा?

यही, तूँ बोल धोखेबाज़ मौसम की... मैं बोलूँगा-जय!

नारे लगाने से क्या होगा ?

तेरे दोस्त की, नारे लगाने की, खुजली मिटेगी।

मित्रो, खुजली मिटनी बहुत आवश्यक हैं। खुजली न मिटे तो आदमी अध्यक्ष पद से इस्तीफा दे देता है, खुजा-खुजा कर अपने चेहरे को जख्मी कर लेता है, इधर-उधर फ़ोन पर खुजियाता है और अंतत: खुजली वाला कुत्ता हो जाता है। ऐसे कुत्ते भौंक नहीं पाते हैं। भौंके तो तब, जब खुजली मिटे। वे बस इस खंभे से उस खंभे पर अपने को रगड़ने में, चौरसी लाख योनियों के बाद मिला कुत्ता जीवन व्यर्थ करते हैं। राधेलाल मेरा मित्र है, मैं उसे खुजियाया कैसे बनने दे सकता था अत: मैंने बोला-लगा नारा। राधेलाल ने नारा लगाया- धोखेबाज़ मौसम की...।

हे भक्तों, आप भी यदि खुजियाए जीव नहीं बनना चाहते तो मेरे साथ ज़ोर से बोलें-जय!

***

'अथ गरीब चिंतन'

हरीश नवल

'गरीब कौन होता है?' उन्होंने एक छोटा सा सादा सा सवाल पूछा।

गुरुदेव दुविधा में पड़ गए जब युवराज ने पूछा है तो माकूल जवाब देना होगा। सवाल कठिन नहीं था पर जवाब देना कठिन लगा। सो उन्होंने कोशिश की और सीधा सा उत्तर दिया – ''जिसके पास रहने को अपना घर, खाने को रोटी और पहनने को कपड़ा नहीं होता, वह गरीब होता है।''

जवाब पाकर युवा सम्राट चिंतन की मुद्रा में चले गए, थोड़ी देर बाद लौट आए और बोले, ''गुरुदेव राजधानी में सभी नागरिकों के पास अपने घर कहाँ हैं, ज़्यादातर लोग किराए पर रहते हैं। यहाँ रोज़ सुनने को मिलता है कि किराए बहुत बढ़ गए हैं। जो इतने बढ़े हुए किराए दे सकता है तो गरीब कैसे हुआ? दूसरी बात यह कि रोटी रोज़-रोज़ राजधानी में कौन खाता है। सभी बाज़ारों में बल्कि जहाँ बाज़ार नहीं भी हैं – रेस्टोरेंट हैं, फूड मार्ट हैं, खोमचे हैं – जाओ तो जगह नहीं मिलती कोई कोई ही वहाँ रोटी खाता है, हमने तो अक्सर नागरिकों को चाउमिन, डोसे, भठूरे, पीज़ा, वर्गर, पूड़ी, टोस्ट आदि ही खाते देखा है – जो इतना पैसा खर्च करके यह सब खा सकता है – गरीब क्योंकर होगा? तीसरी बात गुरुदेव, माफ़ कीजिए आपने ही क्या कपड़े पहने हैं। पूरे शरीर पर सिर्फ एक सादी सी केसरिया धोती ही तो पहनी है। उस दिन आप हमें कुम्भ दिखाने हरिद्वार ले गए थे – स्वामियों, साधुओं, संतों ने पहना ही क्या था, आधा शरीर नग्न था बल्कि नागा साधुओं ने तो कुछ भी नहीं पहना था। उनकी सवारियाँ निकल रही थीं, बाजे बज रहे थे, कितने ही साधु, पुरोहित हाथियों पर बैठे हुए थे, सबके बड़े-बड़े आश्रम हैं, वो गरीब तो नहीं कहे जा सकेंगे, वो तो राजा-महाराजा की तरह बर्ताव कर रहे थे।

गुरुदेव संकुचित हो उठे, कुछ देर कोई उत्तर न सूझा। वे स्वयं आधा तन ढके थे, रोज़ उनकी सेवा में योग कराने और उनकी शंकाओं का समाधान करने वे आते हैं। आते भी राजमाता द्वारा प्रदत्त बड़ी कार में हैं।

हठात् कह उठे, युवा सम्राट गरीब वह होता है जिसकी आवाज़ नहीं सुनी जाती, जो वह कहना चाहता है, कह नहीं पाता है?''

''गुरुदेव, अखबारें में पढ़ रहा हूँ, टी-वी- में देखता हूँ – जजों की नहीं सुनी जा रही, प्रोफ़ेसरों, अध्यापकों की नहीं सुनी जा रही। दुकानदारों, इंजीनियर, डॉक्टर अपनी आवाज़ अनसुनी होने पर हड़ताल कर रहे हैं। क्या वे गरीब हैं?''

गुरुदेव हकबका गए। अपनी से आधी आयु के प्रिंस को वे समझा नहीं पाए। वे गरीब की परिभाषा का निर्माण करने में दिमाग खपाने लगे, कुछ प्रकाश दिखा तो झोले से बोले युवा सम्राट जिसके पास रोज़गार नहीं वह गरीब होता है।''

युवा सम्राट उठकर खड़े हो गए, उनका रेशमी गाउन झिलमिला उठा, हँसते हुए बोले, ''गुरुदेव क्या हम गरीब हैं? हमारा तो कोई रोज़गार नहीं है। हमारे बेरोज़गार दोस्त बी.एम. डब्ल्यू और पराडो में घूमते हैं। कुछ के पास फरारी भी है। क्या उन्हें या उन जैसों को गरीब कहा जा सकता है? नहीं ना?'' कह कर वे ज़ोर-ज़ोर से हँसने लगे।

गुरुदेव उनका ज़ोर से हँसना सहन न कर पाए। मन मन में जाने क्यूँ एक गीत गूँजने लगा, 'तू भाग मिल्खा, भाग ---- पर ऐसे भाग कहाँ कि वे अपनी मर्ज़ी से भाग पाते।

युवराज का आदेश हुआ, ''गुरुदेव इतनी सी बात नहीं बता पा रहे कि गरीब कौन होता है? यही है आपका ज्ञान, आपकी साधना? तनिक दिमाग पर ज़ोर दीजिए एक कपालभाती कर लीजिए।''

शब्दों की चोट से गुरुदेव भीतर ही भीतर तिलमिला उठे। कुछ देर शीर्ष पर उगी दीर्घ केश राशि में उँगलियाँ घूमाते रहे। युवराज समीप रखे कॉउच पर धंसे हुए थे पर उनकी

संपर्क: 65, साक्षरा अपार्टमेंट्स, ए-3, पश्चिम विहार, नई दिल्ली 110063
ई-मेल:harishnaval@gmail.com
मोबाइल:9818999225

निगाहें गुरुदेव की उँगलियों का पीछा कर रहीं थीं। वे आनंद में थे मानों आज ऊँट पहाड़ के नीचे पिस गया हो।

गुरुदेव उवाच, ''गरीब वह होता है युवराज जिसके पास कोई बैंक बैलेंस ना हो, पल्ले पैसा ना हो।''

युवराज ने ध्यान से यह कथन सुना, उसके अनुसार सोचा और पूरक प्रश्न उपस्थित किया, ''गुरुदेव राजधानी में ही इतने काले धन वाले हैं जो बैंकों में खाता नहीं खोलते। बाजे वक़्त उनके पास पैसा क्या, पल्ला भी नहीं होता। क्या वे ही गरीब होते हैं?''

गुरुदेव निरुत्तर हो गए। उन्हें अपनी साधना और ध्यान शक्ति पर विश्वास खोया सा लगने लगा। तब भी उन्होंने प्रयास करके कहा, ''युवराज मैं समझता हूँ गरीब वह होता है जिसका कोई विश्वास नहीं करता।''

युवराज का चेहरा विद्रूप हो उठा। उन्होंने शब्दों की कटुता भरी छड़ी उठाई और गुरुदेव को छलनी करने के बाद कहा, ''गुरुदेव राजधानी में जो सबसे खुला हराभरा स्थान है जहाँ एक बड़ी गोल इमारत है, उसमें दाखिल होने वालों का कोई विश्वास नहीं करता। नागरिक अपने व्यवस्थापकों और कार्यपालकों पर भी विश्वास नहीं करते, क्या गोल इमारत में सब गरीब हैं?''

गुरुदेव आप दुनिया के सामने बड़ी-बड़ी हांक लेते हैं पर हमारे आवास में आते ही लगता है आपको हाँक कर लाया गया हों, यहाँ आप लल्लो चप्पों करते हैं जो हमें पसंद नहीं। देखिए आप हमें बताएँ कि किन काम-धंधों वालों को गरीब कहा जाता है। सोचिए और बताइए, हमें आज पता करके ही चैन मिलेगा कि गरीब कौन होता है?''

यह प्रश्न डूबते हुए गुरुदेव को तिनका सा लगा, उसके सहारे वे कुछ उबरे और हीनभावना के पानी से तनिक बाहर आए और कुछ क्षण विचार सागर में डुबकी लगाकर मोती खोज लाए। ''युवराज, गरीब आदमी प्राय: मज़दूरी करता है, उसे घंटे या दिहाड़ी के हिसाब से मज़दूरी मिलती है....।

बात काटते हुए युवराज ने कहा, ''मजूरी, दिहाड़ी, प्रति घंटा यानी जिसे अंग्रेज़ी में वेजिज़ कहते हैं। गुरुदेव हमें हिंदी पढ़ाने एक गुरुजी आते हैं, राजमाता उन्हें प्रति घंटे के हिसाब से पैसे देती हैं, जिस दिन नहीं आते, उन्हें पैसे नहीं मिलते। वे तो गरीब नहीं लगते, अपनी कार से आते हैं। उनका एक फ़्लैट राजधानी में और एक मसूरी में है। क्या वे गरीब हैं? प्राइवेट कंपनियों में काम के घंटों के अनुसार पेमेंट होती है। हमारा नया युवा वर्ग सरकारी नहीं प्राइवेट संस्थानों में काम करना चाहता है, उसे दिहाड़ी मिलती है पर कंपनी की तरफ से देश-विदेश भेजे जाने पर सारा खर्च मिलता है। तो गुरुदेव यह नहीं और बताइए।''

''जी वही बता ही रहा था'', संभल कर बोलते हुए गुरुदेव ने कहा - ''गरीब वह हो सकता है जो दूध बेचता हो, बाल काटता हो, कपड़े धोने का काम करता हो, जूते गाँठता हो, दूसरों का मैला साफ करता हो, वगैरह वगैरह.....'' गुरुदेव ने साँस ली, उन्हें विश्वास था कि युवराज उनके उत्तर से संतुष्ट होंगे, यद्यपि आशंका भी थी कि युवराज 'खाल में से बाल' निकालने में सिद्धहस्त हैं, उनकी ऐसी खालबालात्मक टिप्पणियाँ अनेक बार अन्य विवादों में ग्रस्त हुई हैं, पर उनकी सीमा असीम है, कुछ कहा नहीं जा सकता।

गुरुदेव की आशंका निर्मूल नहीं थी। युवराज ने गुरुदेव के उत्तर का अधसिला कोट उठाया और उसके बखिए उधेड़ने लगे।

''क्या कहते हैं गुरुदेव? जो दूध बेचे वह गरीब? आप नहीं जानते कि हमारे परिवार को दूध सप्लाई करने वाला अपनी जीप में आता था, सेना की नौकरी छोड़कर कोठी, कोठी दूध बेचता था - वह गोलभवन का सदस्य बना, वह मंत्री पद तक पहुँचा - तो यह आपकी बात गलत सिद्ध हुई।

जहाँ तक बाल काटने वाले की बात है। हमारे पिता हमारे और अपने बाल कटवाने हमें एक फाईव स्टार होटल में ले जाते थे, वहाँ बाल काटने वालों के सैलून में हमारे बाल कटते और हम फिर फाईव स्टार ब्रेकफास्ट करके घर लौटते। अभी भी हम वहीं जाते हैं या सैलून वाले यहाँ कोठी में आते हैं। उनके सैलून की शाखाएँ राजधानी क्या, अनेक शहरों में खुली हैं - आप कहते हैं बाल काटने वाले गरीब होते हैं?

कपड़े धोने की बात भी ऐसी ही है। हमारे पुरखे तो विदेश तक अपने कपड़े धुलवाने भेजते थे। तब अपने देश में ऐसी व्यवस्था नहीं थी। अब तो हर कॉलोनी की मार्किट में कम से कम एक दुकान ज़रूर होती है, जहाँ से नागरिक कपड़े धुलवाते हैं, ये दुकानदार कितना कमाते हैं, आप क्या जानें आप तो बस एक ही पहनते भी नहीं, बस ओढ़ते हैं।

जूते गाँठने की कंपनियों के बारे में भी क्या आपको बताना पड़ेगा? देश की छोड़िए गुरुदेव, विदेश की बड़ी-बड़ी जूता कंपनियाँ हमारे नागरिकों के लिए जूते गाँठ कर अपनी गाँठें मज़बूत कर रही हैं। यह भी गरीब की परिभाषा में नहीं चलेगा।

दूसरों का मैला साफ करने का एक बड़ा उद्योग बन चुका है। यह सर्वसुलभ है। कंपनियाँ बाकायदा काँटेंक्ट यानी ठेका लेती है कि वे आपके आवास, परिसर, संस्थान आदि की सफाई का ज़िम्मा लेंगी और एक निश्चित मासिक या वार्षिक रकम पर साफ-सफाई करेंगी। गुरुदेव ऐसी कंपनियों के कार्यकर्ता भी गाड़ियों में अल्टा मॉड्रन झाड़ू लेकर आते हैं। ..... गुरुदेव कुछ और कसर हो तो उसको भी उत्तर में शामिल करलें, लेकिन बताएँ ज़रूर कि गरीब कौन होता है?''

गुरुदेव किंकर्त्तव्य विमूढ़त्व की गति को प्राप्त हो चुके थे, मुख बंद हो गया पर कान शतप्रतिशत खुले थे। वे जानते थे कि युवराज तर्क और कुतर्क में अंतर नहीं जानते, गुरुदेव को ज्ञात था कि युवराज सत्य और तथ्य तथा तथ्य और भ्रम का फ़र्क कर पाने में असमर्थ होते हुए भी इतने समर्थ हैं कि उनके समक्ष गुरुदेव जैसे व्यक्तित्व भी अदना हैं, क्योंकि तंत्र में रहते रहने का चापलूसी मंत्र वे कभी भूल नहीं पाते हैं।

युवराज का मुख बंद होते ही गुरुदेव के कान भी बंद हो गए थे, वे शरीर नहीं आत्मा हो चुके थे जो निरंतर मरती जा रही थी..... पर तब भी कहीं उनके मस्तिष्क के एक कोने में यह शाश्वत प्रश्न कौंध रहा था कि गरीब कौन होता है। इस समय तो उन्हें वे स्वयं ही बेहद गरीब लगने लगे थे।

***

शिकागो की दुनिया

शुभ्रा ओझा

संपर्क: 1414 Nottingham Ln, H 206, Mundelein, IL60060
ई-मेल : pummyraj.ojha@gmail.com

कुछ शहरों के बारे में हमने बहुत पहले ही पढ़ रखा होता है कि वह क्यों प्रसिद्ध है, उनमें से ही एक है ''शिकागो''। जब भी कोई व्यक्ति शिकागो का नाम लेता है तो सबसे पहले हमारे दिमाग़ में स्वामी विवेकानंद की छवि बनती है, कि कैसे उन्होंने भारत की ओर से सनातन धर्म का प्रतिनिधित्व विश्व धर्म सम्मेलन में किया था। स्वामी विवेकानंद के सम्मान में वर्ष 1995 में आर्ट इंस्टीट्यूट ऑफ शिकागो ने एक रास्ते का नाम ''स्वामी विवेकानंद वे'' रखा जो आर्ट इंस्टीट्यूट शिकागो के पास ही स्थित है।

शिकागो का आर्ट इंस्टीट्यूट,1879 में ग्रांट पार्क में स्थापित हुआ था। यह संयुक्त राज्य अमेरिका का सबसे पुराना और सबसे बड़े कला संग्रहालयों में से एक है। यह संग्रहालय इतिहास के सबसे पुराने कृतियों को सुरक्षित रखे हुए है।

शिकागो, न्यूयार्क और लॉस एंजेल के बाद अमेरिका का सबसे बड़ा आबादी वाला शहर है जोकि मिशिगन झील(Michigan lake) के किनारे स्थित है। पहली नज़र में ये झील समुद्र सा आभास कराती है, अपनी विशालतम आकृति की वजह से यह दुनिया के पाँचवीं बड़ी झील में शामिल है। शिकागो,अमेरिका के इलेनॉइज़(Illinois) राज्य के अन्तर्गत आता है, ऊँची-ऊँची इमारतें और साफ-सुथरी सड़कें इस शहर को और भी सुन्दर बना देती है।

शिकागो अनगिनत विशेषताएँ समेटे है, यहाँ दुनिया का सर्वाधिक व्यस्त व्यावसायिक हवाई अड्डा और विश्व का सबसे बड़ा रेलवे जंक्शन है, जहाँ लगभग तीस रेलमार्ग मिलते है। शिकागो मेट्रोपालिटिन क्षेत्र है, जिसे आम बोलचाल की भाषा में 'शिकागोलैंड' के नाम से भी जाना जाता है। यहाँ पर कृषि-यंत्रों, आटा पीसने, कागज़, मोटर गाड़ियों के उपकरण, वायुयान के पुर्ज़ों, वस्त्र और जलयान के निर्माण के उद्योग भी है। शिकागो में दुनिया की सबसे बड़ी माँस की मण्डी होने की वजह से ही इसको ''विश्व का कसाईखाना'' भी कहते हैं।

शिकागो के घूमने का सबसे उपयुक्त समय मई से अक्टूबर तक है क्योंकि नवंबर से अप्रैल तक सर्दियो में यहाँ का तापमान -1 से -25 C तक चला जाता है। सर्दियो में मिशिगन झील से ठंडी हवाएँ शहर को और भी ठंडा करती है। लगातार चलती हवाओं की वजह से शिकागो को ''विंड सिटी'' भी कहते है। सर्दियो में बर्फ़बारी की वजह से पूरा शहर सफ़ेद बर्फ की चादर से ढक जाता है, इतनी ठण्ड में भी यहाँ का जीवन चलता रहता है। सर्दियो में बर्फ़बारी के दौरान यहाँ पर स्नो स्केटिंग, स्नो स्लाइडिंग आदि कई तरह खेल खेले जाते है। यहाँ के लोग मौसम को भी मात देते हुए अपने दिनचर्या के बीच मनोरंजन के लिए समय निकाल लेते है। बर्फबारी के बीच में भी बच्चे हर रोज़ स्कूल जाते है और साथ ही वीकेंड में स्नो मैन बनाते हुए नज़र आते है। शरीर कंपा देने वाली सर्दियों में भी इस शहर

की सुन्दरता देखते ही बनती है।

सर्दियों की तरह यहाँ की गर्मियों में भी शिकागो की मनोहर छटा देखते ही बनती है। हर तरफ हरियाली और रंग बिरंगे फूल अनायास ही सभी पर्यटकों का मन मोह लेते है। जहाँ एक ओर गर्मियों की छुट्टियों में परिवार के सभी लोग पार्क में बार्बी क्यू करते हुए दिखाई देंगे वहीं दूसरी तरफ बच्चों के साथ बड़े- बुज़ुर्ग मिशिगन झील के किनारे छई छपा छई करते दिख जाएँगे। सर्दियों के अपेक्षा गर्मियाँ शिकागो में ज़्यादा आरामदायक होती है। इस समय शिकागो में जगह-जगह ''शिकागो एयर एंड वाटर शो', ''शिकागो ब्लूज़ शो', ''जाज फेस्टिवल', ''लाइट शो', और ''बलर्ड म्यूज़िक फेस्टिवल' आदि लगे होते है जिसकी वजह से ऐसा लगता है मानों जैसे त्योहारों का मौसम चल रहा हो।

4 जुलाई, इंडिपेंडेंट डे के अवसर पर शिकागो के नेवी पियर्स के साथ ही आस-पास छोटे- बड़े सभी पार्कों में फायर वर्क होता है जिसे सभी लोग अपने परिवार के साथ बैठकर देखते है। दिन में घूमने के साथ ही शिकागो की नाइट लाइफ भी युवाओं के बीच काफी पॉपुलर है, शहर के कई पब और बार रात भर खुले रहते है जहाँ पर कई तरह के गेम खेलकर लोग एंज्वॉय करते है।

आज आधुनिक अमेरिका में शिकागो उन प्रमुख तीन शहरों में से एक है जहाँ सबसे ज़्यादा अप्रवासी भारतीयों की जनसख्या है। यहाँ पर विज्ञान, डॉक्टरेट, कम्प्यूटर आदि के प्रोफ़ेशनल बहुतायत में देखने को मिलते हैं। इसके अलावा पढ़ने वाले छात्रों की संख्या भी बहुत है। परंतु सबसे ज़्यादा यहाँ नौकरीपेशा लोग हैं। इसके अलावा यहाँ अपना खुद का व्यवसाय करने वालों की संख्या भी बहुत अधिक है जो दिन- प्रतिदिन बढ़ती ही जा रही है। शिकागो में भी हिंदुस्तान की झलक देखनी हो तो आप डिवॉन एवेन्यू (Devon Avenue) ज़रूर जाएँ, यहाँ की दुकानें और सड़कें आपको भारत की याद दिला देंगी; क्योंकि यहाँ आपको एक तरफ लहंगे, शेरवानी की दुकान दिखेगी तो वहीं दूसरी तरफ ग्रोसरी (किराने) की दुकान। भारतीय आभूषणों से सजी कई शॉप है डिवॉन एवेन्यू में, जहाँ से आपको हर तरह के भारतीय आभूषण मिल जाएँगे। यहाँ की सड़कों पर चलते हुए आपको यह एहसास होगा कि जैसे आप दिल्ली के कनॉट प्लेस में है। शिकागों में रहने वाले भारतीयों की हर ज़रूरत डिवॉन एवेन्यू में पूरी हो जाती है, चाहे वो शादी की तैयारी हो या फिर कोई और भारतीय तीज, त्यौहार। यहाँ दशकों से रह रहे भारतीयों के लिए मंदिर भी है जिसमें बाला जी मंदिर, स्वामी नारायण मंदिर और इस्कान मंदिर प्रमुख है। इन मंदिरों की भव्यता देखते ही बनती है। मंदिरों की वास्तुकला को देखते हुए यह यकीन कर पाना मुश्किल होता है कि यह शिकागो में स्थित है। मंदिर में दर्शन करने के बाद प्रसाद ग्रहण करना एक अलग आत्मिक संतोष प्रदान करता है।

शिकागो में खानपान की बात की जाए तो यहाँ लगभग 7300 रेस्टोरेंट है जिसमें आपको तरह- तरह के खाने का स्वाद मिलेगा; चाहे वो भारतीय हो, मेक्सिकन हो या इटालियन। भारत के लगभग सभी व्यंजन यहाँ मिल जाएँगे चाहे वो बिरयानी हो या छोले, समोसे हो या जलेबी। अपनी पसंद का देशी खाना खाते हुए आपको ये एहसास भी नहीं होगा कि आप परदेश में

है। शिकागो में इंडिया हाउस, द इंडियन गार्डन, शिकागो करी हाउस और लिटिल इंडिया जाने माने इंडियन रेस्टोरेंट है, जहाँ का खाना आपको भारत की याद दिला देगा। पिज्जा, बर्गर, डोनेट और सबवे की शृंखला तो यहाँ आपको राह चलते दिख जाएँगी। मज़ेदार बात यह कि इनके मालिक अधिकतर भारतीय हैं।

जब भी किसी शहर की बात होती है तो वहाँ पर स्थित कुछ प्रसिद्ध इमारतों का ज़िक्र होना लाज़मी है, उसके बिना वो शहर पूरा नहीं हो सकता। जब भी आप शिकागो घूमने का प्लान बनाएँ तो कुछ प्रसिद्ध चीज़ों को आप ज़रूर देखे, जिनमें से एक मिलेनियम पार्क है जो लगभग 24 एकड़ में फैला हुआ है। इसके बीचों-बीच में एक गुंबद जैसा चमकीला ढाँचा है, जिसे लोग बीन के नाम से भी जानते हैं। इस बीन में आस-पास की सभी इमारतें प्रतिबिंबित होती हैं। बीन आकृति के डिज़ाइन को एक भारतीय आर्किटेक्टर अनीस कपूर ने तैयार किया है। इस पार्क को ही देखने में आपका पूरा दिन निकल जाएगा। गर्मियों में मिलेनियम पार्क में योगा,डान्स, बच्चों के लिए आर्ट, क्राफ्ट से लेकर शारीरिक गतिविधियों के कई कार्यक्रम का आयोजन होता रहता है। आपको यहाँ बॉलीवुड गाने पर थिरकते हुए बहुत से लोग दिख जाएँगे, हिंदी गाने सुनते ही आपके चेहरे पर एक मुस्कान आनी स्वाभाविक है।

शिकागो में इमारतों की वास्तु-कला (Architecture) देखते ही बनती है, हर बिल्डिंग की अपनी अलग वास्तु-कला अपनी अलग पहचान। यहाँ की गगनचुंबी इमारतें पूरे विश्व में प्रसिद्ध है। शिकागो के प्रसिद्ध इमारतों को क्रूज़ द्वारा भी देख सकते है। क्रूज़ में गाइड सभी इमारतों के विषय में जानकारी देता है जिससे इमारतों को देखने का मज़ा और भी दुगुना हो जाता है। अगर आप बच्चों के साथ है तो फील्ड म्यूज़ियम, साइंस म्यूज़ियम, शेड एक्वेरियम और प्लैनेटेरियम देखना ना भूले।

यहाँ के फील्ड म्यूज़ियम में सैकड़ों तरह के डायनासोर बनाएँ गए हैं जिनमें से एक डायनासोर का नाम ''Sue'' जिसका 95' भाग रियल फॉसिल से बना हुआ है। जिसको देखना बच्चों के लिए बहुत रोमांचकारी होता है। जहाँ साइंस म्यूज़ियम में बच्चों को बड़े- बड़े जहाज़ों के बारे में जानने को मिलता है वहीं दूसरी तरफ चक्रवात का निर्माण कैसे होता है यह भी पता चलता है।

शेड एक्वेरियम दुनिया का सबसे बड़ा इनडोर एक्वेरियम है और अपनी तरह के पहला समुद्री मछलियों का संग्रह है। एक्वेरियम टैंक की कुल क्षमता 5 मिलियन गैलन पानी स्टोर कर सकती है और 32,500 से अधिक मछलियाँ यहाँ मिलतीं है। अमेज़ॅन राइजिंग, कैरेबियन रीफ, एबॉट महासागर, ध्रुवीय प्ले ज़ोन, वाटर्स ऑफ द वार्ड्स और वाइल्ड रीफ समेत प्रमुख प्रदर्शनों को देखने के लिए यह बेहतरीन जगह है।

शिकागो प्लैनेटेरियम में सभी ग्रहों के बारें में बच्चे विस्तार से जान और समझ सकते है।

शिकागो शहर को देखने के बाद नेवी पियर में झील के किनारे परिवार के साथ चलने का मज़ा कुछ और ही होता है। यहाँ पर अपको आईमैक्स थियेटर, फेरिस व्हील, गोल्फ कोर्स, शेक्सपियर थिएटर चिल्ड्रन म्यूज़ियम, अमेज़िंग शिकागो फनहाउस मेज़, नेवी पियर फेस्टिव हॉल, ग्रैंड बॉलरूम, पेप्सी स्काईलाइन स्टेज जैसी कई जगहें मिलेंगीं जिनकी वजह से नेवी पियर सभी तरह के लोगों के लिए एक मज़ेदार जगह बन जाता है।

शिकागो के मुख्य आकर्षण में से एक है

विल्लिस टावर(Willis Tower),110 मंज़िलों वाली इस इमारत की ऊँचाई लगभग 1482 फ़ीट है। यह अमेरिका का दूसरा और दुनिया का सोलहवीं सबसे लम्बी ईमारत है। विल्लिस टावर के तकनीक का अँदाज़ा आप इससे ही लगा सकते है कि इसके 103वें मंजिल पर पहुँचने में सिर्फ 60 सेकंड लगते है, टॉप फ्लोर से शिकागो सिटी की खूबसूरती देखते ही बनती है। विल्लिस टावर को स्काई डेक (Sky deck) के नाम से भी जाना जाता है।

अपनी यात्रा समाप्त करने से पहले शिकागो बोटैनिकल गार्डेन (Chicago Botanical Garden) ज़रूर देखे। यह चालीस साल से भी अधिक पुराना और 325 एकड़ में फैला हुआ है। बरसात के मौसम में इसकी खूबसूरती और भी बढ़ जाती है। यह दुनिया के प्रसिद्ध अनुसन्धान केंद्रों में से एक है। गार्डन में विशाल बोनसाई का संग्रह भी है। ये विशाल गार्डेन फूलों, सब्जियों के साथ-साथ अनेकों प्रकार के पौधों की सैकड़ों प्रजातियों से सुसज्जित है। गार्डेन के कुछ भाग इतने सुन्दर है कि ऐसा लगता है आप किसी कहानी वाले परी के देश में चले गए हो।

जब शिकागो की बात हो रही है तो आपको बताते चलें हिंदी मूवी ''धूम-3'' की शूटिंग यहाँ के कई हिस्सों में लगभग तीन महीनों तक हुई थी, जिसमें मिलेनियम पार्क, नेवी पियर, सिटी नेशनल बैंक, स्टेट स्ट्रीट आदि प्रमुख है। यहाँ रहने वाले भारतीयों ने भी धूम-3 की शूटिंग को देखने का खूब आनंद उठाया था।

शिकागो, एक सपनों का शहर है जो अपनी खूबसूरती से लोगों को लुभाता है। हर समय भागते रहने वाला यह शहर शाम को जगमगाता हुआ बहुत ही सुंदर प्रतीत होता है।

***

प्रदीप चौबे - कोई बतलाए कि हम बतलाएँ क्या

वीरेन्द्र जैन

संपर्क : 2/1 शालीमार स्टर्लिंग, रायसेन रोड, अप्सरा टाकीज के पास, भोपाल (म.प्र.) 462023
मोबाइल: 09425674629

किसी भी लोकप्रिय व्यक्ति के मित्र होने का दावा बहुत लोग करते हैं, जबकि वह उतने लोगों से घनिष्ठता नहीं रख पाता, पर मेरे और प्रदीप चौबे के रिश्ते तब बने थे जब वे उतने लोकप्रिय नहीं थे। जितने बाद में हो गए थे। हम लोग पत्रिकाओं में साथ-साथ प्रकाशित होना शुरू हुए। तब लिखने वालों की इतनी भीड़ नहीं हुआ करती थी और प्रमुख पत्रिकाओं में प्रकाशित रचनाएँ लिखने-पढ़ने का शौक रखने वाले लोग पढ़ लिया करते थे। तब किताबों के प्रकाशन की भी आजकल जैसी बाढ़ नहीं आई थी। 1977 के किसी माह में जबलपुर से प्रकाशित होने वाली पत्रिका व्यंग्यम में हम लोग साथ-साथ मय पते के छपे तो उन्हें पता चला कि मैं भी बैंक की नौकरी में हूँ। हम दोनों लोगों ने एक दूसरे को एक ही तारीख को पत्र लिखे और हमारे वे पहले पत्र क्रास कर गए। दोनों ने एक दूसरे की रचनाओं की तारीफ एक साथ की थी, इसीलिए वह 'अहो रूपम अहो ध्वनिम' नहीं थी। तब से लगातार हम लोगों के बीच पत्र व्यवहार रहा। मज़े की बात तो यह है कि तब वे अपने डील डौल के कारण अलग से पहचान में आने वाले प्रदीप नहीं थे और तब टीवी, इंटरनैट भी नहीं था। इसलिए 1982 में जब नागपुर में हम लोगों की पहली मुलाकात निश्चित हुई तब प्रदीप ने लिखा था कि मैं हरे रंग का स्वेटर पहने होऊँगा उससे पहचान लेना। मैं तब नागपुर में पदस्थ था। बाद में मेल मुलाकातों के किस्से तो बहुत सारे हैं। प्रदीप क्रमशः मंच पर लोकप्रिय होते गए और उन्होंने समझदारी यह की, कि बैंक में प्रमोशन नहीं लिया और कैशियर ही बने रहे, जिससे उन पर कोई बन्धन लागू नहीं हुआ। इससे उन्हें कवि सम्मेलन

के मंचों पर जाने के लिए भरपूर स्वतंत्रता मिली।

वरिष्ठ व्यंग्य कवि माणिक वर्मा की तरह प्रदीप भी मूलतय: ग़ज़लगो थे। व्यंग्यजल नाम उन्होंने ही दिया। एक तरह से हिन्दी में स्टेंडअप कामेडी के जनक वे ही थे। बाद में शरद जोशी गद्य व्यंग्य पाठ लेकर मंच पर अवतरित हुए, जिसकी शुरूआत मिनी गद्य रचनाओं से प्रदीप कर चुके थे। शरद जोशी भी मंच पर पढ़ने के लिए जिन रचनाओं को तैयार करते थे, उनमें एक ही विषय पर छोटी-छोटी फब्तियाँ संकलित की हुई होती थीं। शरद जोशी ने इस कला में महारत हासिल कर ली थी। प्रदीप और शरद जी दोनों ही लोगों को रचना पाठ की राष्ट्रव्यापी ख़्याति रामावतार चेतन के चकल्लस के मंच से मिली थी। मैं भी चेतन जी के आत्मीय लोगों में से था और इस प्रकार चकल्लस परिवार का सदस्य था, यद्यपि उनकी पत्रिका रंग में निरंतर छपने वाला मैं कभी चक्कलस के मंच पर नहीं गया, जबकि चेतन जी ने मेरे संकलन से रचना भी चुन कर रखी थी कि चकल्लस के मंच पर मुझे कौन सी रचना पढ़नी चाहिए।

प्रदीप के साथ मेरी एक और समानता थी, उन्होंने ग्वालियर में जो एकल काव्य/रचना पाठ का महत्त्वपूर्ण कार्यक्रम शुरू किया था वैसा ही उससे पूर्व कभी मैंने सोचा था। भरतपुर में एक समिति भी बना ली थी जिसमें मंच के ही एक और कवि धनेश फक्कड़ भी साथ थे। पहले कवि के रूप में निर्भय हाथरसी का चयन भी कर लिया था किंतु प्रदीप जैसी कर्मठता के अभाव में योजना को कार्यान्वित नहीं कर सका। बहुत बाद में जब प्रदीप ने उसे पूरा कर दिखाया तो मुझे अपनी जैसी योजना के सफल होने पर बहुत खुशी हुई थी, लगा था कि मैं गलत नहीं सोच रहा था। प्रारम्भ संस्था की रचना पाठ की इस शृंखला में उन्होंने देश के प्रमुख रचनाकारों को क्रमश: बुलाया, जिसमें कृष्ण बिहारी नूर और के पी सक्सेना सहित एक दो और कार्यक्रम सुनने का अवसर मुझे भी मिला। इस वार्षिक कार्यक्रम में ग्वालियर नगर के सुधी श्रोता और समर्थ साहित्य प्रेमी स्वरुचि से एकत्रित होते थे। भरोसा जगता था कि साहित्य के प्रति प्रेम अभी ज़िन्दा है व सम्प्रेषणीय साहित्य ही प्रेमचन्द, और

परसाई की परम्परा को आगे बढ़ाएगा।

प्रदीप बेलिहाज़ होकर खुल कर बात करते थे। जबकि मेरे अन्दर सदैव एक संकोच सा रहा। मैं सोच कर बोलता रहा कि किसी को बात बुरी न लग जाए। प्रदीप और ज्ञान चतुर्वेदी दोनों की स्पष्टवादिता मुझे पसन्द रही है; क्योंकि मेरे खुद के अन्दर उसका अभाव रहा है। वे देश के सुप्रसिद्ध कवि शैल चतुर्वेदी के सगे छोटे भाई थे जिसका पता मुझे तब लगा जब आगरा में आयोजित उनके परिवार में होने वाले विवाह समारोह का आमंत्रण मिला। उन्होंने न तो अपनी पहचान शैल चतुर्वेदी के भाई के रूम में बनाई और न ही उनके भाई होने को ही भुनाया।

उनके कृतित्व को हास्यकवि तक सीमित नहीं किया जा सकता, भले ही वे हास्य व्यंग्य के शिखर के कवियों में थे और मंच पर प्रतिष्ठित अन्य कवियों की तुलना में अधिक सारगर्भित रचनाएँ प्रस्तुत करते थे। किसी व्यंग्य विचार को रूपक में ढालने और उसे मंच पर प्रस्तुत करने में वे बेजोड़ थे। वे हास्य व्यंग्य की रचनाओं के पाठ को बैंक की नौकरी की तरह आजीविका का साधन मानते थे, किंतु उनकी असली प्रतिभा का नमूना उनकी गज़लों, और उनके द्वारा सम्पादित और प्रकाशित वार्षिक पत्रिका प्रारम्भ की रचनाओं के चयन में दिखती है जिसके अंकों में दुनिया भर के श्रेष्ठतम ग़ज़लकारों की श्रेष्ठतम रचनाएँ संकलित हैं। एक साक्षात्कार में जब सुप्रसिद्ध कहानीकार और पहल के सम्पादक ज्ञानरंजन से पूछा गया कि आपने कथा लेखन क्यों बन्द कर दिया तो उन्होंने प्रतिप्रश्न किया था कि आप पहल के सम्पादन को रचनाकर्म क्यों नहीं मानते। प्रदीप ने 'प्रारम्भ' में प्रकाशित करने के लिए जिन रचनाओं के अम्बार को खंगाल कर मोती चुने होंगे वह काम कोई सामान्य प्रतिभा का व्यक्ति नहीं कर सकता। वे जिन पत्रिकाओं से जुड़े रहे उनसे उनकी रुचि और समझ का पता चलता है। मैंने दर्जनों बार उनके हाथ में सारिका, धर्मयुग और हंस के अंक देखे और देख कर अच्छा लगा। वे ज़्यादा अपने से लगे।

एक ग़ज़ल में उनका एक मिसरा था- यादों का दरवाज़ा बा है, आना है तो आ जाओ। मैंने पूछा यह 'बा' क्या है, तो बोले तुम रोज़ ही तो प्रयोग करते होगे, जैसे मुँह बाना, अर्थात् खुला हुआ। मैंने इस शब्द का ऐसा प्रयोग पहली बार ही देखा था। ऐसे ही याद आया कि हम लोग अट्टहास के कार्यक्रम में लखनऊ के गैस्ट हाउस में साथ-साथ रुके हुए थे, कि डिनर हेतु आदरणीय उदय प्रताप सिंह जी के साथ जाने का कार्यक्रम बन गया। तब ही पता चला कि आदरणीय नीरज जी भी वहीं रुके हुए हैं तो हम सभी श्रद्धालुओं ने कुछ समय उनके साथ गुज़ारने का मन बनाया। उस दिन नीरज जी ने कहा था कि आप लोग फिल्मी गीतों को ज़्यादा महत्त्व नहीं देते पर शोले के एक गीत में जो कहा गया है कि - स्टेशन से गाड़ी जब छूट जाती है तो एक दो तीन हो जाती है। बताओ इससे पहले इस एक दो तीन हो जाने का प्रयोग हिन्दी के किस गीत में हुआ है। प्रदीप चौबे ने कई नए प्रयोग किए थे। शब्दों की तोड़-फोड़ में निर्भय हाथरसी भी माहिर थे।

पिछले दिनों जब प्रदीप के युवा पुत्र का आकस्मिक निधन भोपाल में हो गया था तब मैं भोपाल में नहीं था, लौट कर आने पर पता चला। सोचा फ़ोन करूँ, पर हिम्मत नहीं हुई। सोचता रह गया, सच्ची सम्वेदना के समय मेरे बोल नहीं फूटते। मुनीर नियाज़ी की वह नज़्म रह-रह कर याद आती है - हमेशा देर कर देता हूँ मैं.....।

प्रदीप जी भी चले गए। जिन विशिष्ट लोकप्रिय लोगों से मित्रता के दम पर खुद के हीनता बोध को ढक लिया करता था, वे घटते जा रहे हैं। प्रकृति का नियम ही है।

***

विश्व साहित्य में नारी स्वर

उर्मिला कुमारी

संपर्क: शोधार्थी, हिंदी विभाग, विनोबा भावे विश्वविद्यालय, हज़ारीबाग (झारखण्ड)-825301
मोबाइल: 8092469033

मानव सभ्यता में पुरुषों का वर्चस्व सदा से रहा है। उसने हमेशा स्त्री को अपने अधीन रखना चाहा है। स्त्री पर अधिकार जमाए रखने के लिए पुरुषों ने भी एक नियमों का निर्माण कर उन्हें शोषित बनाए रखा। दुनिया की मानवी सभ्यता में यही होते रहा है। आधुनिक युग से पूर्व और लगभग हर समय स्त्रियों ने ऊपर उठने का प्रयास किया है।

बदलते परिवेश में नई स्त्री के लिए पूर्व निर्धारित आचार संहिता में परिवर्तन के फलस्वरूप सामाजिक आंदोलन का जन्म होता है। उसी का एक स्वरूप आज स्त्री-विमर्श के रूप में उभरकर आया है। ऐसे में कथा लेखक और लेखिकाओं ने अपनी लेखनी के माध्यम से समाज में स्त्री-संघर्ष गाथा को वर्णित किया है। किंतु ऐसा माना जाता है कि स्त्री भोक्ता है, अत: वह अपने वर्ग की पीड़ा को अधिक प्रमाणिकता के साथ व्यक्त कर सकती है। इस विषय में महादेवी वर्मा का कथन है कि- ''पुरुष के द्वारा नारी का चित्रण अधिक निकट पहुँच सकता है, किंतु यथार्थ के समीप नहीं। पुरुष के लिए नारीत्व अनुमान है नारी के लिए अनुभव। अत: अपने जीवन का सजीव चित्र वह हमें दे सकेगी, वैसा पुरुष बहुत साधना के बाद भी शायद ही दे सके।''1

वास्तव में स्त्री-विमर्श समयानुरूप समाज में स्त्री-जीवन की वास्तविकताओं और संभावनाओं को खोजने की दृष्टि है। वर्त्तमान में इस विषय पर विश्व स्तर पर विमर्श किया जा रहा है। लेकिन इस संघर्ष की वास्तविक आरंभ 17-18वीं सदी में पाश्चात्य देशों से

प्रारंभ माना जाता है। स्त्री की स्थिति विश्व के हरेक देश में दोयम दर्जे की रही है। पुरुष अपने से कमतर समझकर उनके अधिकारों का हनन करते आए हैं। यहाँ तक कि उन्हें मानवीय इकाई भी नहीं समझा गया है। तभी तो गुप्त जी ने 'पंचवटी' में कहा है कि

'नर तो शास्त्रों का बंधन, सब ही है नारी को लेकर।

अपने लिए सभी सुविधाएँ पहले ही कर बैठे नर॥

स्त्री को केवल भोग्या के रूप में देखा गया है। प्रसिद्ध दार्शनिक अरस्तु ने नारी की परिभाषा इस प्रकार दी है- ''औरत कुछ गुणवत्ताओं की कमियों के कारण ही औरत बनती है। हमें स्त्री के स्वभाव से यह समझना चाहिए कि प्राकृतिक रूप में उसमें कुछ कमियाँ है। वह एक प्रासंगिक जीव है। वह आदम की एक अतिरिक्त हड्डी से निर्मित है।''2

स्त्री चेतना एक विचारधारा बनने से पूर्व स्त्री मुक्ति आंदोलन शुरू हो चुका था। धर्म के नाम पर होनेवाले शोषण के विरुद्ध फ्रांस और जर्मनी में सर्वप्रथम 12वीं सदी में और तत्पश्चात् अन्य देशों में भी स्त्रियों का एक दीर्घ आंदोलन हुआ जिसमें औरतें अपने घरों को छोड़कर आर्थिक आत्मनिर्भरता हासिल कर समूह में बिना मर्दों के रहने लगी थीं। इसके अलावा वे बिना पुरुष पादरियों के अपने चर्च बनाकर रहने लगी। इस आंदोलन को 'बागीन मूवमेंट' (Beguine Movement) का नाम से जाना जाता है।

स्त्री चेतना के इस आंदोलन को समझने हेतु अंतरराष्ट्रीय स्तर पर घटित होनेवाली इन चार विशिष्ट घटनाओं को जानना आवश्यक हो। ''एक 1789 की फ्रांसिसी क्रांति जिसने स्वतंत्रता, समानता और बंधुत्व जैसी चिरवांछित मानवीय आकांक्षाओं को नैसर्गिक मानवीय अधिकार की गरिमा देकर राजतंत्र और साम्राज्यवाद के बरअक्स लोकतांत्रिक शासन व्यवस्था के स्वस्थ और अभिप्सित विकल्प को प्रतिष्ठित किया। दूसरे भारत में राजाराम मोहन राय की लम्बी जद्दोजहद के बाद 1829 में सती-प्रथा का कानूनी विरोध जिसने पहली बार स्त्री के अस्तित्व को मनुष्य के रूप में स्वीकारा। तीसरे 1848 में सिनेका फॉल्स न्यूयार्क में ग्रिमके बहनों की रहनुमाई में आयोजित तीन-सौ स्त्री-पुरुषों की सभा, जिसने स्त्री दासत्व की लम्बी शृंखला को चुनौती देते हुए स्त्री-मुक्ति आंदोलन की नींव रखी और चौथे 1867 में प्रसिद्ध अंग्रेज़ दार्शनिक और चिंतक जॉन स्टुअर्ट मिल द्वारा ब्रिटिश पार्लियामेंट में स्त्री के व्यस्क मताधिकार के लिए प्रस्ताव रखा जाना, जिससे कालांतर में स्त्री-पुरुष के बीच स्वीकारी जाने वाली अनिवार्य कानूनी और संवैधानिक समानता की अवधारणा को बल मिला।..... संयुक्त रूप में ये चारों घटनाएँ उक तरह से विभाजक रेखाएँ हैं, जिसके एक ओर पूरे विश्व में स्त्री-उत्पीड़न की लगभग एक-सी यूनिवर्सल परंपरा है तो दूसरी ओर इससे मुक्ति को लगभग एक-सी तड़प और अकुलाहट की संघर्ष कथा।''3

आधुनिक काल में नारी मुक्ति चेतना की धारा औद्योगिक क्रांति और मानवतावाद में देखा जा सकता है। सर्वप्रथम फ्रांसिसी राज्य क्रांति के समय महिला रिपब्लिकन क्लबों, बिना लिंग भेद के आज़ादी, समानता और मातृत्व के व्यवहार की माँग की थी। लेकिन वास्तविक नारीवादी आंदोलन 1848 में शुरू हुआ जब एलिज़ाबेथ कैडी स्टैण्टन, लूकेसिया कॉफिन मोर आदि ने न्यूयार्क में एक महिला सम्मेलन में स्त्री स्वतंत्रता को लेकर एक घोषणा पत्र जारी किया जिसमें विभिन्न क्षेत्रों में समानता की माँग के साथ मताधिकार की माँग रखी। ''1946 में संयुक्त राष्ट्र संघ में नारी की दशा पर एक आयोग गठित किया गया। नारी मुक्ति आंदोलन को फ्रांस की मशहूर लेखकों सिमोन द बोउवार की पुस्तक 'द सेकेन्ड सेक्स' तथा 1963 में प्रकाशित बेट्टी फ्राइडेन की पुस्तक 'द फेमिनिन मिस्टिक' का विशेष योगदान है। 1966 अमेरिका में राष्ट्रीय महिला संगठन बना जिसकी 1970 के आरंभ तक 400 से अधिक स्थानीय शाखाएँ बन गई थीं। नारी मुक्ति आंदोलन का यह विस्तार अमूतपूर्व था। बेट्टी फ्राइडेन की पुस्तक ने इतनी हलचल मचाई थी कि 1970 तक अमेरिका के तमाम शहरों में महिलाएँ हाथों में पोस्टर लेकर 'हमें आज़ाद करो' के नारे लगाते हुए सड़कों पर उतर गईं। बाद में केट मिलेट की पुस्तक 'सेक्सुअल पालिटिक्स' और जर्मन ग्रीअर की पुस्तक 'फीमेल मूनख' ने इस आंदोलन को इतना अतिवादी रूप दे दिया कि स्त्रियाँ सौंदर्य प्रसाधनों का बहिष्कार करने लगी। सड़कों पर चोलियों की होलियाँ जलने लगी। स्त्री-पुरुष आमने-सामने खड़े हो गए।''4 पुरुष जगत् की अमानवीय षड्यंत्र को सीमोन ने उजागर करते हुए लिखा है- ''स्त्री पैदा नहीं होती बल्कि उसे बना दिया जाता है।''

''1949 में प्रकाशित सिमोन द बोउवा की पुस्तक 'द सेकेंड सेक्स' नारी-विभेद के उपायों का पहला दार्शनिक प्रयास था। सिमोन द बोउवा के अनुसार स्त्रियों की दयनीय स्थिति के लिए जो सामान्यत: धारणा है, वह सही नहीं है। इसके लिए जो जीव वैज्ञानिक मनावैज्ञानिक तथा आर्थिक स्पष्टीकरण दिए जाते हैं, नितांत अस्वीकार्य है। वास्तव में स्त्रियों की दयनीय स्थिति के लिए जो कारक उत्तरदाई हैं, वे हैं- पुरुषों की मानसिकता, स्त्रियों को वस्तु रूप में समझना तथा स्त्रियों द्वारा अपनी इस प्रदत्त स्थिति को स्वीकार लेना। उनकी इस कृति ने महिलावादियों को बहुत प्रेरित किया।''5

इंगलैंड का समाज पुरुष प्रधान रहा है। वहाँ के सामाजिक यथार्थ को परखने का कार्य 19वीं सदी के इंगलैंड का औपन्यासिक कृतियाँ कराती हैं। 19वीं सदी के उपन्यास में छह महत्त्वपूर्ण नाम है- वाल्टर स्कॉट, जेन ऑस्टिन, चार्ल्स डिकेन्स, जार्ज इलियट टॉमस हार्डी और ऐमिली ब्रांटे। इनमें से तीन स्त्री लेखिकाएँ है- जैन आस्टिन, जार्ज इलियट और ऐमिली ब्रांटे। इन तीनों को ही अपने जीवन काल में अपने लेखक होने का तथ्य छुपाना पड़ा। वे निरंतर नारी, व्यक्ति की अस्मिता और पहचान का मसला उठाती थीं। वह निश्चित तौर पर समयबद्ध, इहलौकिक और साहसपूर्ण लेखन था। आलोचक एडवर्ड सईद ने आस्टिन द्वारा लिखित उपन्यास 'मैन्सफिल्ड पार्क' में शोषण की वह तस्वीर देखी है, जिस पर इंगलैंड के उच्च वर्ग की समृद्धि आधारित थी। ऐमिली ब्रांटे ने अपनी कृति 'बुदरिंग हाइट्स' में इंगलैंड के उच्च वर्ग की अमानवीयता दिखलाई। जार्ज इलियट ने 'मिडलमार्च' नामक उपन्यास में सन्यासिनी बनने का सपना देखनेवाली एक बेहद नीतिपरायण युवती को विवाह का निर्णय लेते दिखलाया है। यहाँ नारी पूरे

साहस से समाज, नैतिकता और धर्म के विरोध में खड़ी नज़र आती है। 19वीं सदी से पूर्व के इतिहास को अंधकार युग की संज्ञा दी जाती है। उस समय धर्म और सत्ता का गठजोड़ था। समाज में स्त्री पुरुषों के अधीन थी। हरेक क्षेत्र में स्त्री असमानता की शिकार होती थी। लेखन तो स्त्री के लिए और भी अछूता क्षेत्र था।

19वीं सदी का इंगलैंड आधुनिक बन चुका था। बावजूद स्त्री स्वतंत्रता को अच्छी नज़र से नहीं देखा जाता था। पहली बार महिला लेखिकाएँ- जेन आस्टिन, जार्ज इलियट और एमिली ब्रॉटे ने समाज-धर्म-संस्कृति पर अपने दृष्टिकोण स्पष्ट करती हुई माँग रखती हैं। वे निरंतर नारी अस्मिता और पहचान का मसला उठाती रही थीं। यह नारी-चेतना का उभार अंग्रेज़ी उपन्यास में पहली बार हुआ।

20वीं सदी में भारत पाकिस्तान का उपन्यास साहित्य भी अपनी नवीनता में महत्त्वपूर्ण है। बीसवीं सदी के अंतिम दो-एक दशकों में भारतीय उपन्यास में स्त्री-विमर्श, दलित-आदिवासी लेखन और उत्तर आधुनिकतावादी लेखन भी विशेषकर उभरा है। स्त्री विमर्शों में स्त्रियाँ अपना पक्ष प्रबलतम रूप से रखती हैं और स्त्री को पुरुषों के समान खड़ा करने में संकोच नहीं करतीं। ठीक यही स्थिति पाकिस्तान की भी थी। हिंदी भाषा के आरंभिक उपन्यासकारों में गौरी दत्त (देवरानी जेठानी की कहानी-1870), कल्याणराय, ईश्वरी प्रसाद (वामा शिक्षक-1872) श्रद्धाराम किल्लौरी (भाग्यवती), श्रीनिवास दास (परीक्षा गुरु - 1882), ठाकुर जगमोहन सिंह (श्यामा स्वप्न- 1885), बाल.ष्ण भट्ट (नूतन ब्रह्मचारी - 1886) आदि प्रमुख है। इन सभी उपन्यासों में स्त्री सुधार की भावना प्रबल है। यथार्थवादी उपन्यासकार प्रेमचंद को सामाजिक समस्याओं का चित्रकार कहा गया है। 'सेवासदन', 'निर्मला', 'कर्मभूमि', 'गबन' और गोदान का केन्द्रिय विषय स्त्री-समस्या का चित्रण है। उनकी नारियाँ संघर्ष करती हैं और बदलाव की पक्षधर है।

आधुनिक परिदृश्य में स्त्री भोग्या बनकर केवल देह रह गई है। मृदुला गर्ग ने अपने उपन्यास 'उसके हिस्से का धूप', 'कठगुलाब', और 'चितकोबरा' में स्त्री जीवन के नए पक्षों को साहसपूर्ण अभिव्यक्ति दी है। कृष्णा सोबती ने अपने उपन्यास 'सुरजमुखी अँधेरे के' में कुंठित, अतृप्त, ठंडी और एक पुरुष के साथ मुक्त काम सुख भोगने की इच्छा रखने वाली स्त्री का चित्रण है।

भारतीय भाषाओं के विभिन्न उपन्यासकारों ने नारी संघर्ष और अस्मिता की खोज के कई अनदेखे, अनसोचे और अनहोने पहलुओं को सामने रखा। स्वातंत्र्योत्तर तीन महिला लेखिकाओं ने अपनी विशिष्ट लेखनी से पाठकों का ध्यान विशेष रूप से आकृष्ट किया है। ये है प्रभा खेतान, कृष्णा सोबती और अलका सरावगी। प्रभा खेतान ने विभिन्न संदर्भों, विभिन्न पृष्ठभूमियों, विभिन्न परिवेशों और विभिन्न संस्कृतियों में नारी-नियति का चित्रण किया है, जिसका सारांश 'छिन्नमस्ता' की प्रिया के शब्दों में यह है- ''औरत कहाँ नहीं रोती ? सड़क पर झाड़ू लगाते हुए, खेतों में काम करते हुए, एयरपोर्ट पर बाथरूम साफ करते हुए या फिर सारे ऐश्वर्य-भोग के बावजूद..... पलंग पर रात-रात पर अकेले करवट बदलते हुए.... हज़ारों सालों से इनके ये आँसू बहते चले जा रहे हैं।''6

अनंतकाल से नारी की सामाजिक व पारिवारिक स्थिति का निर्धारण पुरुष वर्ग ही करता आया है। किंतु आधुनिक युग में विचारों की चेतना ने शिक्षित स्त्री के मन को झकझोरा। बेशक चेतना का यह अहसास महानगरीय स्त्री वर्ग तक ही सीमित रहा, किंतु समकालीन लेखिकाओं ने मुक्ति माँग तलाशती नारी को अपनी कृतियों द्वारा उन्हें उनके ही ताकत से परिचय करा अपनी स्वतंत्र सत्ता स्थापित करने को प्रेरित किया। ''यौन संबंधों को लेकर स्त्री देह की शुचिता का प्रश्न हो, पुरुष की हवस का शिकार होती हुई स्त्री का प्रतिक्रियावादी आक्रोश हो, विवाहेतर या विवाहपूर्व पर पुरुष से दैहिक संबंध बनाने की बात हो या फिर स्वेच्छाचारी दंभी पति से किनारा करने का साहस हो, गरज यह है कि बहुत से मिथक जो समाज ने स्त्री के लिए रचे हैं, स्वछंद और स्वायत्त होती महानगरीय स्त्री के द्वारा बिना किसी अपराधबोध के वे किस प्रकार टूट रहे हैं - महिला लेखन के मूल बिंदू बन गए।''7 अमृता प्रीतम (रसीदी टिकट), इस्मत चुगतई (लिहाफ), कृष्णा सोबती (सूरजमुखी अँधेरे के, मित्रों मरजानी), मन्नु भंडारी (आपका बंटी), चित्रा मुद्गल (ऑवा, एक ज़मीन अपनी), ममता कालिया (बेघर), मृदुला गर्ग (कठ-गुलाब), प्रभा खेतान (छिन्नमस्ता, पीली आँधी), मंजुल भगत (अनारो), मैत्रेयी पुष्पा (इदन्नमम्, चाक), शशिप्रभा शास्त्री (सीढ़ियाँ), राजी सेठ (तत्सम), मेहरून्निसा परवेज (अकेला पलाश), मृणाल पांडे (लड़कियाँ), अलका सरावगी (कलिकया वाया बाईपास), नासिरा शर्मा (शाल्मली, ठीकरे की मेंगनी), गीतांजलि श्री (तिरोहित, माई), दीप्ति खंडेलवाल (प्रतिध्वनियाँ, देह की सीता) आदि लेखिकाएँ स्त्री विमर्श को अपने कथा-साहित्य के माध्यम से गति प्रदान कर रही है।

अमृता प्रीतम का 'रसीदी टिकट', कृष्णा सोबती का 'सुरजमुखी अँधेरे के' और 'मित्रो मरजानी' तसलीमा नसरीन की 'मेरे बचपन के दिन', 'द्विखंडिता' व 'उत्ताल हवा' ऐसी चौंकाने वाली आत्मकथात्मक एवं औपन्यासिक कृतियाँ हैं, जिनमें स्त्री सेक्स संबंधी गोपनीय बिंदुओं को बेझिझक बेबाकीपन के साथ उजागर किया गया है।

समकालीन कविता में भी कवयित्रियों ने स्त्री चेतना संबंधी लेखन किया है। कात्यायनी, गगन गिल, अनामिका, निर्मला गर्ग, सविता सिंह, अनिता वर्मा, जया जादवानी, संध्या गुप्ता, सुनीता बुद्धिराजा, स्नेहमयी आदि कवयित्रियों ने स्त्री के बारे में अत्यंत प्रमाणिक व विश्वसनीय वर्णन किया है। एक कविता का अंश इस प्रकार है-

''क्या ले जाऊँ नवजात बच्ची के लिए
मैं ?
थोड़े से वाक्य/किसी फुलवारी से ?
थोड़े से वाक्य/किसी कविता से ?
और यह विश्वास की बड़ी होकर
देखेगी दुनिया को/वह अपनी नज़र से
तोड़ेगी ज़ंजीरें/ज़ंजीरों के भीतर की ज़ंजीरें
माँगेगी आज़ादी/आज़ादी से कुछ कम भी नहीं?''8

जैनेन्द्र के उपन्यास साहित्य में स्त्री केन्द्र

में है। इनके स्त्री पात्र आत्मबल से परिपूर्ण तर्क-वितर्क की क्षमता से युक्त, स्वतंत्र सोच रखनेवाली तथा साहसी है। राजेन्द्र यादव का कथन है- ''जैनेन्द्र में इस स्त्री का एक अपना व्यक्तित्व बनता है। एकदम स्वतंत्र तो नहीं, पर स्वतंत्र होने की कोशिश, स्वतंत्रता की चेतना जैनेन्द्र के स्त्री-पात्रों में दिखाई देती है।''9

प्रेमचन्दोत्तर उपन्यास में यशपाल ने स्त्री को वरण करने की स्वतंत्रता देने का प्रश्न उठाया है। उनके सुप्रसिद्ध उपन्यास 'देशद्रोही', के माध्यम से यह व्यक्त किया गया है कि नारी का भी अपना अस्तित्व है। चंदा कहती है- ''अगर मर्द ब्याह कर ले या मर जाए तो औरत के ब्याह कर लेने में क्या बुराई है।'' उनके दूसरे उपन्यास 'पार्टी कॉमरेड' की गीता नारी की विवशता ओर आत्मसम्मान को जगाते हुए कहती है- ''इस देश में बिना जाने-बुझे पुरुष को पति के रूप में स्वीकार कर लेना क्या स्त्री का आत्मसम्मान है ? कोई स्त्री विवश हो वेश्या बनती है कोई विवश हो पतिव्रता।'' यशपाल की ही 'दिव्या' उपन्यास की सीरो कहती है- ''मैं तुम्हारी क्रितदासी नहीं हूँ। तुम मेरे आश्रित हो, मैं तुम्हारी आश्रिता नहीं।''10

लेकिन आज की नारी परीक्षा देने को विवश नहीं वरन् एक कसौटी बनकर खड़ी है-

''समिधा नहीं रही मैं
हाँ सलीब हो चुकी
कोई उसपर झूला ही नहीं
वरना ईसा मसीह हो जाता।''11

विश्व में साहित्य में घर बैठे विभिन्न वर्गों की स्त्रियों में मुक्ति कामना जागृत करने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई हैं इंगलैंड की लेखिका 'मेरी वोल्स्टनक्राफ्ट ने अपनी पुस्तक 'ए विंडिफिकेशन ऑफ द राइट ऑफवुमैन' में नारी संबंधी रूढ़ मान्यताओं को खण्डन किया है। फ्रांसिसी लेखिका सीमोन द बोउवार की प्रसिद्ध पुस्तक ' द सेकेंड सेक्स' से स्त्री-विमर्श की एक चेतना जागृत हुई जिसने जर्मन ग्रीयर को भी प्रभावित किया। बेट्टी फ्रिडन की 'द फेमिनिन मिस्टिक' विश्व की प्रसिद्ध पुस्तकों में शामिल है। 1903 में रचित इस पुस्तक में मताधिकार के पश्चात् आए परिवर्तन और समाज में स्त्रियों जीवन से प्राप्त अनुभवों का वर्णन है। इसके प्रभावस्वरूप 'विमेन्स लिबरेशन मूवमेंट' के नाम से एक क्रांति का स्वरूप धारण कर लिया। इस आंदोलन में न केवल स्त्रियाँ बल्कि पुरुषों ने भी भागीदारी निभाई।

राजेन्द्र यादव का कहना है- ''जिस प्रकार एक दलित को जन्म और जाति के अपमान से निरंतर गुज़रना पड़ता है, उसी तरह न जाने कितनी यंत्रनाएँ है जिन्हें केवल स्त्री भोगती है। मासिक धर्म, प्रजनन, बलात्कार, परनिर्भरता जैसे न जाने कितने अनुभव हैं, जिन्हें स्त्री के सिवा कोई नहीं जानता।''12 स्त्री मुक्ति सामुदायिक प्रश्न है अत: स्त्रियाँ को साथ मिलकर मुक्ति संघर्ष करने के लिए तत्पर रहना होगा। कमला देवी चट्टोपाध्याय ने 'अवेकेनिंग ऑफ इंडियन वूमेन' में स्त्री मुक्ति आंदोलन को यौनिकता के प्रश्न से बढ़कर माना है। अत: उन्होंने कहा था- ''Men and women acted as souls not as sexes and soulforce was their weapons''13

लगभग विश्व के सभी भागों में स्त्री अपने अधिकारों के प्रति जागरूक न हो सके, ऐसे तमाम बंधनों द्वारा पितृसत्ता उन्हें नियंत्रित करना चाहता है। अपनी प्रखर चिंतन, प्रतिभा और बेबाकीपन से कृष्णा सोबती, बेट्टी फ्रिडन, तसलीमा नसरीन, सीमोन सरीखी लेखिकाओं ने अपनी लेखनी द्वारा स्त्रियों में जागरूकता लाने का प्रयास किया और उन्हें स्वर प्रदान किया।

आज की नारी काफी हद तक अपने अस्तित्व और अस्मिता को लेकर सजग हुई है। वह विभिन्न क्षेत्रों- राजनीति, मीडिया, ज्ञान-विज्ञान, साहित्य आदि के क्षेत्र में अपनी पहचान बनाती नज़र आ रही है। इस बारे में रमणिका गुप्ता का कथन है- दु:खों के दुर्ग में घुटते रहने से बात नहीं बनने वाली। दुर्ग-द्वार खोल देने का समय आ गया है।''14

इतना सब होने के बाद भी चाहे हम जितना भी सभ्य व सुसंस्कृत कहलाए लेकिन समाज में स्त्री को लेकर वास्तविक परिवर्तन अब भी कोसों दूर है। आए दिन स्त्रियों को लेकर विभिन्न प्रकार के शोषण और हिंसा की घटनाएँ हमारे मानव होने पर ही प्रश्नचिह्न खड़ा करता है ?

आज नारी मुक्ति के प्रश्न का समाधान ढूँढ़ने वाले लोगों के लिए कई गंभीर चुनौतियाँ हैं जैसे दहेज, सत्ता में सहभागिता, आर्थिक आत्मनिर्भरता, समान शिक्षा का अधिकार, कानूनी सहायता, वेश्यावृत्ति, धर्माडंबर व अंधविश्वास आदि। इन सभी समस्याओं का निदान पुरुष के खिलाफ लड़ाई से नहीं बल्कि उन्हें साथ लेकर लड़ने से समाधान होगा।

संदर्भ :

1. वर्मा, महादेवी : 'शृंखला की कड़ियाँ', राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली, 1995, पृ0 66

2. सीमोन द बोउवार, स्त्री उपेक्षिता, अनुवाद- प्रभा खेतान, पृ0 23

3. हरिगंधा अगस्त-2003, डॉ0 रोहिणी अग्रवाल, लेख- स्त्री विमर्श के संदर्भ में समकालीन हिंदी कथा साहित्य, पृ0 29

4. हिंदी अनुशीलन, जून-2004, लेखक नारी विमर्श के निहितार्थ, अमरनाथ शर्मा, पृ0 58

5.हिंदी अनुशीलन, जून-2004, आलेख-लिंग समानता नारीवाद और स्त्री-विमर्श, कमलेश सिंह, पृ0 102

6. हिन्दी साहितत्य का इतिहास, संपादक डॉ0 नागेन्द्र, हरदयाल, पृ0 724

7. हिन्दी अनुशीलन, लेख-स्त्री-विमर्श का साहित्यिक संदर्भ, जून-2004, निर्मलाअग्रवाल, पृ0 65

8. निर्मला गर्ग, हंस-जनवरी-2000

9.नया ज्ञानोदय, फरवरी-2011, पृ0 23

10. दृष्टिपात मार्च-2013

11. नारी एक सफर, संपा0 दिनेश नंदिनी डालमिया, संतोष गोयल, लेखिका-सुनीता शर्मा, तुम गवाह हो), पृ0 16

12. राजेन्द्र यादव, सदी का औपन्यासिक अंत, पृ0 167

13. वागर्थ, जनवरी-2006, परमानन्द श्रीवास्तव, उत्पीड़न और मुक्ति आख्यान, पृ0 10

14. वागर्थ, फरवरी-2006, अनामिका : हादसे-हद चले सो मानया, पृ0 85

***

मीठी नींद - मीठे सपने

शशि पाधा

नींद तो बेशक मीठी होती है लेकिन मीठे सपने? आश्चर्यचकित तो नहीं हो रहे आप ? सच कहूँ तो मुझे कई बार एक सपना आता है जो मेरी जीह्वा पर मिश्री घोल के रख देता है। आँख खुलते ही ऐसा लगता है जैसे कोई मिठाई मुँह में घुल रही हो। सपनों की कोई आयु नहीं होती। वे देश काल लाँघ कर आपकी आँखों के बिछौने पर आ कर चुपचाप बैठ जाते हैं और ले जाते हैं आपको एक ऐसे स्थान पर, उन गलियारों में जहाँ कभी आपने कोई सुखद पल बिताए हों।

कहते हैं सपनों का आपके अवचेतन मन से सम्बन्ध रहता ही है। वो मन के किसी गिरह में बंधे रहते हैं और कभी-कभी गहरी नींद में उस गिरह से झाँक कर आपके साथ खेलते हैं। भला सपनों की बात के साथ मैं खेल का क्यों रिश्ता जोड़ रही हूँ ? इसलिए कि जो मीठा सपना मैं इस उम्र में भी देखती हूँ वो मुझे मेरे खोए हुए बचपन में ले जाता है, जिस उम्र में मैं बहुत मीठा खाती थी और बस खेल में ही अपना समय बिताती थी। अब तक तो आपकी जीह्वा पर भी मिश्री घुलने लगी होगी। तो चलिए, ले जाती हूँ आपको अपने बचपन के उस घर में जहाँ के सपने देखती हूँ।

जम्मू शहर की पंजतीर्थी गली में हमारा घर था। यह गली बाज़ार और राज महलों को जोड़ती थी। गली तो क्या मानों एक भरा-पूरा परिवार ही इसमें रहता था। मुझे बड़ी देर बाद इस बात की समझ आई थी कि आस- पास रहने वाले सभी को मैं मामा-मामी या मौसा मौसी क्यूँ पुकारती थी। सुना था कि मेरी ननिहाल का घर भी कभी इसी गली में था। तो

संपर्क: 10804, Sunset hills Rd,
Reston Virginia 20190
ई-मेल: shashipadha@gmail.com
मोबाइल:203-589-6668

रिश्ता तो ननिहाल का ही जुड़ेगा न? उन दिनों दिन भर तो कई लोग कुछ न कुछ बेचने के लिए आते थे। कभी खिलौने वाला, कभी गुब्बारे वाला, कभी कचालू वाला और कभी मलाई बर्फ वाला। मज़े की बात यह थी कि हर एक बेचने वाले का आवाज़ लगाने का अपना-अलग ही ढंग होता था। हम बच्चे उनकी आवाज़ सुन कर ही पहचान जाते थे कि क्या बिकने आया है।

लेकिन एक आवाज़ थी जो सब से मीठी थी।बिलकुल मिश्री में घुली हुई। यह याद नहीं आ रहा कि मौसम कौन सा होता था। शायद सर्दियों का मौसम होगा। रात के समय लगभग 8 या 9 बजे हमारे घर से थोड़ी दूर से एक आवाज़ आती थी जो घंटी की आवाज़ के साथ ही सुनाई पड़ती थी.....

खंड दे खिलौने
घड़ी दे परौने
निक्के निक्के मिट्ठे
ते किन्ने सौने सौने
....टन-टन - टन -टन....
(खांड के खिलौने
घड़ी भर के मेहमान
छोटे- छोटे मीठे
कितने मन भाते
टन - टन टन.....)

उन घंटियों की मीठी आवाज़ सुनते ही मैं अपने पिता की उँगली पकड़ कर बड़े दरवाज़े के पास खड़ी हो जाती थी और बड़ी बेसब्री से उस खिलौने बेचने वाले की प्रतीक्षा करती थी। धीरे-धीरे और भी बच्चे गली में पहुँच जाते थे।

यह खिलौने बेचने वाला अन्य खिलौने बेचने वालों से बिलकुल भिन्न था। यह रात को आता था। इसके पास जो खिलौने होते थे वे खांड और मेवे के मिश्रण से बने होते थे। अधिकतर यह बच्चों के प्रिय खिलौने या पक्षियों की सूरत में बने होते थे। इन पर हल्का रंग भी चढ़ा होता था। स्वाद ऐसा कि शब्दों में बता पाना अभी तक मेरे लिए कठिन। जैसे कबीर ने कहा है न -'गूँगे केरी सरकरा, खाए और मुस्काए'।

उसका खंड के खिलौने बेचने का ढंग भी सब से भिन्न था। वे अपने काँधे पर एक काँवर रख कर आता था।('काँवर' यानी बाँस डंडी के दोनों ओर डोरियों से बँधी दो बड़ी-बड़ी टोकरियाँ)- अगर पाठकों ने

श्रवण कुमार की कथा पढ़ी हो तो जैसी काँवर में श्रवण कुमार ने अपने माता-पिता को बिठा कर तीर्थ कराए थे, बिलकुल वैसी ही थी इसकी भी काँवर। अब समझ आता है कि वो खंड के खिलौनों को घड़ी भर के परौने (मेहमान) क्यूँ कहता था, क्यूँकि मुँह में धरते ही वे मिनटों में घुल जाते थे।

हम बच्चे और बड़े सभी मीठे खिलौने वाले को भैया कह कर पुकारते थे। शायद इस लिए भी कि वो जम्मू से नहीं थे और डोगरी नहीं बोलते थे। हम सब के साथ वो भोजपुरी में बात करते थे। हमारे लिए वो यू0पी वाले भैया थे।

उन की काँवर की एक और विशेषता थी। दोनों टोकरियों में दो छोटी-छोटी लालटेनें रखी होती थीं ताकि बच्चे अपनी मनपसंद का खिलौना देख सकें। भैया के हाथ में एक घंटी होती थी जिसकी मधुर आवाज़ हमें आकर्षित करती थी।

भैया बोलते भी बहुत मीठा थे। एक तो उनकी बोली हमारी डोगरी से अलग और फिर वो हम बच्चों को गुड्डी, मुनिया, रानों, परी आदि प्यारे-प्यारे नामों से पुकारते थे। यह खिलौने पत्ते के दोने में सजे होते थे। भैया बड़े प्यार से दोना उठा कर बड़े नाज़ुक ढंग से हमारे हाथ में रख देते थे। उन्हें शायद यह बात पता थी कि इस लेन-देन में मिठाई कहीं नीचे न गिर जाए। क्यूँकि उन दिनों हमारे हाथ तो उस दोने से भी छोटे होते थे। मुझे याद है मेरे पिता जी कुछ देर यू.पी वाले भैया से बतियाते थे, हाल-चाल पूछते थे और फिर वो मीठी हाँक लगाता हुआ अपनी काँवर लेकर अगली गली की ओर बढ़ जाता था। जब तक मैं अपने कमरे में बैठ के उस मिठाई को चाव से खा रही होती थी तब तक अगली गली से भी घंटियों के मीठे सुर सुनाई देते रहते थे ...खंड दे खिलौने....घड़ी दे परौने...टन-टन-टन-टन।

मीठे खिलौने वाले भैया बोली से तो मीठे थे ही, दिल से और भी मीठे। पता है क्यूँ ? उनकी काँवर की टोकरी में रंगीन कागज़ में लिपटे खांड के छोटे-छोटे मोर, गुड़िया, तितली, फूल आदी की शक्ल में बने खिलौने होते थे जो वे हमें अपनी खुशी से बिना माँगे दे देते थे। हमारी डोगरी भाषा में इस छोटी सी, बिना मोल चुकाए मिली भेंट को *'चुंगा' कहा जाता था। यह 'चुंगा' हमारी उस दिन की सब से बड़ी उपलब्धि होती थी। अब क्या बताऊँ कि उस चुंगे का स्वाद बड़े खिलौने से भी अधिक होता था। हम पहले उसे खाते थे और फिर बड़े वाले को। मुझे याद आता है कि हम बच्चे जब भी किसी दुकानदार से टॉफ़ी वगैरह लेने जाते थे तो पैसे देने के बाद चुपचाप खड़े रहते थे। उदार दुकानदार बच्चों को छोटी सी एक टॉफ़ी या चूर्ण की गोली बिना मोल के दे देता था।(हमारा और दुकानदार के बीच चुंगे का भी एक रिश्ता था)

एक बात और याद आती है। कई बार मैं सो जाती थी भैया की प्रतीक्षा करते हुए। लेकिन सुबह उठते ही पिता सब से पहले वो दोना मुझे थमाते और कहते, '' कहा भी था उस भैया को कि गुड्डी सो गई है, आज नहीं चाहिए, पर घर के अंदर आ कर दे गया तुम्हारे लिए। पता नहीं कैसा है, आज तो पैसे लेने से भी इनकार कर दिया। कहता था -गुड्डी तो सो गई तो पैसे किससे लेने।''

अब यह बातें याद करती हूँ तो मन भर आता है। हम बड़े हो गए। शहर छूट गया, देश छूट गया। अब बाज़ार में अनगिन प्रकार की मिठाइयाँ मिलती हैं। लेती भी हूँ, खाती भी हूँ और बनाती भी हूँ। लेकिन इन सब मिठाइयों में न वो रिश्तों की मिठास है, न नेह की घंटियों की टन-टन और न भैया का वो दुलार। मीठा तो सब जगह मिलता है पर---- वो मीठे वाला मीठा नहीं जो उन खंड(चीनी) के खिलौनों में था। उनके सपनों से अब भी नींद कभी-कभी शहद घुली हो जाती है।

***

अप्रैल की एक सुखद सुबह सौ प्रतिशत सम्पूर्ण लड़की को देखने पर

मूल कथा : हारुकी मुराकामी
अनुवाद : सुशांत सुप्रिय

बहुत से अंतरराष्ट्रीय सम्मानों से सम्मानित हारुकी मुराकामी जापानी लेखक हैं। हारुकी मुराकामी जापान के बेस्ट सेलर लेखक तो हैं ही, अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भी बहुत लोकप्रिय हैं, इनकी पुस्तकें और कहानियाँ विश्व में खूब पढ़ी जाती हैं। पचास से अधिक भाषाओं में इनकी कहानियों का अनुवाद हुआ है।

संपर्क: A-5001, गौड़ ग्रीन सिटी, वैभव खंड, इंदिरापुरम्, ग़ाज़ियाबाद - 201014 (उ. प्र.)
ई-मेल : sushant1968@gmail.com
मोबाइल : 8512070086

अप्रैल की एक सुखद सुबह टोक्यो के फ़ैशन-परस्त हराजूकू इलाक़े की एक तंग गली में मैं सौ प्रतिशत सम्पूर्ण लड़की की बग़ल से गुज़रता हूँ।

आपको सच बताता हूँ, वह दिखने में उतनी सुंदर नहीं है। भीड़ में वह अलग-से दिखे, वह ऐसी नहीं है। उसने जो कपड़े पहने हुए हैं, वे भी विशिष्ट नहीं हैं। वह उतनी युवा भी नहीं है - वह लगभग तीस वर्ष की होगी, और आप उसे उस अर्थ में ' लड़की ' भी नहीं कह सकते। किंतु फिर भी मैं पचास गज़ की दूरी से यह जान गया हूँ कि वह मेरे लिए सौ प्रतिशत सम्पूर्ण लड़की है। जैसे ही मेरी निगाह उस पर पड़ती है, मेरे हृदय में एक हलचल होने लगती है, और मेरा मुँह किसी रेगिस्तान की तरह सूख जाता है।

सम्भवत: आपको भी कोई विशेष प्रकार की लड़की पसंद होगी - वह जिस के टखने पतले हों, या आँखें बड़ी हों, या उँगलियाँ मनोहर हों, या आप बिना किसी विशेष कारण के ऐसी लड़कियों के प्रति आकर्षित हो जाते हों जो अपना भोजन समाप्त करने में समय लेती हैं। ज़ाहिर है, मेरी भी अपनी पसंद हैं। कभी-कभी किसी रेस्तराँ में मैं अपने-आप को अपने बग़ल की मेज़ पर मौजूद लड़की को ग़ौर से देखता हुआ पाता हूँ क्योंकि मुझे उसकी नाक का आकार पसंद है।

लेकिन कोई भी इस बात को लेकर अड़ नहीं सकता कि उसकी सौ प्रतिशत सम्पूर्ण लड़की को किसी ख़ास तरह के अनुरूप ही होना चाहिए। हालाँकि मुझे नाक पसंद है, किंतु मुझे उसकी नाक का आकार याद नहीं। यहाँ तक कि मुझे यह भी याद नहीं कि उसकी नाक थी भी या नहीं। मुझे बस एक ही बात याद है : वह बला की ख़ूबसूरत नहीं थी। यह अजीब है।

''कल एक गली में मैं सौ प्रतिशत सम्पूर्ण लड़की की बग़ल से गुज़रा,'' मैं किसी से कहता हूँ।

''अच्छा ?'' वह कहता है। ''वह ख़ूबसूरत रही होगी।''

''नहीं, ऐसा तो नहीं था।''

''तो फिर वह उस तरह की लड़की होगी जिन्हें तुम चाहते हो।''

''मुझे पता नहीं। मुझे उसके बारे में कुछ भी याद नहीं आ रहा - यहाँ तक कि उसकी आँखों या उसके उरोज़ों का आकार भी याद नहीं आ रहा।''

''यह तो अजीब बात है।''

''हाँ, यह अजीब है।''

''तो फिर तुमने क्या किया ?'' ऊबते हुए वह पूछता है, ''क्या तुमने उससे बात की ? या उसका पीछा किया ?''

''नहीं। केवल सड़क पर उसके बग़ल से गुज़रा।''

वह चल कर पूरब से पश्चिम की ओर जा रही है, जबकि मैं पश्चिम से पूरब की ओर जा रहा हूँ। यह वाक़ई अप्रैल की एक सुखद सुबह है।

काश, मैं उससे बात कर पाता। आधे घंटे की बातचीत काफ़ी होगी : उससे उसके बारे में पूछूँगा, उसे अपने बारे में बताऊँगा, और यह भी बताऊँगा कि दरअसल मैं क्या करना चाहता हूँ। मैं उसे भाग्य की जटिलताओं के बारे में बताऊँगा जिसकी वजह से हम दोनों 1981 की एक सुखद सुबह हराजूकू इलाक़े की एक गली में एक-दूसरे की बग़ल से गुज़र रहे हैं। यह तो निश्चित रूप से उत्साहित करने वाले रहस्य से भरी हुई बात होगी। जैसे एक प्राचीन घड़ी तब टिक्-टिक् कर रही हो जब पूरे विश्व में शांति हो।

आपस में बात करने के बाद हम कहीं दोपहर का भोजन ले सकते हैं। शायद हम वूडी ऐलेन की कोई फ़िल्म भी साथ-साथ देखने चले जाएँ या किसी होटल में थोड़ी शराब पीने के लिए रुक जाएँ। यदि क़िस्मत ने साथ दिया तो कौन जाने, हम हमबिस्तर भी हो जाएँ।

मेरे हृदय के द्वार पर अपार सम्भावनाएँ दस्तक दे रही हैं। अब हम दोनों के बीच की दूरी कम हो कर महज़ पंद्रह गज़ रह गई है।

मैं उससे कैसे बात करूँ ? मैं उसे क्या कहूँ ?

''नमस्ते। क्या आप मुझसे बात करने के लिए आधे घंटे का समय निकाल सकती हैं?''

बकवास। ऐसा कहते हुए मैं किसी बीमा एजेंट की तरह लगूँगा।

''क्षमा करें। क्या आपको पड़ोस में स्थित रात भर खुली रहने वाली किसी गंदे कपड़े धोने वाली दुकान की जानकारी होगी?''

नहीं। यह भी उतना ही हास्यास्पद होगा। एक तो मेरे पास धुलने के लिए दिए जाने वाले गंदे कपड़े नहीं हैं। फिर ऐसी पंक्ति भला किस पर प्रभाव डालेगी।

शायद सीधी-सादी सच्चाई से काम बन जाए। ''नमस्ते। आप मेरे लिए सौ प्रतिशत सम्पूर्ण लड़की हैं।''

नहीं। वह मेरी बात पर यक़ीन नहीं करेगी। माफ़ कीजिए, वह कह सकती है, मैं आप के लिए सौ प्रतिशत सम्पूर्ण लड़की हो सकती हूँ, पर आप मेरे लिए सौ प्रतिशत सम्पूर्ण लड़का नहीं हैं। यह हो सकता है। और यदि मैंने खुद को ऐसी स्थिति में पाया तो मैं टूट कर बिखर जाऊँगा। मैं इस सदमे से कभी नहीं उबर पाऊँगा। मेरी उम्र बत्तीस साल है, और बढ़ती उम्र का सामना करना आसान नहीं होता।

हम फूल बेचने वाली एक दुकान के सामने से गुज़रते हैं। गरम हवा का एक छोटा-सा झोंका मेरी त्वचा को छू जाता है। डामर गीला है और मेरी नासिकाओं में गुलाब की सुगंध प्रवेश करती है। मैं उस लड़की से बात करने की हिम्मत नहीं जुटा पाता। उसने एक सफ़ेद स्वेटर पहना हुआ है, और अपने दाएँ हाथ में उसने एक कड़क सफ़ेद लिफ़ाफ़ा पकड़ा हुआ है जिसमें डाक-टिकट का नहीं लगा होना ही एकमात्र कमी है। अच्छा, तो उसने किसी को पत्र लिखा है। शायद उसने यह पत्र लिखने में पूरी रात लगा दी हो। उसकी आँखों में भरी नींद को देखने से तो यही लगता है। इस लिफ़ाफ़े में लड़की के सारे गोपनीय रहस्य छिपे हुए हो सकते हैं।

मैं कुछ क़दम और आगे बढ़ाता हूँ और फिर मुड़ जाता हूँ : वह लड़की भीड़ में खो गई है।

अब, ज़ाहिर है, मैं बिल्कुल जानता हूँ कि मुझे उस लड़की को क्या कहना चाहिए था। हालाँकि वह एक लम्बा भाषण हो जाता, इतना लम्बा भाषण कि मैं उसे ठीक से नहीं दे पाता। यूँ भी मेरे मन में जो विचार आते हैं, वे कभी भी व्यावहारिक नहीं होते।

ख़ैर ! तो वह भाषण ऐसे शुरू होता : ''एक बार की बात है'' और उसका अंत इस तरह से होता, ''एक उदास कथा, आपको नहीं लगता ? ''

एक बार की बात है, एक लड़का और एक लड़की कहीं रहते थे। लड़के की उम्र अठारह बरस की थी जबकि लड़की सोलह बरस की थी। वह लड़का बहुत रूपवान नहीं था, और वह लड़की भी बेहद ख़ूबसूरत नहीं थी। वे दोनों अकेलेपन से ग्रस्त किसी आम लड़के या लड़की की तरह थे। लेकिन वे अपने हृदय की अतल गहराइयों से इस बात पर यकीन करते थे कि इस विश्व में कहीं कोई 'सौ प्रतिशत सम्पूर्ण लड़का' व 'सौ प्रतिशत सम्पूर्ण लड़की' उनके लिए मौजूद थे। हाँ, चमत्कार में उनका यक़ीन था। और वह चमत्कार वास्तव में हुआ।

एक दिन किसी गली के मोड़ पर वे दोनों आपस में मिल गए।

''यह तो आश्चर्यजनक है।'' लड़के ने कहा। ''मैं जीवन भर तुम्हें ढूँढ़ता रहा हूँ। शायद तुम्हें इस बात पर यक़ीन न हो, लेकिन तुम मेरे लिए सौ प्रतिशत सम्पूर्ण लड़की हो।''

''और तुम,'' लड़की बोली, ''मेरे लिए सौ प्रतिशत सम्पूर्ण लड़के हो। बिल्कुल वैसे जैसी मैंने कल्पना की थी। यह तो किसी सपने जैसा है।''

वे दोनों पार्क की एक बेंच पर साथ-साथ बैठ गए। उन्होंने एक-दूसरे के हाथ अपने हाथों में लिए और घंटों तक एक-दूसरे को अपने बारे में बताते रहे। अब वे दोनों बिल्कुल अकेलापन महसूस नहीं कर रहे थे। उन्हें एक-दूसरे को चाहने वाले सौ प्रतिशत सम्पूर्ण व्यक्ति द्वारा पा लिया गया था। यह कितनी बढ़िया चीज़ होती है जब आपको चाहने वाला कोई सौ प्रतिशत सम्पूर्ण व्यक्ति आपको पा ले या आप उसे पा लें। यह एक चमत्कार होता है, एक ब्रह्मांडीय चमत्कार।

हालाँकि साथ बैठ कर आपस में बातें करते हुए उनके हृदय में संदेह का एक बीज उग आया - क्या किसी के सपनों का इतनी आसानी से सच हो जाना सही होता है ?

इसलिए, जब उनकी बातचीत के बीच में एक लघु विराम आया तो लड़के ने लड़की से कहा, ''चलो, आपस में एक-दूसरे की परीक्षा लेते हैं - केवल एक बार। यदि हम दोनों वाक़ई एक-दूसरे के लिए सौ प्रतिशत बने हैं तो कभी-न-कभी, कहीं-न-कहीं हम दोनों ज़रूर एक-दूसरे से दोबारा मिलेंगे। और जब ऐसा होगा और हम जान जाएँगे कि हम दोनों सौ प्रतिशत एक-दूसरे के लिए ही बने हैं, तब हम उसी समय और उसी जगह एक-दूसरे से ब्याह कर लेंगे। तुम क्या कहती हो ?''

''हाँ,'' लड़की बोली, ''हमें बिल्कुल यही करना चाहिए।''

इसलिए वे दोनों अलग हो गए। लड़की पूर्व दिशा की ओर चली गई और लड़का पश्चिम की ओर।

हालाँकि, वे जिस परीक्षा के लिए सहमत हुए थे, उसकी कोई ज़रूरत नहीं थी। उन्हें ऐसी परीक्षा की बात कभी नहीं करनी चाहिए थी क्योंकि वे दोनों वास्तव में एक-दूसरे के सौ प्रतिशत सम्पूर्ण प्रेमी-प्रेमिका थे। यह एक चमत्कार ही था कि वे दोनों मिल पाए थे। लेकिन उनके लिए यह जान पाना असम्भव था क्योंकि वे अभी युवा और अनुभवहीन थे। भाग्य की क्रूर, उपेक्षा करने वाली लहरों ने उन्हें बिना किसी दया के इधर-उधर उछाल फेंका।

एक बार सर्दियों के भयावह मौसम में लड़का और लड़की, दोनों ही इन्फ़्लुएंज़ा का शिकार हो गए। हफ़्तों तक वे मृत्यु से जूझते रहे जिसके कारण उन्हें स्मृति-लोप

हो गया। वे सारी पुरानी बातें भूल गए। जब वे दोनों दोबारा ठीक हुए तब तक उनकी स्मृति का कोष इतना ख़ाली हो गया जितनी बचपन में डी.एच.लारेंस की गुल्लक ख़ाली हुआ करती थी।

हालाँकि वे दोनों दो बुद्धिमान और दृढ़ व्यक्ति थे और अपने सतत प्रयास से उन्होंने एक बार फिर वे संवेदनाएँ और जानकारियाँ हासिल कर लीं जो उनके समाज के सम्पूर्ण सदस्य बनने की राह में मददगार साबित हुए। ईश्वर का लाख-लाख शुक्र है कि वे दोनों वाक़ई नैतिक रूप से प्रशंसनीय नागरिक बन गए। वे जान गए कि कैसे एक मेट्रो रेलगाड़ी से उतर कर दूसरी मेट्रो रेलगाड़ी पकड़नी है और कैसे डाकघर में जा कर किसी को स्पीड-पोस्ट भेजनी है। वाकई, उन्होंने कभी-कभी पचहत्तर प्रतिशत या पचासी प्रतिशत तक दोबारा प्यार को भी महसूस किया।

समय हैरान कर देने वाली तेज़ी के साथ गुज़रता रहा और जल्दी ही लड़का बत्तीस वर्ष का हो गया और लड़की तीस वर्ष की हो गई।

अप्रैल की एक सुखद सुबह एक कप कॉफ़ी की तलाश में लड़का पश्चिम से पूर्व की ओर चला जा रहा था जबकि लड़की एक स्पीड-पोस्ट करने के लिए पूर्व से पश्चिम की ओर जा रही थी। वे दोनों टोक्यो के हराजूकू इलाक़े की उसी गली में चलते चले जा रहे थे। उस लम्बी गली के बीच में वे एक-दूसरे की बग़ल से गुज़रे। उनकी लुप्त हो गई स्मृतियों की नाम-मात्र की चमक कुछ पलों के लिए उनके ज़हन में कौंधी। दोनों के हृदय में कुछ हलचल हुई। और वे जान गए :

यह मेरे लिए सौ प्रतिशत सम्पूर्ण लड़की है। यह मेरे लिए सौ प्रतिशत सम्पूर्ण लड़का है।

किंतु उनकी स्मृतियों की चमक बेहद क्षीण थी और उसमें चौदह साल पहले वाली स्पष्टत अब नहीं थी। बिना एक भी शब्द बोले वे एक-दूसरे की बग़ल से गुज़रे और हमेशा के लिए भीड़ में खो गए।

एक उदास कथा, आपको नहीं लगता ?

हाँ। बिल्कुल यही। मुझे उस लड़की से यही कहना चाहिए था।

***

लघु कथा

आज का वोटर

रईस सिद्दीक़ी

बानो आज सुबह भी देर से आई।

समीना बड़बड़ाते हुए बोलीं -'क्या बात है, आज कल तुम दो- तीन महीने से जब दिल चाहता है, लेट हो जाती हो।'

बानो बोली -'बाजी, आज कल चुनाव होने वाले हैं। नेताओं के जलसे जुलूस होते रहते हैं। बाहर से भी नेता आते- जाते रहते हैं। उन्हें हम जैसे लोगों की ज़रूरत पड़ती रहती है। आज कल हम लोगों की माँग बढ़ गई है।'

समीना ने हैरत से पूछा -'उनको तुम लोगों की क्या ज़रूरत पड़ती है ?'

'बाजी, हम लोग बड़े काम के हैं इन नेताओं के लिए।' बानो ने अपनी अहमियत जताई।

'वो कैसे ?'--समीना की जिज्ञासा जागी।

'बाजी, जब कोई नेता आता है, तब हम झंडा लेकर सड़क किनारे खड़े होकर नारा लगाते हैं। जय जय करते हैं। जब वो मैदान में भाषण देते हैं, तब हम झंडा पकड़े रहते हैं। या भीड़ में बैठ कर नेता जी का नाम लेकर नारा लगाते रहते हैं।' बानो ने अपना काम बताया।

'इससे तुमको क्या फ़ायदा होता है ?' समीना ने पूछा।

'बाजी, हमें कभी तीन सौ, कभी चार सौ, और कभी पाँच सौ रुपये मिल जाते हैं। जब देर हो जाती है तो पूड़ी- सब्ज़ी और हलवा भी खाने को मिलता है।' बानो ने इस काम के फ़ायदे गिनाए।

'उन्हें मालूम रहता है कि तुम्हारा नाम बानो है ?' समीना ने इशारों में जानना चाहा।

बानो ने इतरा कर बताया -'हाँ, बाजी, वो सब जानते हैं। उन्हें तो सबको बताना होता है कि हम कौन हैं।'

'तो इसका मतलब तुम उन्हीं लोगों को वोट दोगी जो तुम लोगों को पैसे देते हैं !'

समीना ने उसके दिल की बात जाननी चाही।

बानो ने बड़े विश्वास से आँखें मटकाते हुए कहा- 'नहीं बाजी, हम बेवकूफ़ थोड़ी हैं। हम समझदार हैं। हम अपना वोट उसको देंगे जो घमंडी न हो। जो हम ग़रीबों का ख्याल रखे। जो हम सब का सच-मुच ख्याल रखे। सिर्फ़ नारा न लगाए। सिर्फ़ भाषण न दे। कुछ काम भी करे। भाषण और वादा सुनते-सुनते भेजा पक गया है !'

***

संपर्क: पूर्व भा. प्र. से., निदेशक आकाशवाणी भोपाल
2-राहत कदा, 14-ग्रीन वैली एन्क्लेव, एयरपोर्ट रोड, भोपाल-462 030
ई-मेल: rais.siddiqui.ibs@gmail.com
मोबाइल: 9811426415, 9811426415

रा. रं. बोराडे मराठी के ख्यात साहित्यकार हैं। कहानी उपन्यास नाटक और समीक्षा को लेकर उनकी 40 से अधिक पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं। वे महाराष्ट्र राज्य साहित्य संस्कृति मंडल के अध्यक्ष भी रह चुके हैं।

गठरी

मूल कथा : रा. रं. बोराडे
अनुवाद - डॉ. सचिन गपाट

जनाई के होंठों में हलचल हुई। वह कुछ कहना चाहती है यह लिंबाजीराव समझ गए। बैठे-बैठे ही वे झुके। उसके कानों के करीब मुँह ले जाते हुए बोले, ''क्या कहती हो?''

''रूक्मा नहीं आई ?''

सुबह से चौथी या पाँचवीं बार उसने यही पूछा था। सच तो यह है कि कल दोपहर को ही रुक्मिणी को लाने के लिए गाड़ी गई थी। यदि थोड़ा-सा समय लग भी जाता तो दोपहर तक आएगी ऐसा लग रहा था। किंतु उनकी ओर कुछ उलट-पुलट हुआ होगा या भेजनेवालों में से कोई घर पर नहीं होगा तो विलंब होने की संभावनाएँ थीं। मतलब उसे यह सब कुछ बताने की आवश्यकता नहीं थी। इसीलिए उन्होंने इतना ही कहा कि ''आ जाएगी दोपहर तक।'' जनाई ने आँखें मूँद ली। वह गर्दन झुकाए पड़ी रही। लिंबाजीराव चिंता से काँटों पर लोटते रहे। दोनों घुटनों पर हाथ रखकर उसपर ठुड्डी टिकाकर बैठे रहे। गंगाराम इसी अवसर की राह देख रहा था। अपने पर क़ाबू पाने में असमर्थ होकर उसने कहा, ''आबा, अब तो मेरी बात सुनो।''

लिंबाजीराव ने ठुड्डी उठाई। व्याकुल होकर उन्होंने कहा, ''सुनो, ऐसा कैसे कहते हो? ऐसी हालात में उसे तहसील ले जाऊँ ?''

''फिर क्या करना चाहिए ? अब अच्छा लगेगा, थोड़ी देर बाद अच्छा लगेगा ऐसा कहते-कहते सात-आठ दिन हुए। कल दोपहर से तो तबीयत बहुत खराब हो गई है उसकी।''

''इसीलिए तो मेरा दिल दहल रहा है। पहले ही उसकी जान कमज़ोर हो गई है। ऐसे में ख़राब रास्ते का झटका। करना चाहेंगे एक और हो जाएगा कुछ अलग ही।''

''कुछ नहीं होता। एक बार तहसील के दवाख़ाने में दाख़िल करने दो। झट से आराम

सहायक प्राध्यापक, हिंदी विभाग,
मुंबई विश्वविद्यालय
विद्यानगरी, कलिना, मुंबई - 400098
मोबाइल : 9423641663
ई-मेल: sachin.hindi@mu.ac.in

मिलता है कि नहीं, देख लो।''

''उसकी बजाय डॉक्टर को ही बुलाओ। डॉक्टर की फ़ीस जितनी है उतनी भर देंगे।''

''दवाख़ाने की बात कुछ और ही होती है। एक दवा-दारू काम नहीं आई तो दूसरी दे सकते हैं। वहाँ पर एक ही जगह दो-चार डॉक्टर होते हैं। एक की समझ में नहीं आया तो दूसरा समझ जाता है। यहाँ डॉक्टर बुलाना मतलब गड़बड़-सड़बड़ का मामला। घुड़सवार जैसे वह आएगा, जाँचेगा और पैसे ज़ेब में डालकर भाग जाएगा। इससे असर नहीं हुआ तो दूसरे डॉक्टर की ओर दौड़ो !''

''यह सच है रे, पर ऐसी हालत में घर से ले जाने के लिए मन नहीं करता।''

''दूसरा कोई इलाज भी नहीं है शायद!''

दीर्घ नि:श्वास छोड़ते हुए लिंबाजीराव ने कहा, ''उसे पूछकर देखो। किसे पता वह क्या कहती है ?''

गंगाराम माँ के सिरहाने आया। वह सुन सके ऐसी ऊँची आवाज़ में उसने कहा, ''माँ, आबा क्या कह रहे हैं ?''

कुएँ की सतह से जैसे आवाज़ आती है वैसे उसकी आवाज़ आई। ''क्या ?''

''तुम्हें सरकारी दवाख़ाने में ले जाना चाहते हैं।''

''ना.. अब कहीं नहीं जाना।''

''ना कहने के लिए क्या हुआ है ?''

जनाई स्तब्ध हुई। उसे कुछ कहना होगा, किंतु उसने जान-बूझकर टाल दिया। गंगाराम उसके पीछे ही पड़ गया। वह कुछ सोच-विचार करे उससे पहले उसने कह दिया, ''क्यों माँ ?''

गंगाराम का व्याकुल स्वर उसके कलेजे से जा लगा। उसने टकटकी लगाकर उसकी ओर देखा और अपना थरथराता हाथ उसकी ठुड्डी पर फिराते हुए कहा, ''रूक्मा को आने दो। फिर देखेंगे।''

उसकी ऐसी सम्मति मिलते ही उसे बहुत संतोष मिला। वह फ़ौरन उठा। पिता से उसने कहा, ''गाड़ी का इंतजाम देखकर आता हूँ।''

''खामखाह क्यों परेशान होते हो ? रूक्मा को लेकर गाड़ी आ ही जाएगी। वही गाड़ी लेकर जाएँगे।''

गंगाराम को भी यह बात फबी। वह बहन की राह देखता रहा।

पहले गाड़ी की खड़खड़ाहट हुई और उसके पीछे-पीछे बैलों को हाँकने की आवाज़ आई। लिंबाजीराव ने तुरंत उस आवाज़ को पहचान लिया। उन्होंने गंगाराम से कहा, ''गाड़ी किसकी है जरा देख लो।''

गंगाराम भी उसकी ही राह देख रहा था। वह झट से उठा। जल्दबाज़ी से दरवाज़े की ओर दौड़ा। डर से खून ख़ुश्क हुई रुक्मिणी अंदर आई। कपास के सूखे पौधे जैसी हुई अपनी माँ की ओर उसने देखा और धड़ाक से लिपट गई। थमा हुआ दु:ख एकदम उमड़ पड़ा। ज़ोर-ज़ोर से वह रोने लगी। जनाई उसके शरीर पर खुद का थरथराता हाथ फेरने लगी। उसे चुप हो जाने के लिए कहने लगी। लिंबाजीराव भी उसे समझाने लगे। खुद की आँखें पोंछते हुए उसे चुप होने के लिए कहने लगे। किंतु किसी बात का असर नहीं हुआ। उमड़े हुए दु:ख को रोकने में वह नाकाम रही।

दु:ख की पहली बाढ़ का असर कम होते ही उसने पिता से पूछा, ''आबा, माँ कितने दिनों से बीमार है ?''

''सात-आठ दिन हुए।''

''इतने दिन हुए आपने ख़बर भी नहीं भेजी मुझे ?''

''कल तक वैसा कुछ नहीं था। कल से ही थोड़ा बढ़ गया है। खाना-पीना ही छोड़ दिया है।''

''दवा-दारू भी की या नहीं ?''

''देहाती दवाएँ बहुत की पर असर कुछ भी नहीं हुआ।''

''तहसील ले जाते तो अच्छा होता।''

''हमने बहुत मनाया पर उसने नहीं माना। फिर हमने समझा-बुझाकर तैयार किया तो तुझे आने दो, कह बैठी।''

इतने में गंगाराम अंदर आया। उसका चेहरा उतरा हुआ था। किसी बड़े दबाव से दबा दिख रहा था। उसने पिता को इशारा किया। बाज़ू में बुलाकर दबी हुई आवाज़ में कहा, ''कुछ समझे आप ?''

लिंबाजीराव ने पूछा, ''क्या ?''

''रुक्मा का पति आया है उसके साथ।''

बहुत बड़े आघात पीड़ित की तरह लिंबाजीराव की स्थिति हुई।

''सच कह रहे हो ?''

''हाँ।''

लिंबाजीराव का चेहरा झट से उतर गया। चुप्पी साधे वे स्तब्ध हुए। गंगाराम यह समझ गया। उसने पूछा,

''आबा, अब क्या उन्हें पाहुर१ भी देना पड़ेगा ?''

एक लंबी साँस छोड़ते हुए उन्होंने कहा, ''देखे अब क्या होता है !''

इतने में रुक्मा का पति भी अंदर आया। उसे देखते ही लिंबाजीराव ने चेहरा ठीक किया। दामाद को उन्होंने 'राम-राम' किया। उसे बिठाकर रुक्मिणी को चाय बनाने के लिए कहा।

सोपान सास (पत्नी की माँ) के सिरहाने आया। उसने बैठते हुए पूछा, ''आपकी तबीयत कैसी है ?''

जनाई ने आँखें नहीं खोली। कोई भी हलचल नहीं की। सोपान ने चट से ससुर की ओर देखा। लिंबाजीराव ने अविलंब मतलब को समझ लिया। उन्होंने कहा, ''ऊँची आवाज़ में बोले बिना उसे सुनाई नहीं देता।''

फिर वे स्वयं नीचे बैठ गए। झुकते हुए उसके कान के नज़दीक मुँह ले जाकर ऊँची आवाज़ में बोले, ''देखो कौन आया है ? ''

जनाई ने बड़ी मुश्किल से आँखें खोली। सोपान को पहचानने का प्रयत्न किया, लेकिन यह संभव नहीं हुआ। लिंबाजीराव फिर से झुके। उसे सुनाई दे ऐसी ऊँची आवाज़ में बोले, ''ये रुक्मा के पति सोपानराव हैं।''

उसकी आँखों में पहचान उतरी। बिस्तर से उठने के लिए बेबस कोशिश करने लगी। किंतु लिंबाजीराव ने उसे इशारा किया। न उठने का संकेत दिया।

दरी पर बैठते हुए सोपान ने कहा, ''तबीयत बहुत ही बिगड़ गई है।''

''आठ दिनों से खानपान बंद है। ऐसे में बिगड़ने के लिए कहना पड़ेगा ?''

''सही कहा। नौकर ने हमें सबकुछ बता दिया। गाड़ी आई तब तात्या घर पर नहीं थे। इसे अकेले ही भेजने की योजना बनाई थी; किंतु फिर से सोच-विचार किया, सासूमाँ की तबीयत बहुत ही बिगड़ गई है ऐसी ख़बर मिली है। तो पत्नी को अकेले कैसे

भेजूँ ? इसीलिए मैं भी आ गया। रुक्मा चाय लाई। दामाद के हाथ में चाय का कप देते हुए लिंबाजी ने पूछा, ''क्या आप कल ही जा रहे हैं ?''

''हाँ। सच तो यह है कि सासूमाँ की तबीयत देखकर अविलंब निकलने का इरादा था। पर लग रहा है कि अब ऐसा नहीं हो पाएगा।''

''आए ही हैं तो दो-चार दिन रुक जाते।''

''मुश्किल है, इतनी फ़ुर्सत कहाँ ? खेती के सारे काम वैसे ही पड़े हैं। ऐसे में तात्या भी घर पर नहीं हैं।''

''कहाँ गए हैं ?''

''पैरवी है उनकी, हो सकता है कि परसों तक आ जाएँगे।''

''ठीक है, देखते हैं क्या हो पाता है।'' इतना बोलकर बेटे के पास गए। उससे कहा, ''बैठक में गद्दी है ? ''

''हाँ, है। ''

''बिछा दो। थोड़ा आराम कर सकेंगे।'' गंगाराम उठा। सोपानराव भी उठे। दोनों बाहर बैठक की ओर चले गए। मन पर विचित्र दबाव पड़े हुए की तरह लिंबाजीराव बैठे रहे। पिता की यह दशा देखकर रुक्मा को बुरा लगा।

जनाई ने पति को संकेत किया। बिस्तर के नज़दीक बुलाया और एक-एक शब्द जुटाते हुए कहा, ''रुक्मा का पति पहली बार घर आया है।''

सारी बातों को समझते हुए लिंबाजीराव ने कहा, ''हाँ।''

''तो पाहुर (अहेर, उपहार, सौगात,) का इंतज़ाम करना पड़ेगा।''

''ऐसी हालत में पाहुर कैसे संभव होगा!''

''कुछ ना कुछ इंतज़ाम कर लो। कुछ नहीं लिया तो बेटी के लिए मुसीबत खड़ी होगी।''

इतने में गंगाराम भी अंदर आया। माँ की बात सुनकर वह बोला, ''मुसीबत खड़ी करने के लिए वे उतना भी समझदार नहीं हैं क्या ? किसी दूसरे कारण से आ जाते तो अलग बात थी। यह समय पाहुर खरीदने-देने का नहीं है।''

लिंबाजीराव ने कहा, ''उतनी समझ यदि उसे होती तो ऐसा नहीं होता। ऐसे कठिन समय में वह यहाँ नहीं आता।''

गंगाराम ने तुरंत बहन की ओर देखा, टोकते हुए उसे कहा, ''आक्का की समझ में तो यह बात आनी थी। ऐसे बेसमय क्यों साथ ले आई?''

भाई का इस तरह टोककर बोलना रुक्मा सह नहीं पाई। उसने आनन-फ़ानन में भाई से कहा, ''मैंने हठ नहीं किया था उनसे!''

समझाने के स्वर में लिंबाजीराव ने उसे कहा, ''कहना नहीं चाहता, लेकिन तुम देख ही रही हो कि हम कितनी उलझन में पड़े हुए हैं।''

''आप क्यों परेशान हो रहे हैं ? स्थिति खराब है, समय कितना कठिन है, इतना भी लोग समझ नहीं पाएँगे ?''

''मैं लोगों के बारे में नहीं कहता, लेकिन तेरे पति के दिमाग़ में यह बात पैठनी चाहिए ना। हम कुछ ना कुछ देंगे, ऐसा उसके मन में होगा और हमने नहीं दिया तो वह तुम्हें जलाए-सताए बग़ैर छोड़ेगा ? गौने के समय कुछ चीज़ें कम थी तो कितना हड़कंप मचा दिया था, यह तुझे पता नहीं है?

''किंतु मैं आपको थोड़े ही कह रही हूँ कि पाहुर दो ?''

''तुम नहीं कह रही हो, लेकिन हमें रीति-रिवाज़ निभाने पड़ते हैं। ठीक भी है, इनकार की बात भी नहीं करते, पर आज हम इसे तहसील के अस्पताल में ले जाना चाहते हैं और तुम्हारा घरवाला तो कल जाना चाहता है। अब इसे अस्पताल ले जाकर इलाज करे या ऐसी हालत में घर छोड़कर पाहुर ख़रीदने के लिए तहसील जाएँ ?

मन में निश्चय करते हुए रुक्मा ने कहा, ''आबा, आप माँ को अस्पताल ले जाने की तैयारी करो। वे मेरे साथ सख्ती से भी पेश आए तो माँ की ज़िंदगी के आगे वह कुछ भी नहीं है।''

गंगाराम को एक बीच की तरक़ीब सूझी, उसने कहा, ''नहीं तो आप ऐसा कीजिए आबा, इसके पति को बताओ कि हम तहसील के अस्पताल जा रहे हैं। अनायास तहसील जा ही रहे हैं तो आते हुए हम पाहुर लेकर आएँगे। आप तब तक यहीं रहिए, ऐसा बोल दीजिए।''

''इसपर उन्होंने यदि कहा कि मैं कल ही जानेवाला हूँ तो ?''

''उन्हें सारे हालत बताएँगे। मान गए तो ठीक है। नहीं मानेंगे तो देखेंगे क्या करना है।''

''रुक्मा की माँ क्या कहती है ? यह भी तो पूछना पड़ेगा।''

''पूछकर देखूँ ?''

''हाँ, पूछकर देखो।''

गंगाराम माँ के सिरहाने गया। वह सुन सके ऐसी ऊँची आवाज़ में उसने कहा, ''माँ, रुक्मा कह रही है कि पहले तुम्हें अस्पताल लेकर जाए और उधर से आते हुए बाज़ार से पाहुर लाए।''

हाथ से इशारा करते हुए उसने कहा, ''नहीं...अब मेरा कुछ भरोसा नहीं है।''

थोड़ा-सा आजिज़ होते हुए गंगाराम ने कहा, ''क्या करें अब इस अड़ियल स्वभाव का ?''

लिंबाजीराव ने उसके अंतस की बात को समझ लिया। उन्होंने कहा, ''उसे खुद का भरोसा नहीं लग रहा है। उसके कारण बेटी को जलाया-सताया जाएगा ऐसा उसे लग रहा है।''

''उसका क्या संबंध है इससे ?''

''वह बीमार हुई इसलिए तो दामाद आया है। आँखों के सामने सबकुछ हो ऐसा उसे लग रहा है।''

''उसका भी कहना उचित ही है। लेकिन पाहुर लाने के लिए कल दोपहर तक का समय लगेगा। तब तक माँ की हालत अधिक खराब होगी !''

''इसका कोई इलाज नहीं है। हम भी क्या कर सकते हैं ?''

''तो मुझे बताओ क्या करना है। करना ही चाहते हैं तो अटकाव क्यों ?''

लिंबाजीराव ने मन का बोझ हलका करते हुए गंगाराम से कहा, ''बैलगाड़ी तैयार करो। मैं तहसील से पाहुर ले आता हूँ।''

गंगाराम ने गाड़ी तैयार की। लिंबाजीराव उठे। शरीर की गठरी बाँधकर गाड़ी में बैठ गए।

***

पाहुर - मराठी में अहेर शब्द है। शादी के बाद दामाद जब पहली बार घर आता है तो उसे सौग़ात के रूप में कपड़े, सोने की अँगूठी आदि उपहार दिए जाते हैं। इसे अहेर कहते हैं।

कविताएँ

गौरव भारती की कविताएँ

जिजीविषा

होते हैं कुछ लोग
जो बार-बार उग आते हैं
ईंट और सीमेंट की दीवार पर
पीपल की तरह
इस उम्मीद में कि-
'एक दिन दीवार ढह जाएगी'
***

कैद रूहें

उनका क्या
जो नहीं लौटते हैं घर

कभी-कभार
देह तो लौट भी जाती है
मगर रूहें खटती रहती हैं
मीलों में
खदानों में
बड़े-बड़े निर्माणाधीन मकानों में
इस उम्मीद में कि
उनका मालिक
लौटा देगा पूरी पगार

मुंतज़िर आँखें
गालियाँ खाकर लौट जाती हैं काम पर...

पल भर के लिए
बेबस आँखें टकराती हैं
बाट जोहती निगाहों से
मगर हथौड़े की चोट
उस पुल को ढहा देती है
जहाँ से मकां और घर के बीच का
सफर तय होना है
यहाँ सिर्फ ज़िस्म कैद नहीं हैं
रूहें भी कैद हैं
जो कभी-कभी दिख जाती हैं
ईंटें जोड़ते हुए
रात के तीसरे पहर में
सुना है मालिक कोई जादूगर है
उसके पास कोई मन्त्र है
जिसके सहारे
वह कैद कर लेता है रूहों को

रूहें कैद हैं
खट रही हैं
खप रही हैं
नहीं लौटती हैं घर
महज़ आवाज़ें सफर करती हैं
निगाहें उसके पीछे चल देती हैं

एक घर है
जो बरखा को देख सर छुपाने लगता है
राह तकती निगाहें हैं
एक बूढ़ा बरगद है
जो ढहने वाला है
आम और अमरुद के छोटे-छोटे पौधे हैं
बेपरवाह परवरिश के शिकार
और एक इंतज़ार है
पुल के इस तरफ भी
पुल के उस तरफ भी...
***

कोशिश

मुझे मालूम है-
उछलकर चाँद को छूने की कोशिश
करता रहा हूँ मैं
मगर मुझे यकीन है
एक दिन मेरी उड़ान इतनी लंबी होगी कि-
मैं उसका हाथ पकड़ कर
उसे ज़मीं पर ला सकूँगा

मैं चाहता हूँ
चाँद के हज़ारों टुकड़े कर
लौटा दूँ रौशनी
उन असंख्य घरों को
जहाँ डिबिया की कालिख
लोगों के फेफड़ों में घर बना रही है
मेरी इच्छा है कि-
बाँस के खंभों पर टाँग दूँ
चाँद का एक-एक टुकड़ा
बल्ब की तरह
ताकि दिख सके गीदड़
जो मेमनों को आधी रात अपना शिकार
बनाते हैं...
***

गुज़रते हुए इस शोर में

कुछ नहीं बचेगा
गुज़रते हुए इस शोर में
बस बचा रह जाएगा
ज़हन में
तुम्हारे हाथों का कौर
तुम्हारा अल्हड़पन
तुम्हारी ज़िद
तुम्हारी मुस्कराहट
और तुम्हारे गालों पर
लुढ़कते हुए आँसुओं का बिम्ब
जो मेरा पीछा करेंगी
तमाम उम्र ...
***

भोंपू

किसी ने आकर
मेरे कान में धीरे से कहा -
'ज़रा ज़ोर से बोलिए
यहाँ के लोग
ऊँचा सुनते हैं'

मैंने उससे पूछा-
'लोग बहरे हैं क्या'
उसने कहा-
नहीं, नेताओं ने इनके कान बिगाड़ दिए हैं
जगह-जगह भोंपू लगाकर
भोंपू बजते ही
यहाँ के लोग
अपना काम-धाम छोड़कर
भेड़-बकरियों की तरह
एक जगह जमा हो जाते हैं
एक-एक शब्द इनके कानों में ठूँसा जाता है
दिमाग सुन्न हो जाता है
आदमी नींद में चला जाता है
ख्वाब देखने लगता है
तभी एक भोंपू फिर बजता है
सभा विसर्जित होती है

लोग लौटने लगते हैं
रेगिस्तान की तरफ
रेगिस्तान होकर
पानी की तलाश में
आसपास नहीं फटकते
जो मीठे रक्त के शौकीन थे
क्योंकि मुझमें
खारा नमक जो घुल गया है
जैसे मुझे
अब रात में,
सपने नहीं आते हैं
बस, नींद ही आती है .....

शायद ! सपने मेरे पैरों के
तलुवों में चले जाते हैं
तभी तो रात भर पैरों में
खवाई होती है।
पर मैं तो नींद में होती हूँ।
क्या पता
नींद मुझे ठगती है
या मैं नींद को
जो भी हो
दोनों समय पर जाग जाते हैं
दिन भर दिहाड़ी में
नींद मेरा और
मैं नींद का पीछा करती हूँ
दोनों को चिरंतन सोने की ललक है
***

संपर्क : कमरा संख्या-108, झेलम छात्रावास, जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, दिल्ली -110067
ई-मेल: sam.gaura1013@gmail.com
मोबाइल -9015326408

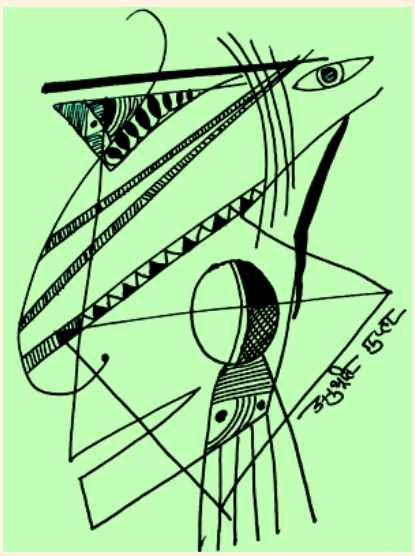

पंकज कुमार साह की कविताएँ

सेवानिवृत्ति

सेवानिवृत्ति के बाद
मेरे बगल वाले कमरे से
अपना सामान समेट रहे मास्टर साहब से मैंने पूछा
अब तो फ्री हो गए सर
पता नहीं क्यों
बूझे मन से बोले
फ्री तो हो गया लेकिन....
उनके लेकिन का अर्थ क्या लगाऊँ मैं
क्या उन्हें कर्मनिष्ठ समझूँ
या फिर सेवानिवृत्ति के बाद घर का माहौल
क्या उनका घर अब भी उसी तरह स्वागत करेगा
जब वह लौटेंगे पूरे बोरिया-बिस्तर के साथ अंतिम बार
क्या बेटे पहले की भाँति पूछेंगे उनसे
बाबू जी ठीक हैं
तबीयत कैसी है!
या फिर उन्हें भी डाल दिया जाएगा घर के किसी कोने में
एक पुरानी खाट पर और
कई बार चिल्लाने के बाद मिलेगा एक गिलास पानी
मैं समझ नहीं पा रहा हूँ....
उनके लेकिन के बाद का शब्द
क्या सेवानिवृत्ति सचमुच उदासी लेकर आती है
जैसे आज उदास थे मास्टर साहब
अपना सामान समेटते हुए
उनके लेकिन के बाद का शब्द क्या हो सकता है
उनकी बढ़ती हुई उम्र
या कर्म के प्रति लगाव
या फिर उनके प्रति उनके घरवालों का भावी बर्ताव
जिसका शिकार है हर एक सेवानिवृत्त कर्मचारी
क्योंकि सुना है उनका यह घर
अब उनका नहीं रह जाएगा
पूरी तरह उनके बेटों और बहुओं का हो चुका होगा
मिनट-मिनट पर चाय-पानी पूछने वाली बहुएँ
दस बार बुलाने पर भी नहीं सुनेंगी
और उन्हें देखकर मुँह बिचकाएँगी
मैं असमंजस में हूँ
क्या सेवानिवृत्ति इतना सोचने पर मजबूर करता है
क्या मेरे पिता भी यही सोचेंगे
जब वे सेवानिवृत्त होंगे
और इसी तरह उदास होंगे
जैसे आज उदास हैं मास्टर साहब
घर लौटने के लिए सामान समेटते हुए.....
***

समय हत्यारों के फलने-फूलने का

यह समय बच्चों के कुचले जाने का
उन्हें ज़िंदा जलाने का
उन्हें बम से उड़ाने का है
वास्तव में यह समय
किसी के डूब मरने का नहीं
किसी को डूबो कर मारने का है
कैसा समय है यह
यह समय
किसी की जान लेते हुए
सेल्फी लेने का भी है
आख़िर हम अपनी आत्मा के साथ सेल्फी कब लेंगे
हमें उस समय का इंतज़ार है
सोचिएगा ज़रूर
क्योंकि हम रो नहीं सकते
इसलिए यह समय ठहाके लगाने का भी है
और ठहाके पर बहस करने का भी
पूरे देश-विदेश में चल रही मौतें
ठहाके पर मजबूर करती हैं
आप भी ठहाके लगाइए
क्योंकि यह समय
बच्चों के हत्यारों के फलने-फूलने का भी है
***

रोटी पकाती हुई माँ

धीमी आँच पर रोटी पकाती हुई
माँ से पिता ने कहा –
–कैसी रोटी बना रही हो अधजली अधपकी
आँच तेज़ क्यों नहीं कर लेती
अगले ही क्षण आँच की तेज़ी देख
फिर पिता ने कहा –
–मैंने आग लगाने को नहीं कहा
रोटी अच्छी तरह पकाने को कहा है
माँ बोली –
पिछले पच्चीस वर्षों से तो
ऐसे ही आँच लगाती आ रही हूँ
और बुझाती आ रही हूँ पूरे घर का आग
आग मेरी रोटी से नहीं
उनकी गोटी से लगती है
जिससे सुलग रहा है
पूरा देश धीरे–धीरे.....
***

किससे बचाएँ हम अपनी बेटियाँ

तुमने कहा – बेटी बचाओ
हमने कहा ठीक
लेकिन क्या इसलिए बचाएँ
हम अपनी बेटियाँ
ताकि रात पर एकाधिकार हो तुम्हारा
जब जी चाहे बोटियाँ नोच डालो
तार–तार कर डालो इनकी आबरू

क्या हम अपनी बेटियाँ इसलिए बचाएँ
ताकि जब जी चाहे खटखटा सको
हमारे घरों के सांकल
और रौंद डालो पूरा का पूरा घरौंदा

बावजूद तुम आवाज़ लगाते रहे
बेटी बचाओ बेटी बचाओ
लेकिन कभी तुमने ये नहीं बताया की
किससे बचाएँ हम अपनी बेटियाँ
किससे ....?
***

संपर्क : रसिकपुर नागडीह, उत्तम लॉज के पास, दुमका, जिला– दुमका, पिन–814101 (झारखंड)
ई–मेल: pankajkrsah1987@gmail.com
मोबाइल : 9835930691/7870748369

मालिनी गौतम की कविताएँ

गुफ़्तगू

तुम कितनी ही
कोशिशें करते रहो
उजाले को अँधेरे में बदलने की
मुझे आता है
मेरे हिस्से के उजाले को
अपनी हथेलियों में कैद करना
सुनो...
अब भी वक्त है
जान जाओ
कि साथ चलने के लिये
साये की ज़रूरत
नहीं है मुझे....
***

तुम्हारे मौन को
पढ़ते–पढ़ते
मैं न जाने कितनी ही बार
पढ़ती हूँ खुद को
तुम्हारे अलग–अलग
रंगों से गुज़रते हुए
लाल–पीले और बैंजनी रगों की
नदियाँ बहती हैं मुझमें
और अंततः मैं हो जाती हूँ हरी
तुम्हारी प्रीत में रंगकर ....
***

देर रात तक
घुँघरू की तरह खनकने के बाद
दूसरे ही दिन
तुम्हारा यूँ अचानक ख़ामोश हो जाना
और भी उलझा देता है मुझे,
किन टूटी हुई पालों को
बाँधने लगते हो तुम
सुनो.....
ये 'पहले आप' वाला
अपना लखनवी अंदाज़
छोड़ क्यों नहीं देते
कि मुझे शिद्दत से इंतज़ार होता है
तुम्हारे ख़नकने का.....
***

चाहे जितना भी
प्रखर ताप हो तुम्हारा,
ढलना ही तुम्हारी नियति है
भेदकर आवरण
तुम्हारे तेज का
मैं फिर नज़र आऊँगी
क्षितिज पर
सुरमई धुंधलके में.....
***

बेरंग कतरा
सिर्फ मेरे हिस्से का
सच नहीं है
ये बनता है सच
कभी–कभी तुम्हारे हिस्से का भी
तो क्या हुआ कि मैं
ज़मीन पर बिछी नाज़ुक दूब हूँ
और तुम हो
विशाल तने वाले
आसमान में बाँहे पसारे
वटवृक्ष.....
***

अरुणोदय बेला में
किसी बेल पर फूल की तरह
अनायास ही आ टिके
सूर्य को देखकर
भ्रमित मत हो जाना
फ़ासला अब भी
उतना ही है हमारे बीच
ये फ़ासला है
साथ दिखने
और साथ होने का ।
***
एक जोगी मन
हर रात बुनता है

प्रीत की झीनी चदरिया,
साँस पर चढ़ती–उतरती
याद की सरगम..

मौन में चुप-चुप खनकती
पीर की छनछन.....
सब तोड़ देते हैं दम
रात के अंतिम प्रहर में..
भोर की ऊँगली थामें
बावरा मन
भटकता है दिनभर
नेह के महीन
धागों की तलाश में
कि रात फिर बुन सके
प्रीत की झीनी चदरिया .....
***

संपर्क : 574, मंगल ज्योत सोसाइटी
संतरामपुर-389260 जिला-महीसागर
गुजरात
ई-मेल : malini.gautam@yahoo.in
मोबाइल : 9427078711

एम.जोशी हिमानी की कविताएँ

कशिश

ढकी छुपी इश्क़ की
वो दास्तां भी कितनी अजब थी
मन का जहाँ चाँद था केवल
सूरज की कोई तपिश न थी
हर रोज़ ढूँढ़ते थे हम
इक सूनी सी सड़क
किसी परिंदे की आहट भी
हमें मंज़ूर न थी
कितना हसीं था
सुबह से ही गहराती शाम का
वो बेसब्र इंतज़ार
अकुलाते दिन थे
उनींदी थीं रातें
ज़िन्दगी बहुत छोटी थी
नादान उस इश्क़ की
जी रहे हैं अंतहीन सी
ज़िन्दगी अब भी
इक कशिश के
सहारे।
***

मिथ

वह स्त्री थी
उसके मान सम्मान
की बातें मात्र
किताबी थीं
किसी धर्मग्रंथ के मात्र
चंद श्लोक
युग बीते, सदियां बीतीं
पर वह आज भी
आदिम युग में
खड़ी थी
अपनी ही देह तले
दबी थी
अपने मस्तिष्क के बल से
पहुँच गई हो चाहे
राजनीति के शिखर पर
वायुयान उड़ा रही हो
आसमां में
ब्रह्माण्ड में भी
सैर कर आई हो
चलचित्र जगत् की
अट्टालिका में हो
विराजमान
बिन उसके
घर भी हो चाहे
भूत का डेरा
धर्म अर्थ काम मोक्ष भी
सधता न हो
फिर भी
हज़ारों हज़ार
सशंकित निगाहें
करती हैं हर वक्त
पीछा उसका
करने को बेअदबी
सैकड़ों बाहें
रहती हैं बेताब
नवरात्रि आती है तो
याद आता है
सर्वगुण संपन्न
सर्वबलशाली
सर्व बुद्धि संपन्न
दुर्गा का पाला भी पड़ा था
शुंभ निशुंभ, चंड मुंड,
महिषासुर से
बहुत नहीं बदला है
आज भी जीवित हैं वे
रूप बदलकर।
***

शुक्राना

ऐ ज़िन्दगी
ठहर ज़रा
लूँ मैं बलैंया तेरी
माथे पै दूँ बोसे हज़ार
इक विस्तृत फलक दिया तूने
जीने को मुझे
डाली आँचल में मेरे
नित नए अनुभवों की
बख्शीश सदा
दिखाया ज़िन्दगी का
हर रंग
चखाया
हर स्वाद मुझे
बनने न दिया तूने
अबला नार कभी मुझे
हौसलों को मेरे
दबने न दिया
दुनिया के शोर में कभी।
ऐ ज़िन्दगी
ठहर ज़रा
भरपूर जिया है मैंने तुझे
रुक जा थोड़ा
शुक्राना तो कर लूँ तेरा।
***

संपर्क : संपादक उत्तर प्रदेश पत्रिका
ई-मेल: mjoshihimani02@gmail.com
मोबाईल : 8174824292

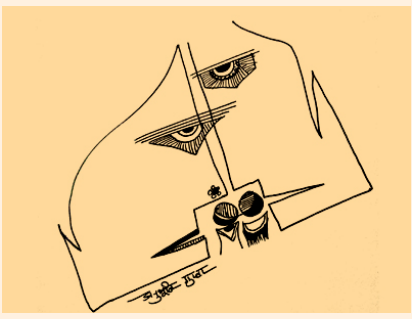

शशांक पाण्डेय की कविताएँ

शोक में डूबी हुई नदी

आदमी जब रोता है सब देखते है
कोई नहीं देखता है
एक नदी को रोते हुए
जब नदियाँ शोक में डूबी होती है
तब मनुष्य दुबकता है
और पाँव पसार चुप बैठा रहता है
कभी आपने देखा है
नदी के कोख को एकदम सूखते हुए
मैंने देखा है
एक पथरीली नदी में
अनेक स्त्री के चरित्र को
वह जब सूखती है तो मलीन दिखने लगती है
नदी हर समय लबालब भी तो नहीं रह सकती
उसका भी तो जीवन है
उसके भी तो संघर्ष है
कौन चाहता है कि
हमेशा उस पर दुखों का पहाड़ टूटता रहे
नदी, नदी है!
उसे लगातार बहते रहना चाहिए
यह कहना भी तो सही नहीं है॥
***

पाँव

जब भी चौखट पर आती है
किसी स्त्री की परछाईं
लगता है माँ फिर से दस्तक दे रही है जीवन में
उसके देह की महक
चूड़ियों की खनखनाहट
किसी के होने भर से
उसका मुस्कुराहट भरा वो चेहरा
अचानक घुमने लगता है
मेरे चारों ओर
लेकिन वह नहीं आती है
वह सब परछाईयाँ
धीरे-धीरे किसी अपरिचित की होने लगती है
माँ गई तो
जीवन के रंगमंच पर भी कभी नहीं आई
मुझको और उदास करने के लिये
आती है तो केवल सपने में
यदि फिर किसी दिन आएगी सपने में ही
तो उसे बिठा लूँगा बिल्कुल पास
और पूछूँगा-
'कहाँ गई थी इतने दिनों तक?'
मैं जानता हूँ वह कुछ नहीं बोलेगी
बस अपने पास बुलाकर बालों में हाथ फेर देगी
उसके बाद
मैं कुछ कह नहीं पाऊँगा॥
***

विरोध

(धूमिल से माफ़ीसहित)
किसी बड़े आंदोलन में
तीन तरह के लोगों ने भाग लिया
पहले ने बैनर बनाने की योजना बनाई
और उसने उसे तैयार किया
दूसरे ने सड़क-मुहल्ले से लड़कों को इकट्ठाकर
उनमें जोश भरने का काम किया
तीसरा जो आदमी था
वह बेहद चुप था
और डरपोक था
इसीलिये विरोध में कभी भी शामिल नहीं हुआ
लेकिन मंचों से ख़ूब बोलता था....
मैंने साथियों से पूछा-'ये तीसरा आदमी कौन है?'
उन्होंने कहा -वह इस देश का बुद्धिजीवी है॥
***

संपर्क : सुभाष लाँज, छित्तुपुर, बी.एच.यू, वाराणसी(221005)
ई-मेल:shashankbhu7@gmail.com
मोबाइल : 09554505947

उमेश चरपे की कविताएँ

अब जाने क्या हुआ

अब जाने क्या हुआ
सब कुछ वैसा ही चलता
हर अपराध के बाद भी

कोई नहीं रोता यहाँ
सुख चुके हैं आँसू
रोज़ खुलते हैं होटल
खाते हैं मज़े से पोहा, जलेबी, चाटपुरी
ठाहाके मार-मारकर
थकते नहीं अखबार चटनी डालना
भूलती नहीं सियासत रोटी सेकना
और
मगरमच्छ के आँसू बहाना

गर्माती है
मोमबत्तियाँ बस कुछ देर
और
पुरानी तारीख की तरह
बदल दिया जाता है कैलेण्डर

धीरे-धीरे
भूलने लगते हैं
जैसा कि बीमारी है यहाँ सभी को
और फेंक देते हैं
घटनाओं को रद्दी की टोकरी में अखबार समझकर
खामोश रहना चाहता है
हर कोई
सब कुछ देखकर
उस आग को बुझा देना चाहता है
जो उसके अंदर हैं
बरसों से
अब जाने क्या हुआ !
***

हवन

विकास के नाम पर
खूब सोखा गया पानी
खूब चमकाई गईं मकानों की देह
कालीन और मखमलों पर दौड़ाए गए घोड़े
चिमनियों के नाम पर
खेतों को बनाया गया बाँझ
शहरों के नाम पर जंगलों की काँटी गई गर्दन
और
नदियों के गर्भ में
ठूंसा गया मलबा
बांधों के नाम पर उजाड़े गए
हज़ारों गाँव
विकास के महाकुम्भ में
पढ़े गए मन्त्र
फूकी गई बस्तियाँ
सजाए गए शहर
और पैदा की गईं सड़ांध

हम बस देखते रहे
लोग रोटियाँ सेंकते रहे
और फुलाते रहे छाती
आरोप-प्रत्यारोप लगाते रहे
गोल घेरे में ठहाके मार मारकर
उधर मिटते रहा धरती से धीरे-धीरे .....सब कुछ

किसे कहे दोषी यहाँ
लम्बी हैं फेहरिस्त
जिसे बाँचने में लगेगी पूरी एक सदी

अतीत से वर्तमान तक
हर किसी के हाथ लाल हैं
सभी की हैं हिस्सेदारी
विकास के इस हवन में।
***

सबूत

तुम भूलकर भी
लौट मत आना
इस ओर
यहाँ तो झूठी मर्यादा और
झूठे मूल्यों की ढींग हांकी जाती है

यहाँ बुद्धि के सभासद
तर्क के चाकू से
निष्कर्ष तक पहुँचते हैं
इनके हृदय पत्थर के हैं
ये व्यापारी हैं सौदों के
समझ ना पाएँगे
प्रेम को
खींचेंगे प्रेम के धागों को
और तुम
अवाक् सी रहोगी
तमाम सज़ाएँ देंगे
और
सबूत न दे पाओगी।
***

उम्मीद

लौटना मुश्किल है
नामुमकिन नहीं
उम्मीद कहूँ
या एक असम्भव सा स्वप्न
इतना कुछ होने के बाद भी ...
जब शहर के पाँव के नीचे
दबते जा रहा हो जंगल
प्यास से तड़प रही हो नदियाँ
और / पहाड़ों का गंजापन
सुने आँगन का रुदन
जब धीरे-धीरे धरती से
विदा हो रही हो गौरिया
इतना कुछ होने के बाद भी
बचा हुआ है उम्मीद का
थोड़ा सा जंगल
और मनुष्य का थोड़ा सा सत्व
जिससे अब भी
बचाया जा सकता है धरती को ।
***

संपर्क : मु.पो., ग्राम -भरकावाड़ी, त. जि. - बैतूल म.प्र.,पिन. 460001
ई-मेल : charpe.umesh@gmail.com
मोबाइल : 8966943998, 8962805866

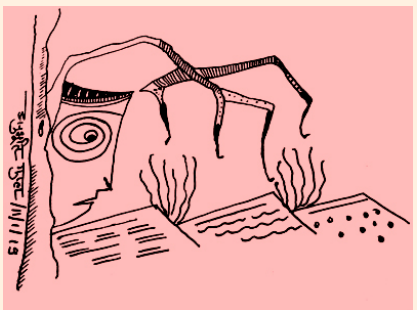

राधा गुप्ता की कविताएँ

बुद्धिमत्ता

मैं विमूढ़ हूँ,
क्योंकि मैं
सौम्य हूँ , सरल हूँ
औरों के प्रति विनम्र हूँ।
मैं कृतज्ञ हूँ,
दूसरों के उपकार को मानती हूँ।

मैं सत्यनिष्ठ हूँ ,
सत्यम्, शिवम्, सुन्दरम् की
अवधारणा को अमल में लाती हूँ।
मैं कर्मनिष्ठ हूँ ,
भगवान् श्रीकृष्ण की सर्वश्रेष्ठ सूक्ति
'कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन'
में विश्वास रखती हूँ।
कदाचित इसीलिये
पाण्डवों की तरह मैं भी
अनकहे और अनकिए की
अनवरत यातना भोगती हूँ।
और वे बुद्धिमान हैं
जो अहर्निश झूठ बोलते हैं
दुर्योधन की तरह
घात पर घात करते हैं
दूसरों के इन्द्रप्रस्थ को
अपना इन्द्रप्रस्थ समझते हैं।
अपनों को विश्वास देकर
विश्वासघात करते हैं।
परछिद्रान्वेषी हैं, आत्मश्लाघी हैं ,
पर उपदेशक हैं, स्वनि:शेषक हैं।
धन से परिपूर्ण हैं,
संवेदना से शून्य हैं ।
आज के युग में
यही तो बुद्धिमत्ता के मूल्य हैं।
***

बेगैरत

ये शिकवे , ये गिले न होते
गर तुम बेगैरत न होते ।
ये दूरियाँ , ये मजबूरियाँ न होतीं
गर तुम बेगैरत न होते ।
ये तन्हाइयाँ, ये रुसवाइयाँ न होतीं
गर तुम बेगैरत न होते ।
परिस्थितियों के संग ये खुदगर्जियाँ न होतीं
गर तुम बेगैरत न होते ।
खुशियों से खनकता घर-आँगन होता
गर तुम बेगैरत न होते ।
अश्कों से बयां ये दास्तां न होती
गर तुम बेगैरत न होते ।
***

आँसू

मत बनाओ आँसुओं को
अपने जीवन का सहारा
आँसुओं का स्वाद खारा
दृष्टियों में फूल गूंथो
छंद अधरों में सजाओ
कल्पना में डूब सुख की
कर्म की वीणा बजाओ
विषाद के दलदल में फंसकर
प्राण देना उचित नहीं
खोजिए पीयूष धारा
आँसुओंका स्वाद खारा

जंग लगने दीजिए मत
योग्यता के शस्त्र में
गंदगी लगने न देना
ज़िन्दगी के वस्त्र में
एक सुख की चाह में
वारो न अगणित नित्य के सुख
सहज में जो प्राप्य
उस पर अधिकार हमारा
आँसुओं का स्वाद खारा
मत बनाओ आँसुओं को
अपने जीवन का सहारा
आँसुओं का स्वाद खारा
***

संपर्क: 2284 Cook Drive, Easton PA 18045,SA
मोबाइल : 8603240246

प्रतिभा सिंह की कविताएँ

मत करो नियमों की बात आज

सिसकियाँ और रुदन के बीज
क्या पनपते रहेंगे
बलिदानों की धरा पर

क्या पसीने की बूँदे
न पिघला देंगी
तुम्हारे पत्थर के सीने को

चहकते, महकते, मचलते, उछलते
बच्चों की कोहनियों की चोटें
कब तक बोती रहेंगी
व्यथा की फ़सल

क्या आज बोए बीज का
पककर फूटना बिखरना
न देगा नए बीजों को जन्म
क्या उपजती व्यथाएँ साथ साथ
न कर देंगी अपने कँटीले हाथों से
वक़्त का सीना ज़ख़्मी

ख़ाली पेट की आग झुलसाती है कलेजा
मत करो नियमों की बात आज
वो नहीं समझेंगे
तुम्हारा गुणगान
न विधान, न संविधान ।
***

ख़ुशनुमा प्रहर में

समुद्र के छलनी हृदय को
दूर तक मरहम लगातीं
चाहतों की पट्टियाँ

शांत हलचलें
शाम के वक़्त की
जब सिमट जाता है साया क़दमों तले
डूब जाता है दर्द तुम्हारे गहराई के विस्तार
पर औंधे मुँह
सुनातीं हैं लहरों की लोरियाँ

टाँके गए सितारों की ओढ़नी
बिछने को तैयार है
धीरे हिलते डुलते गुनगुनाते तुम्हारे मस्तक
पर
दूर तलक जाती ख़्वाबों की रुनझुन आवाज़ें
दस्तख़ों में तब्दील होते वक़्त
इस ख़ुशनुमा माहौल की
रंगीनियाँ चुराने को तैयार हैं

अपने अपने ख़यालों में गुम हो चुकी
ब्रह्मांड की एक एक ईंट
कुछ देर और ठहरना था
पत्थरों में संजीवनियों को
इन नज़ारों की भूलभुलैया में
कि अब रात को कुतरने लगा है उजाला...
***

गुलाब गुमशुदा हैं

एक सतरंगी शाम में
शुष्कता पतझड़ की
सावन की नमी
मन के लिबास पर
उकेरी गयी मुस्कुराहट है
या क्षितिज में गाड़ी गई कील

दरअसल
हम उसूलों में जूझते हुए
औरों के दिए नाम में डूबकर
घूम जाते हैं सारी दुनिया
और उन्हीं के मौसम में ढूँढ़ते हैं
अपनी प्यास बुझाने के असबाब

अपनी परछाइयों को भी छुपाते हैं
अपनी ही साँसों के शोर से
मुक्ति के आधार भी तलाशते हैं
अतीत के विचारों के भँवर में
पाते हैं गुमशुदा फिर
उन्ही के बनाए हुए हवनकुंडों में
जो दूसरों को साबित करने का बीड़ा उठाते हैं

और भूल जाते हम अपना रास्ता
आज़ादी के द्वीप के किसी कोने में
***

नई सदी के तमतमाए चेहरे

ढूँढ़ रहे हैं अपने होने का अर्थ
मज़दूर दिवस पर मज़दूर
महिला दिवस पर महिला
बल दिवस पर बालक
शिक्षक दिवस पर शिक्षक
और भी
इसी तरह कई चेहरे
प्रकाश की अंतिम बूँद में
ढूँढ़ रहे हैं अपने गुमनाम पते की सही चिट्ठी
***

अभी चल देंगे

शाम की आख़िरी बूँद तक
उड़ेंगे
चोंचों में भरकर
पूरे दिन की कमाई

लौटेंगे अपने आशियानों में
विश्व की पूरी परिक्रमा के बाद
थके माँदे राही से

यह महाजीवन
बड़ी ही साधारण सी यात्रा का एक बिंदु है
कितनी अद्वितीय होती हैं संवेदनाएँ
खींच लेती हैं
अपनों को अपनी ओर

सोखतीं हैं सभी कसैले स्वाद
बिना किसी गुणा भाग के
***

संपर्क: cjpratibha.singh@gmail.com

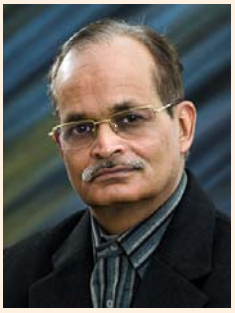

सूर्य प्रकाश मिश्र के गीत

बाबूजी

बाबूजी बाज़ार गए हैं

पेंशन जल्दी खत्म हो गई
लेने और उधार गए हैं

ढेरों किस्से सूझ रहे हैं
जीवन भर अनबूझ रहे हैं
चन्द बची साँसों के बल पर
भाग्यवाद से जूझ रहे हैं

हार उन्हें स्वीकार नहीं ,पर
सत्य यही है हार गए हैं

वक्त बड़ा खुदगर्ज़ हो गया
आय से अधिक क़र्ज़ हो गया
निभा रहे पूरी शिद्दत से
साँसे लेना फ़र्ज़ हो गया

साथी कहने सुनने वाले
सारे स्वर्ग सिधार गए हैं

पेड़ लगाए रह कर भूखे
फलते हैं पर लगते रूखे
माली के हिस्से में आया
जीवन जीना अपने बूते

हाथों में ले गिरवी रखने
उजड़ गया संसार गए हैं
***

मैं छूट गया

तुम शीशे के उस पार कहीं
मैं छूट गया इस पार प्रिये
रिश्तों के आँगन चौबारे
सब बदल गए आकार प्रिये

चौखट पर उँगली के निशान
आँखें सहलाया करती हैं
कुछ दिये पुरानी यादों के
चुपचाप जलाया करती हैं

समझाने की ज़िद में तकिया
खुद भीग गया हर बार प्रिये

घुन गया छड़ी का एक सिरा
रुख बदल रही थोड़ा -थोड़ा
चश्मा लंगड़ाया करता है
पर अब तक साथ नहीं छोड़ा

दिन हुए बड़े रातें लम्बी
छोटा लगता अखबार प्रिये

टूटी ,फूटी ,खुरदुरी ,मुड़ी
बातों में खोट नहीं लगती
लहजा चाहे जैसा भी हो
अब दिल को चोट नहीं लगती

ये नया तरीका जीने का
सीखा है पहली बार प्रिये

ज़िन्दगी और धोती दोनों
लग रहीं एक जैसी ही हैं
जो तहें लगाईं थी तुमने
वो तहें अभी वैसी ही हैं

रह गई महक उन हाथों की
जो मिली हमें उपहार प्रिये

घुटने के दर्द की गोली अब
बिल्कुल आराम नहीं देती
सूखी खाँसी पड़ गई गले
जाने का नाम नहीं लेती

लड़ रहा अभी पर पता नहीं
कब मिल जाएगी हार प्रिये
***

संपर्क: बी 23/42/ए के, बसन्त कटरा,
गाँधी चौक, खोजवा (दुर्गाकुंड),
वाराणसी 221001
ई-मेल: surya.misra1958@gmail.com
मोबाइल: 9839888743

नवगीत

ज्ञानेन्द्र मोहन 'ज्ञान' के नवगीत

संबंधों के मधुर गीत आख़िर कैसे गाते।
बहुत पास से देख लिए हैं सब रिश्ते-नाते।

जिससे की उम्मीद
कि मुझसे पूछे मेरा हाल।
जब करीब से गुज़रा
उसकी तेज़ हो गई चाल।

हम अपने मन की मजबूरी
किसको समझाते।

अपना मतलब हल होने तक
बिछे रहे जो लोग।
सीना ताने खड़े हुए हैं
यह कैसा सँयोग।

ज़हर भरी मुस्कान फेंकते हैं आते-जाते।

अपनी-अपनी पड़ी सभी को
खुलकर कौन मिले।
झुँझलाहट है हर चेहरे पर
झेले नहीं झिले।

हिम्मत होती नहीं कि खोलूँ
और नए खाते।
***

देखो मत मेरे सपनों की चादर रक्तसनी।
सोता हूँ मैं तकिए नीचे रखकर नागफनी।

जिसको अपना समझ बता दी
अपने मन की बात।
मुझे खोखला करने की
उसने कर दी शुरूआत।

जिन्हें हिफाज़त सौंपी थी, कर बैठे राहजनी।

मैंने अपने सुखद पलों को
जिनमें बाँट दिया।
उनने उम्मीदों की
हर टहनी को छाँट दिया।

मेरे मन की पीड़ा अब तक होती रही घनी।

बदल गए सब अर्थ
प्यार है बस सौदेबाज़ी।
लेकिन ऐसे समझौतों को
हुआ न मैं राज़ी।

अक्सर खुद से ही रहती है मेरी तनातनी।
***

मन का मीत मिले तो जी लें एक बार डटके।
क्या बतलाएँ इस उलझन में कहाँ- कहाँ भटके।

आकर्षक चेहरों ने मुझको
कितनी बार छला।
वो मतलबपरस्त निकला
जो दिखता रहा भला।

उम्मीदों पर भारी ताले रहे सदा लटके।

जो भी मिला उसे जी भरकर
मैंने प्यार किया।
बदले में नफरत ही पाई
फिर भी प्यार दिया।

दूर निकल जाने पर भी कुछ लोग बहुत खटके।

अपनी-अपनी निपटो
सारी बस्ती डूब रही।
इस दुनिया में रीति प्यार की
यह भी खूब रही।

खड़े रहे अपनी-अपनी दीवारों से सटके।
***

संपर्क : ब्लॉक 3/111/16, आयुध नगर,
राजगीर, नालन्दा (बिहार) 803116
ई-मेल : gyanendramohanz@gmail.com
मोबाइल : 7905698382

ग़ज़ल

सुभाष पाठक 'ज़िया' की ग़ज़लें

एक तस्वीर थी तुम्हारे साथ,
चाँद था और थे सितारे साथ,
साथ फूलों के तितलियाँ जैसे,
ऐसे लगते हो तुम हमारे साथ,
तैरते हो ख़िलाफ़ दरिया के ,
क्यों रहेंगे बताओ धारे साथ,
लज़्ज़ते कश्मकश को क्या कहिये,
दोनो जानिब से हैं इशारे साथ,
तितलियों से जुदा नहीं हैं फूल,
हर वरक़ पे इन्हें बना रे साथ,
ये ग़ज़ब है भई ग़ज़ब है ये,
आग पानी हवा शरारे साथ,
कोई अहसान तो नहीं है ज़िया
रहने दे गर नहीं सहारे साथ।
***

क्यूँ न अब उसके रू ब रू रोयें
अब के आँसू नहीं लहू रोयें,
मैं ज़ियादा न आप कम रोओ,
पास आओ कि हू ब हू रोयें,
कौन है, किसको फर्क़ पड़ता है,
घर में रोयें कि कू ब कू रोयें,
ख़ुश्क आँखों का रोना भी क्या है,
आँसुओ से करें वुज़ू रोयें,
वक़्त ए रुख़्सत है सो ख़ुदा के लिए,
रख लें आँखों की आबरू रोयें,
हाय छिन जायगा हमारा दर्द ,
ज़ख़्म होने लगे रफ़ू रोयें ,
हां अभी अश्क दर्द देते हैं
धीरे धीरे बनेगी ख़ू (आदत) रोयें
ऐ ज़िया तेरे ज़ख़्म की लज़्ज़त,
दोस्त तो दोस्त हैं अदू रोयें।
***

संपर्क : ग्राम/ पोस्ट समोहा तहसील
करेरा, ज़िला शिवपुरी मध्यप्रदेश
ई-मेल : subhashpathak817@gmail.com
मोबाइल : 8878355676

प्रशांत चक्रवर्तुला की कविताएँ

कौन सा किरदार हूँ मैं

एक मंच नया सज रहा है
एक मंच वजूद खो रहा है
एक से उम्मीदें हैं
दूजे से सिर्फ़ यादें हैं
निभाए मैंने बहुत से किरदार
कहानी है नई हर बार
हर किरदार का है
एक अनोखा सफ़र
वो मंज़िल पाता है
हर चौराहे से गुज़रकर
चौराहों पर बहुत से सवाल हैं
ज़िंदगी जवाब ढूँढ़ लेती है.....
मेहनत-मशक्क़त को अपनाया
कभी ख़ुद को भी गँवाया
जीने की आड़ में
गुज़रता रहा हूँ चौराहों से
जहाँ से कई किरदार निकलते हैं
ढूँढ़ रहा हूँ अभी तक
कौन सा किरदार हूँ मैं.....
***

कहानियाँ

कहानियाँ
बड़ी रोचक होती हैं

बसती हैं ये हमारे आस-पास
और हमारी सोच में
हमारे एहसासों में
हर जगह इन्हें पाते हैं
हर पल ये हमारे साथ हैं
हमारी हर कोशिश में हैं
जीवन के अर्थ में हैं

हर किसी की एक कहानी है
हर कहानी के कई किरदार हैं
मैं हर कहानी का किरदार हूँ
उसकी लहर में बहता हूँ
किसी की कल्पना को रूप देता हूँ
उसके अस्तित्व का एक हिस्सा हूँ

हर कहानी का भी एक अंत है
लगता हैं उसी से मेरा अंत है
क़िस्सों के दुनिया का मुसाफ़िर हूँ
किसी मंज़िल पे रुकता नहीं हूँ
हर पल एक नई कहानी के साथ
मेरा सफ़र जुड़ा है....

बड़ी रोचक होती हैं
हमारे इर्द-गिर्द बिखरी कहानियाँ.....
***

हुई सुबह आधी रात को

हुई सुबह आधी रात को
इच्छा हुई
काश! जी सकूँ गुज़रे हुए कल को

गहरी नींद में था जब
एक ख़याल ने दस्तक दी
ख़ुद को रोक न पाया जब
मेरी आँख खुल गई
मेज़ पर पड़ा ख़त उठाया
बचपन के यार का था
ख़त खोलकर ख़ुश हुआ
उस में उसी मिट्टी की ख़ुशबू पाई
जिसमें बचपन में खेला था
बचपन की उसने याद दिलाई
बीते वक़्त का भी ज़िक्र किया
हमको मिले सालों गुज़रे
लगा कि हम कल ही बिछड़े
एक दूसरे से हमारा वादा था....
अपने ख़्वाबों को जीने का
ख़्वाबों की खोज में
ख़ुद को उसने शायर बनाया
पहाड़ों के बीच घर भी बनाया
गुज़रा हुआ कल मेरे सामने आया
अलग सा रास्ता मैंने अपनाया
शहर की भीड़ में गुमा दिया खुद को

गुज़रे हुए कल को जीने की चाह में
हुई सुबह आधी रात को।
***

अल्फ़ाज़ से मेरा रिश्ता

लड़कपन में मैंने
अपनी कुछ नज़्में जला दीं
जल गए काग़ज़, स्याही भी जल गई
उनके साथ चंद जज़्बात भी
वक़्त तो बहुत निकल गया
पर छूटा नहीं अल्फ़ाज़ से रिश्ता मेरा
लिखने की कोशिशें भी कई बेकार गईं
शायद मुझसे अल्फ़ाज़ रूठ गए....
अपने आप से मायूस मैं बैठा था
ना लिखा तो टूट जाऊँगा
अचानक एक आहट सी हुई
देखा तो एक लफ़्ज़ मुझे
बेबस पाकर मेरे क़रीब आया
खोए हुए जज़्बात वापस लाया
सैलाब की तरह काग़ज़ पर उतरा
हर एक साँस का एहसास दिलाया
अपने आप पर क़ाबू मैंने पाया
ज़िंदा होने का एहसास आया
जो टूट जाए वो रिश्ता नहीं
तोड़ा नहीं अल्फ़ाज़ ने रिश्ता मेरा।
***

संपर्क : 331 Turnbury Cir, Ballwin, MO-63011
ईमेल: chakra.prashanth@gmail.com

समाचार-सार

19 वाँ आचार्य निरंजननाथ सम्मान समारोह सम्पन्न

हिन्दी के मूर्धन्य साहित्यकार एवं राजस्थान साहित्य अकादमी के पूर्व अध्यक्ष आचार्य निरंजननाथ की स्मृति में दिए जाने वाले सम्मान इस वर्ष हिन्दी की तीन विधाओं उपन्यास, कहानी तथा कविता पर प्रदान किए गए। इन तीनों राष्ट्रीय सम्मानों में उपन्यास 'अकाल में उत्सव' के लिए पंकज सुबीर, सीहोर, मध्यप्रदेश को कहानी संग्रह 'हवा में ठहरा सवाल' के लिए गोपाल सहर, कपड़वंज, गुजरात को तथा कविता संग्रह 'विज्ञप्ति भर बारिश' के लिए ओम नागर, कोटा को इक्कीस-इक्कीस हज़ार रुपये नक़द भेंट कर सम्मानित किया गया।

साथ ही संभाग स्तर पर दिया जाने वाला ग्यारह हज़ार रुपये का पुरस्कार मुरलीधर कनेरिया, नाथद्वारा को उनके समग्र साहित्यिक अवदान पर प्रदान किया गया।

आचार्य निरंजननाथ स्मृति सेवा संस्थान की ओर से होटल स्वागत में आयोजित भव्य समारोह में 9 जून 2019 को उक्त पुरस्कार प्रदान किए गए। ज्ञात रहे कि 1995 से आरंभ उक्त राष्ट्रीय पुरस्कारों में अब तक 18 विख्यात लेखकों को उक्त पुरस्कार दिए जा चुके हैं और इस वर्ष तीन लेखकों को उक्त पुरस्कार प्रदान किए गए। साथ ही इस वर्ष का छठा आचार्य निरंजननाथ विशिष्ट साहित्यकार सम्मान मुरलीधर कनेरिया को भेंट किया गया।

इस अवसर पर मुख्य अतिथि प्रतिष्ठित साहित्यकार वेद व्यास अपरिहार्य कारणों से नहीं पहुँच पाए लेकिन उन्होंने समारोह की सफलता की कामना करते हुए अपने संदेश में कहा कि अकादमी एवं सेठों द्वारा स्थापित साहित्यिक पुरस्कार एक अभियान की तरह दिए और प्रचारित किए जाते हैं। जबकि कर्नल देशबंधु आचार्य द्वारा अपने पिता श्री आचार्य निरंजननाथ के साहित्यिक अवदान की स्मृति में स्थापित यह पुरस्कार हिन्दी जगत में अत्यंत प्रतिष्ठित माना जाता है।

सम्मान समिति के संयोजक वरिश्ठ साहित्यकार क़मर मेवाड़ी ने सम्मानों की पारदर्शी चयन प्रकिया पर प्रकाश डालते हुए कहा कि आज जहाँ देश के बड़े साहित्यिक पुरस्कार विवादास्पद हो गए हैं वहाँ आचार्य निरंजननाथ सम्मान को बड़े आदर के साथ देखा जाता है एवं साहित्य जगत् में इस पुरस्कार की बड़ी चर्चा रहती है। क़मर मेवाड़ी ने आचार्य साहब से जुड़े कई संस्मरण भी सुनाए और यह भी बताया कि उनकी हिन्दी साहित्य में महत्त्वपूर्ण पुस्तकें प्रकशित हैं।

आचार्य निरंजननाथ सम्मान समिति के अध्यक्ष कर्नल देशबंधु आचार्य ने अपने उद्बोधन में कहा कि अब यह सम्मान साहित्य की तीन अलग-अलग विधाओं में प्रदान किया जाता रहेगा। साथ ही संभाग स्तरीय लेखक को उसके समग्र साहित्यिक अवदान पर विशिष्ट साहित्यकार सम्मान जारी रहेगा।

समारोह की अध्यक्षता कर रहे प्रख्यात कवि, कथाकार, डायरी लेखक एवं समीक्षक माधव नागदा ने कहा कि आज साहित्य की त्रिवेणी का सम्मान किया गया। सोशल मीडिया के इस दौर में जबकि पाठकों की संख्या कम होती जा रही है। श्रेष्ठ साहित्यकारों को सम्मानित करना समाज को साहित्य से जोड़ने का महत्त्वपूर्ण उपक्रम है। प्रसन्नता का विषय है कि आचार्य निरंजननाथ सम्मान समिति बरसों से इस सामाजिक भूमिका का निर्वहन करती आ रही है।

समारोह के प्रारंभ में स्वागताध्यक्ष और साहित्यिक पत्रिका 'अभिनव सम्बोधन' के सम्पादक मधुसूदन पाण्ड्या ने सभी अतिथियों का स्वागत करते हुए कार्यक्रम की रूपरेखा पर प्रकाश डाला। सुप्रसिद्ध शायर शेख अब्दुल हमीद ने अपनी ताज़ा ग़ज़ल से समारोह को ऊचाँइयाँ प्रदान की।

इस अवसर पर श्रीमती सुधा आचार्य की दूसरी कविता पुस्तक 'है कुछ और भी' का सभी अतिथियों ने लोकार्पण किया। इससे पूर्व विद्वान समीक्षक नगेन्द्र मेहता ने कविता पुस्तक पर अपना सार गर्भित आलेख प्रस्तुत किया। लोकार्पण के बाद कृतिकार श्रीमती सुधा आचार्य ने अपनी कुछ कविताओं का वाचन किया जिसे श्रोताओं ने खूब पसन्द किया।

इसके साथ ही सभी पुरस्कृत साहित्यकारों का परिषद सदस्यों त्रिलोकी मोहन पुरोहित, अफ़ज़ल खाँ अफ़ज़ल, डॉ. नरेन्द्र निर्मल तथा किशन कबीरा की परिचय प्रस्तुति के पश्चात् स्वागताध्यक्ष मधुसूदन पाण्ड्या द्वारा शाल, सम्मान समिति के अध्यक्ष कर्नल श्री देाबंधु आचार्य द्वारा प्रशस्ति पत्र, समारोह अध्यक्ष माधव नागदा द्वारा प्रतीक चिह्न, सम्मान समिति के संयोजक क़मर मेवाड़ी द्वारा स्मृति चिह्न, कर्नल देशबंधु आचार्य तथा श्रीमती सुधा आचार्य द्वारा पुरस्कार राशि एवं परिषद् अध्यक्ष श्री राधेयाम सरावगी मसूदिया द्वारा श्रीफल भेंट किया गया।

सभी पुरस्कृत साहित्यकारों ने अपनी रचना प्रक्रिया पर प्रकाश डालते हुए आचार्य निरंजननाथ सम्मान की प्रशंसा की और कहा कि हिन्दी संसार में इस सम्मान की ज़बरदस्त प्रतिष्ठा है और पुरस्कृत साहित्यकार उक्त सम्मान प्राप्त कर अत्यन्त गौरवान्वित महसूस करता है।

मंच पर विराजमान सभी अतिथियों, पत्रकार साथियों, पत्रवाचनकर्ता तथा समारोह में उपस्थित पूर्व पुरस्कृत रचनाकारों को शाल, श्रीफल एवं स्मृति चिह्न भेंट कर सम्मानित किया गया।

समारोह में ईश्वरचन्द्र शर्मा, जीतमल कच्छारा, डॉ. धर्मचन्द मेहता, श्रीमती दुर्गा शर्मा, कल्याण सिंह पगारिया, प्रमोद सनाढ्य, चतुर कोठारी, नारायण सिंह राव, फतहलाल गुर्जर 'अनोखा', किशन धीरज, दुर्गाकर मधु, सूर्यप्रकाश दीक्षित, सुधा मेहता, कुसुमलता अग्रवाल, गणपत धर्मावत, हरकलाल बापना आदि शताधिक साहित्यकारों और सामाजिक कार्यकर्ताओं की महत्त्वपूर्ण भागीदारी रही। कार्यक्रम का सफल तथा गरिमामय साहित्यिक संचालन प्रसिद्ध कवि एवं विचारक डॉ. नरेन्द्र निर्मल द्वारा किया गया।

***

पंकज सुबीर के नए उपन्यास ''जिन्हें जुर्म-ए-इश्क़ पे नाज़ था'' का विमोचन

''एक रात की कहानी में सभ्यता समीक्षा है ये उपन्यास''- डॉ. प्रज्ञा

शिवना प्रकाशन द्वारा आयोजित एक गरिमामय साहित्य समारोह में सुप्रसिद्ध कथाकार पंकज सुबीर के तीसरे उपन्यास ''जिन्हें जुर्म-ए-इश्क़ पे नाज़ था'' का विमोचन किया गया। इस अवसर पर सुप्रसिद्ध कथाकार, उपन्यासकार तथा नाट्य आलोचक डॉ. प्रज्ञा विशेष रूप से उपस्थित थीं। कार्यक्रम का संचालन संजय पटेल ने किया।

श्री मध्य भारत हिंदी साहित्य समिति के सभागार में आयोजित इस समारोह में अतिथियों द्वारा पंकज सुबीर के नए उपन्यास का विमोचन किया गया। इस अवसर पर वामा साहित्य मंच इन्दौर की ओर से पंकज सुबीर को शॉल, श्रीफल तथा सम्मान पत्र देकर सम्मानित किया गया। मंच की अध्यक्ष पद्मा राजेन्द्र, सचिव ज्योति जैन, गरिमा संजय दुबे, किसलय पंचोली तथा सदस्याओं द्वारा पंकज सुबीर को सम्मानित किया गया।

स्वागत भाषण देते हुए कहानीकार, उपन्यासकार ज्योति जैन ने कहा कि पंकज सुबीर द्वारा अपने नए उपन्यास के विमोचन के लिए इंदौर का चयन करना हम सबके लिए प्रसन्नता का विषय है; क्योंकि उनका इंदौर शहर से लगाव रहा है और यहाँ के साहित्यिक कार्यक्रमों में भी वे लगातार आते रहे हैं। इस उपन्यास का इंदौर में विमोचन होना असल में हमारे ही एक लेखक की पुस्तक का हमारे शहर में विमोचन होना है।

इस अवसर पर बोलते हुए डॉ. प्रज्ञा ने कहा कि नई सदी में जो लेखक सामने आए हैं, उनमें पंकज सुबीर का नाम तथा स्थान विशिष्ट है। वह लगातार लेखन में सक्रिय हैं, उनकी कई कृतियाँ आ चुकी हैं और पाठकों द्वारा सराही भी जा चुकी हैं। पिछला उपन्यास 'अकाल में उत्सव' किसानों की आत्महत्या पर केंद्रित था, तो यह नया उपन्यास ''जिन्हें जुर्म-ए-इश्क़ पे नाज़ था'' सांप्रदायिकता की चुनौतियों से रू-ब-रू होता दिखाई देता है। इस उपन्यास के बहाने पंकज सुबीर ने उन सारे प्रश्नों की तलाश करने की कोशिश की है, जिनसे हमारा समय इन दिनों जूझ रहा है। सांप्रदायिकता की चुनौती कोई नया विषय नहीं है; बल्कि यह समूचे विश्व के लिए आज एक बड़ी परेशानी बन चुका है। पंकज सुबीर ने इस उपन्यास में वैश्विक परिदृश्य पर जाकर यह तलाशने की कोशिश की है कि मानव सभ्यता और सांप्रदायिकता, यह दोनों पिछले पाँच हज़ार सालों से एक दूसरे के साथ-साथ चल रहे हैं, इसमें कोई नई बात नहीं है। पंकज सुबीर ने यह उपन्यास बहुत साहस के साथ लिखा है। इस उपन्यास को लेकर किया गया उनका शोध कार्य, उनकी मेहनत इस उपन्यास के हर पन्ने पर दिखाई देती है। उपन्यास को पढ़ते हुए हमें एहसास होता है कि इस एक उपन्यास को लिखने के लिए लेखक ने कितनी किताबें पढ़ी होंगी और उनमें से इस उपन्यास के और सांप्रदायिकता के सूत्र तलाशे होंगे। मैं यह ज़रूर कहना चाहूँगी कि एक पंक्ति में ''यह उपन्यास एक रात में की गई सभ्यता समीक्षा है''। एक रात इसलिए क्योंकि यह उपन्यास एक रात में घटित होता है। उस एक रात के बहाने लेखक ने मानव सभ्यता के पाँच हज़ार सालों के इतिहास की समीक्षा कर डाली है। यह एक ज़रूरी उपन्यास है, जिसे हम सब को ज़रूर पढ़ना चाहिए।

उपन्यास के लेखक पंकज सुबीर ने अपनी बात कहते हुए कहा कि इस उपन्यास को लिखते समय बहुत सारे प्रश्न मेरे दिमाग में थे। सांप्रदायिकता एक ऐसा विषय है जिस पर लिखते समय बहुत सावधानी और सजगता बरतनी होती है, ज़रा सी असावधानी से सब कुछ नष्ट हो जाने की संभावना बनी रहती है। इस उपन्यास को लिखते समय मेरे दिमाग़ में बहुत सारे पात्र थे, बहुत सारे चरित्र थे। इतिहास में ऐसी बहुत सारी घटनाएँ थीं, जिन घटनाओं के सूत्र विश्व की वर्तमान सांप्रदायिक स्थिति से जुड़ते हुए दिखाई देते हैं। मैं उन सब को इस उपन्यास में नहीं ले पाया। फिर भी मुझे लगता है कि मैंने अपनी तरह से थोड़ा प्रयास करने की कोशिश की है, बाकी अब पाठकों को देखना है कि मैं अपने प्रयास में कितना सफल रहा हूँ।

अंत में आभार व्यक्त करते हुए शिवना प्रकाशन के महाप्रबंधक शहरयार अमजद खान में पधारे हुए सभी अतिथियों का आभार व्यक्त किया। कार्यक्रम का सुरुचिपूर्ण संचालन संजय पटेल ने किया। अंत में अतिथियों को स्मृति चिह्न श्रीमती रेखा पुरोहित तथा श्रीमती किरण पुरोहित ने प्रदान किए।

इस अवसर पर सर्वश्री प्रभु जोशी, सरोज कुमार, सूर्यकांत नागर, सदाशिव कौतुक, कैलाश वानखेड़े, कविता वर्मा, किसलय पंचोली, डॉ. गरिमा संजय दुबे, समीर यादव, शशिकांत यादव, अर्चना अंजुम, सुदीप व्यास, आनंद पचौरी, प्रदीप कांत, प्रदीप नवीन, अनिल पालीवाल, कैलाश अग्रवाल, उमेश शर्मा, शरद जैन, भारती दीक्षित, पंकज दीक्षित, अनिल त्रिवेदी, आदित्य जोशी, राजेंद्र शर्मा सहित बड़ी संख्या में इंदौर, देवास, सीहोर तथा उज्जैन से पधारे हुए साहित्यकार उपस्थित थे।

***

कुल्लू व्यंग्य महोत्सव में प्रेम जनमेजय सम्मानित

कुल्लू में व्यंग्य महोत्सव का आयोजन स्थानीय देवसदन, कुल्लू में हुआ।जिसमें राजस्थान,महाराष्ट्र,जम्मू व कश्मीर, बिहार, दिल्ली, छत्तीसगढ़, मध्यप्रदेश शहरों के व्यंग्य लेखक शामिल हुए। तीन दर्जन से अधिक व्यंग्य लेखकों का शहर में होना किसी बड़ी घटना से कम नहीं।

इस मौके पर मुख्य अतिथि डॉ. गंगाराम राजी,डॉ हरीश पाठक,डॉ. सूरत ठाकुर ने व्यंग्ययात्रा पत्रिका का लोकार्पण के साथ चर्चित व्यंग्यकार डॉ. लालित्य ललित के व्यंग्य संचयन प्रेम जनमेजय की श्रेष्ठ व्यंग्य कथाएँ,लालित्य ललित के कविता संग्रह सितम प्यार के व अंबाला से प्रकाशित पुष्पगन्धा का लालित्य ललित पर केंद्रित व्यंग्य अंक,जम्मू कश्मीर से पधारी व्यंग्यकार अनिला चड़क की व्यंग्य कृति श्रोताओं के अकाल का लोकार्पण किया गया। मंचस्थ अतिथियों ने दीप प्रज्वलित कर कार्यक्रम की गरिमा बढ़ाई।

इस मौके पर साहित्य कला परिषद की ओर से अध्यक्ष डॉ सूरत ठाकुर ने मंचस्थ अतिथियों का स्वागत हिमाचली टोपी से किया। साथ ही चेतना इंडिया की ओर से इस मौके पर प्रेम जनमेजय व लालित्य ललित को सम्मानित किया गया।

वहीं दशार्क फाउंडेशन,दिल्ली की ओर से संस्था के अध्यक्ष पवन चोटिया व उपाध्यक्ष सुनीता शानू ने सुपरिचित व्यंग्यकार डॉ प्रेमजनमेजय का सम्मान किया। इस अवसर पर सम्मान के तौर पर संस्था की तरफ से श्रीफ़ल, शाल व नगद इक्यावन सौ रुपये की राशि भी भेंट की गई।

आमन्त्रित साहित्यकारों ने दस दर्जन व्यंग्य कृतियाँ डॉ. सूरत ठाकुर को कुल्लू के पाठकों के लिए भेंट की।

इस अवसर पर डॉ. प्रेम जनमेजय ने कहा कि इस तरह के आयोजन से निश्चित ही व्यंग्य की दशा और दिशा को बल मिलता है और हमें अपना लक्ष्य साधने में भी सुविधा होती हैं.व व्यंग्य यात्रा ने अपनी यात्रा सूरत ठाकुर जैसे फकीरों तय की हैं। जैसे आप हिमाचल के लिए संघर्ष कर रहे हैं,हम व्यंग्य के लिए कर रहे हैं। व्यंग्य का मूल तत्व भाषा कहन में व्यंग्य ही इसका मूल तत्व हैं।

महाराष्ट्र से आमन्त्रित वरिष्ठ पत्रकार हरीश पाठक ने कहा व्यंग्य का मूल तत्व है भाषा की विसंगतियाँ और विडंबना है। इसलिए कथ्य को प्राथमिकता दी जाती है। इसलिए कथ्य के साथ साथ रचना का कैप्शन रोचक हो जिससे पाठक के मन की उत्सुकता बनी रहती हैं। पाठक जी ने कहा कि मेरी जो मान्यता है कि रचना का मूल तत्व जो है भाषा की अदायगी है,उन्होंने लालित्य ललित के व्यंग्य की भाषा को भी रेखांकित किया। शिल्प का बेहतर प्रयोग किया जाना चाहिए।

वरिष्ठ साहित्यकार व मुख्य अतिथि सुंदरनगर से पधारे डॉ. गंगाराम राजी ने कहा- व्यंग्य यात्रा का जो काम परसाई ने नहीं किया वह काम डॉ. प्रेम जनमेजय ने किया। आज के परिदृश्य में जो विसंगतियाँ है उसको व्यंग्य के माध्यम से उभारने में व्यंग्य यात्रा ने काम करने का साहसिक कार्य किया हैं। आज व्यंग्य जीवन के हर क्रिया कलाप में प्रवेश कर चुका है। जीवन का एक अनिवार्य अंग व्यंग्य हैं। हमारा व्यंग्य पाठकों तक पहुँचना चाहिए। मैंने आज तक अपने जीवन में कोई क्लास नहीं छोड़ी,इस एक कारण है कि आपके जीवन में पुस्तक के प्रति एक ललक होनी चाहिए हमारी ज़िम्मेवारी है कि हमें प्रयास करना चाहिए कि अपने पाठकों तक पुस्तकें पहुँचाने की व्यवस्था की जानी चाहिए। हमें राजमार्ग पर चलने का शौक नहीं,हमें पगडंडियों पर चलने का मन है,जिसे अपने उद्देश्य पर चलना है और आगे बढ़ना हैं।

कार्यक्रम का संचालन डॉ. लालित्य ललित ने किया और आभार रणविजय राव ने किया।

***

व्यंग्य सत्र ''अहा! सब चलता है'' का आयोजन

आरंभ चैरिटेबल फाउंडेशन द्वारा स्वराज संचालनालय, संस्कृति विभाग भोपाल में व्यंग्य सत्र ''अहा! सब चलता है '' का आयोजन किया गया, जिसमें प्रमुख व्यंग्यकारों ने भाग लिया। कार्यक्रम की अध्यक्षता घनश्याम सक्सेना ने की, वहीं मुख्य अतिथि प्रसिद्ध व्यंग्यकार डॉ. हरि जोशी जी थे। कार्यक्रम के विशिष्ट अतिथि साधना बलबटे थीं।

इस कार्यक्रम में व्यंग्यकारों ने समाज के उन सभी सम सामयिक गंभीर मुद्दे, विसंगतियों, विद्रूपताओं, पाखंड अन्याय, शोषण, अत्याचार, लापरवाही, अफसरशाही पर अपनी कलम की धार तेज़ की और व्यंगात्मक शैली में कटाक्ष करते हुए अपने अपने व्यंग्य प्रस्तुत किए कि सब नहीं चलता है और नहीं चलना चाहिए। हमें इस गलत एटीट्यूड को बदलने की ज़रूरत है। वही चलना चाहिए जो सटीक है, सत्य है और उचित है। जो समाज को सकारात्मक दिशा में ले जाए और मानवीय मूल्यों की स्थापना हो।

विविध विषयों पर अहा! सब चलता है एक विविधा प्रस्तुति थी जिसमें उन सभी विषयों पर प्रहार किया गया जो काफी गंभीर और अनछुए भी थे। व्यंग्य की यही सफलता है कि तमाम विसंगतियों को ढूढ़ कर उन्हें प्रकाश में लाया जाए ताकि समाज की दिशा और दशा में सकारात्मक परिवर्तन हो। घनश्याम सक्सेना स्मृति कानूगो, अशोक व्यास, मधुलिका सक्सेना, राजकुमारी चौकसे, अर्चना मुखर्जी सहित बड़ी संख्या में व्यंग्यकार और श्रोता उपस्थित थे।

***

मृत्युंजय पाण्डेय को चौबीसवाँ देवीशंकर अवस्थी सम्मान

चौबीसवाँ देवीशंकर अवस्थी सम्मान युवा आलोचक मृत्युंजय पाण्डेय को उनकी आलोचना पुस्तक रेणु का भारत के लिए प्रदान किया गया। देवीशंकर अवस्थी के जन्मदिन के अवसर पर 5 अप्रैल, 2019 को नई दिल्ली के साहित्य अकादेमी सभागार में आयोजित सम्मान समारोह में वरिष्ठ साहित्यकार डॉ. विश्वनाथ त्रिपाठी ने प्रशस्तिपत्र, स्मृति चिह्न और ग्यारह हज़ार रुपये की राशि प्रदान कर श्री पाण्डेय को सम्मानित किया। इस वर्ष की सम्मान चयन समिति में अशोक वाजपेयी, राजेन्द्र कुमार, नंदकिशोर आचार्य और श्रीमती कमलेश अवस्थीशामिल थे। समिति की ओर से राजेन्द्र कुमार ने प्रशस्ति वाचन किया।

कार्यक्रम के आरंभ में दिवंगत साहित्यकार कृष्णा सोबती, नामवर सिंह, विष्णु खरे, अर्चना वर्मा, रमणिका गुप्ता व फ़हमीदा रियाज़ की स्मृति में मौन रखा गया। अपने अध्यक्षीय वक्तव्य में देवीशंकर अवस्थी को याद करते हुए डॉ. विश्वनाथ त्रिपाठी ने कहा कि अवस्थी जी की कृति 'विवेक के रंग' से ही उनकी गंभीरता अवलोकित होती है। वस्तुतः उनकी यह किताब नई आलोचना की भूमिका है। उन्होंने अवस्थी जी को उद्धृत करते हुए कहा कि घटित होते हुए को अत्यंत सजग बोध, सक्रिय बोध से देखना नए साहित्य की विशेषता है। 'विवेक के रंग' पुस्तक का जिक्र करते हुए उन्होंने कहा कि आलोचकीय लेखों का संपादन करते हुए साधारणीकरण की व्याख्या कर रहे थे, ये बड़ी बात थी। समानधर्मा लोगों पर लिखते हुए वे एक काव्यशास्त्रीय महत्त्वपूर्ण बात उठा रहे थे।

पुरस्कृत आलोचक मृत्युंजय पाण्डेय ने अपने वक्तव्य में कहा कि वर्तमान समय में आलोचना के नाम पर गिरावट आई है। वह अपने गुण-धर्म से कट चुकी है। नई पीढ़ी में पैनी दृष्टि, तटस्थता का अभाव है। यदि हम आलोचना धर्म से भागते हैं तो आने वाली पीढ़ी हमें कटघड़े में खड़ा करेगी। आलोचना को परम्परा से जोड़कर देखे जाने की ज़रूरत है। उत्तरआधुनिकता ने आलोचना को बहुत क्षति पहुँचाई है।

इस अवसर पर 'आलोचना का वर्तमान स्तर और देवीशंकर अवस्थी की आलोचना दृष्टि' विषय पर संगोष्ठी का आयोजन भी हुआ। कहानी को केंद्र में रखकर अपनी बात रखते हुए संजीव कुमार ने कहा कि अवस्थी जी की कहानी आलोचना में सूत्र बहुत कम मिलते हैं। कला दृष्टि उनकी विशेष चिंता है। आज हमारी साहित्य की आलोचना के लिए अब नए भाष्य बनाने पड़ेंगे।

पंकज चतुर्वेदी ने परिचर्चा को कविता पर केंद्रित करते हुए स्टीफ़न हॉकिंग को उद्धृत किया कि आक्रामकता व्यक्तित्व का सबसे बड़ा शत्रु है। उन्होंने अवस्थी जी की कविता 'सुनना भी धैर्य माँगता है' को व्याख्यायित करते हुए कहा कि कविता का सत्य स्वयं कविता है। उनकी कविता में हॉरर है तो दूसरी ओर उम्मीद की खिड़की खुली हुई है। उन्होंने अवस्थी जी की कई कविताओं को सुनाते हुए वर्तमान समय की विभीषिका की ओर संकेत किया।

वैभव सिंह ने अपने वक्तव्य में कहा कि आलोचना के बुनियादी मानदंड को कोई आलोचक अपना नहीं रहा, चिंतन गायब है। निर्भीकता, विचारशीलता जैसे आलोचना के मूल तत्व अवस्थी जी के यहाँ है। अवस्थी जी की आलोचना में आलोचक पाठक की चिंता कर रहा है।

कार्यक्रम में दिल्ली स्थित विभिन्न विश्वविद्यालयों के अध्यापक व छात्रों सहित बड़ी संख्या में साहित्यकार एवं संस्कृतिप्रेमी उपस्थित थे। स्वर्गीय देवीशंकर अवस्थी जी के बड़े सुपुत्र अनुराग अवस्थी ने कार्यक्रम में पधारे सभी अतिथियों और मीडिया बंधुओं का आभार व्यक्त किया। कार्यक्रम का गरिमामय संचालन डॉ. विनोद तिवारी ने किया।

***

डॉ. हंसा दीप के उपन्यास 'कुबेर' का लोकार्पण

पिट्सबर्ग (अमेरिका) से हिंदी व अंग्रेज़ी भाषा में प्रकाशित होने वाली साहित्य मासिक पत्रिका सेतु द्वारा टोरंटो में लिट फेस्टिवल का सफल आयोजन किया गया। इस अवसर पर डॉ. सुनील शर्मा के कविता संग्रह इंटरसेक्शंस, श्री अनुराग शर्मा द्वारा संपादित काव्य संकलन पतझड़ सावन बसंत बहार एवं शिवना प्रकाशन द्वारा प्रकाशित डॉ. हंसा दीप के उपन्यास 'कुबेर' का लोकार्पण हिंदी एवं अंग्रेज़ी के रचनाकारों की उपस्थिति में किया गया। उल्लेखनीय है कि यह डॉ. हंसा दीप का दूसरा उपन्यास है। उनका पहला उपन्यास 'बंद मुट्ठी' भी पाठकों द्वारा बहुत पसंद किया गया था। दो वर्ष से भी कम समय में डॉ. हंसा दीप का यह दूसरा उपन्यास प्रकाशित हुआ है।

अमेरिका में हिंदी के पाठन की चुनौतियों पर सुश्री सोनिया तनेजा के वक्तव्य के साथ सर्वश्री स्कॉट थॉमस आउटलर, हीथ ब्रोघर, नरेंद्र भांगू, डॉ. सुनील शर्मा, शेरान बर्ग एवं संगीता शर्मा ने अंग्रेज़ी में एवं सर्वश्री अखिल भंडारी, सुमन घई, सरन घई, अजय गुप्ता, अनुराग शर्मा व धर्मपाल महेंद्र जैन ने हिंदी में रचना पाठ किया। रचनाकारों ने हिंदी एवं अंग्रेज़ी में लिखी जा रही आधुनिक कविता की प्रासंगिकता और भविष्य पर सार्थक बातचीत करते हुए द्विभाषी कार्यक्रमों में रचनात्मक सहयोग पर बल दिया।

कार्यक्रम की अध्यक्षता कवि, व्यंग्यकार श्री धर्मपाल महेंद्र जैन ने की एवं कार्यक्रम के अंत में सुश्री संगीता शर्मा ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

***

'सृजन संवाद' की गोष्ठी में कहानी पाठ

जमशेदपुर, 9 जून 2019 'सृजन संवाद' की 84वीं गोष्ठी में बिलासपुर से आए उर्दू के कहानीकार-सामाजिक कार्यकर्ता खुर्शीद हयात ने अपनी कहानी 'नदी, पहाड़, औरत' का पाठ किया। कहानी स्त्री को नदी और पुरुष को पहाड़ के रूप में चित्रित करती है। पर्यावरण की चिंता से लैस कहानी पर श्रोताओं ने अपनी- अपनी प्रतिक्रिया दी।

डॉ. सन्ध्या सिन्हा को कहानी प्रकृति का केनवस और मानव मन की विसंगतियों को दिखाती नज़र आई। मुंबई से आए अभिनेता संजय ने कहा कि इस कहानी में कोई एक करैक्टर नहीं है, इसके बावजूद ढ़ेर सारे पात्र कहानी को संपूर्ण बनाते हैं। डॉ. मीनू रावत के अनुसार कहानी उर्दू में होने के कारण समझने में थोड़ी दिक्कत हुई। यदि इसे सुना नहीं, पढ़ा जाए तो समझने में अधिक आसानी होगी। अजय मेहताब ने इसे कई रंग की कहानी बताया, जिस पर शोध की आवश्यकता है।

डॉ. आशुतोष ने कहानी की भाषा को काव्यात्मक बताते हुए निर्मल वर्मा का जिक्र किया। कहानी आज के भयावह समय को प्रतिबिम्बित करती है। अरविंद अंजुम ने कहानी में मनोवैज्ञानिक और दार्शनिक तत्वों की चर्चा की। अभिषेक गौतम ने कहानी में स्त्री तत्वों की चर्चा करते हुए कहा कि यदि स्त्री नहीं होगी तो कुछ भी नहीं बचेगा। प्रदीप कुमार शर्मा ने कहानी में प्रकृति के नष्ट होने की चिंता को रेखांकित किया।

डॉ. विजय शर्मा ने कहानीकार के पढ़ने और यूट्यूब पर किसी दूसरे द्वारा पढ़े जाने के अंतर को बताया। कहानी एक से अधिक पाठ की माँग करती है।

***

'जारी अपना सफ़र रहा' का लोकार्पण

वरिष्ठ साहित्यकार रामदरश मिश्र के आवास पर हिंदी अकादमी दिल्ली के सौजन्य से प्रकाशित वेद मित्र शुक्ल कृत ग़ज़ल संग्रह जारी अपना सफ़र रहा का लोकार्पण कार्यक्रम संपन्न हुआ। इस अवसर पर कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए श्री मिश्र ने युवा ग़ज़लकार को शुभकामनाएँ देते हुए कहा कि हिंदी एक लोकतांत्रिक एवं समन्वयकारी भाषा है। एक विशेष भाषा और संस्कृति से उपजी ग़ज़ल विधा को सुंदरता के साथ हिंदी ने अपनाया है। इन बातों की व्यवहारिकता और प्रमाणिकता कृति जारी अपना सफ़र रहा के माध्यम से सरलता से समझी जा सकती है। लोकार्पित पुस्तक से कुछ ग़ज़लों का पाठ करते हुए उन्होंने ग़ज़ल संग्रह को अपने समय और आस-पास के अनेक खुरदरे सत्य उद्घाटित करने वाला बताया।

मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित विख्यात ग़ज़लकार नरेश शांडिल्य ने जारी अपना सफ़र रहा से वेद मित्र की प्रतिनिधि रचनाएँ पढ़ते हुए कहा कि पूरे ग़ज़ल संग्रह में हिंदी मिज़ाज को सफलतापूर्वक सहजता के साथ बनाए रखा गया है। संग्रह में संवेदना के स्तर पर ''दामन नहीं भिगोया होगा, / पर, अंदर से रोया होगा।'' और दो पंक्तियों में हिंदी कथा ''राजा के सिर पर सींग उगी, / अब नाई मारा जाएगा।'' जैसे अनेक उदाहरण देखे जा सकते हैं।

कार्यक्रम का सफल संचालन कविहृदय प्रसिद्ध कथाकार अलका सिन्हा द्वारा किया गया। कार्यक्रम के दूसरे चरण में सरस काव्य गोष्ठी का भी आयोजन किया गया, जिसमें आमंत्रित कवियों ने काव्य पाठ किया।

***

एक साँझ कविता की कार्यक्रम की 5वीं कड़ी संपन्न

साहित्यिक सांस्कृतिक संस्था नीलांबर कोलकाता ने 9 जून की शाम को कोलकाता के कलाकुंज सभागार में एक साँझ कविता की-5 कार्यक्रम का आयोजन किया। पिछले कुछ वर्षों के दौरान नीलांबर ने अपने आयोजनों से पूरे देश के साहित्य प्रेमियों का ध्यान खींचा है। संस्था ने आधुनिक तकनीक का प्रयोग कर साहित्य को आम लोगों के बीच पहुँचाने के लिए महत्त्वपूर्ण प्रयास किए हैं।

अरुण कमल, कृष्ण कल्पित, मृत्युंजय कुमार सिंह, सुधांशु फिरदौस और उज़्मा सरवत ने कार्यक्रम में कविताएँ पढ़ी। इस अवसर पर अरुण कमल ने साहित्य के क्षेत्र में नीलांबर के कार्यों की प्रशंसा की। कविता पाठ के अलावा उनकी कविताओं पर विभिन्न तरह की प्रस्तुतियाँ की गई जिनमें कविता गीत, कविता नृत्य, कविता मोंताज और कविता कोलाज शामिल हैं।

इस मौके पर अतिथि के रूप में मौजूद थे वरिष्ठ आलोचक और वागर्थ पत्रिका के संपादक डॉ. शंभुनाथ, डॉ. चंद्रकला पांडेय, अलका सरावगी, उमा झुनझुनवाला, डॉ. आशुतोष, शैलेंद्र शांत और प्रियंकर पालीवाल। नीलांबर के अध्यक्ष यतीश कुमार ने स्वागत वक्तव्य दिया। उन्होंने नीलांबर संस्था और उसके आनेवाले कार्यक्रमों और योजनाओं की संक्षिप्त जानकारी देते हुए कहा कि नीलांबर साहित्य के क्षेत्र में अपनी प्रतिबद्धता और विस्तार बनाए रखेगी और हम नए सकारात्मक प्रयोग करते रहेंगे। हिंदी के वरिष्ठ कवि अरुण कमल ने कार्यक्रम की अध्यक्षता की। कार्यक्रम का संचालन डॉ. इतु सिंह ने किया।

***

सरयू से गंगा उपन्यास पर परिचर्चा

साहित्य अकादमी भवन में किताबघर प्रकाशन से प्रकाशित कमलाकांत त्रिपाठी के ऐतिहासिक-सांस्कृतिक उपन्यास 'सरयू से गंगा' पर मुरली मनोहर प्रसाद सिंह की अध्यक्षता में एक परिचर्चा का आयोजन किया गया। परिचर्चा में प्रो. नित्यानंद तिवारी मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित रहे तथा प्रसिद्ध कथाकार संजीव ने विषय-प्रवर्तन किया। कर्ण सिंह चौहान, असग़र वजाहत, कैलाश नारायण तिवारी, बली सिंह, संजीव कुमार, राकेश तिवारी एवं अमित धर्म सिंह ने परिचर्चा में वक्ता के रूप में भाग लिया। अभिषेक शुक्ल ने परिचर्चा का कुशल संचालन किया।

विषय-प्रवर्तन करते हुए कथाकार संजीव ने सरयू से गंगा को इतिहास एवं सामाजिक जीवन के विस्तृत फलक पर लिखी गई एक वृहद् और महत्त्वपूर्ण औपन्यासिक कृति बताया। आलोचना पत्रिका के संपादक संजीव कुमार ने उपन्यास कथा के दो उज्वल पक्षों- धर्मनिरपेक्षता एवं जनपक्षधरता- का नोटिस लिया।

मुख्य अतिथि प्रो. नित्यानंद तिवारी ने कहा कि उपन्यास इतिहास की धारा को सही ढंग से उभारता है। उसकी अन्त:गतिशीलता और क्राइसिस की धार को कुंठित नहीं करता। अपने अध्यक्षीय वक्तव्य में मुरली मनोहर प्रसाद सिंह ने उपन्यास को इतिहास की प्रक्रिया से उपजे उस संकट के मर्म को खोलने वाला बताया जिसमें व्यापारी बनकर आए अंग्रेज़ राजसत्ता पर काबिज होते हैं। अंत में अनुपम भट्ट ने धन्यवाद ज्ञापन करते हुए सभी उपस्थित वक्ताओं और श्रोताओं के प्रति आभार प्रकट किया।

***

'दो ध्रुवों के बीच की आस' का लोकार्पण व चर्चा सत्र

डॉ. गरिमा संजय दुबे के प्रथम कहानी संग्रह 'दो ध्रुवों के बीच की आस' का लोकार्पण व चर्चा सत्र इन्दौर के प्रीतम लाल दुआ सभागृह में हुआ। समारोह में लेखक पंकज सुबीर, वरिष्ठ साहित्यकार मनोहर मंजुल व लेखिका ज्योति जैन ने पुस्तक पर चर्चा की। अतिथियों का स्वागत मदनलाल दुबे, शांता पारिख, सुभाष चंद्र दुबे, मीनाक्षी रावल, मनीष व्यास, भावना दामले आदि ने किया। सरस्वती वंदना संगीता परमार ने प्रस्तुत की। स्वागत भाषण संस्था की अध्यक्ष पद्मा राजेंद्र ने दिया।

आत्मकथ्य में लेखिका ने अपनी रचना प्रक्रिया की जानकारी देते हुए अपनी कहानियों में आधुनिक युग की समस्याओं को चित्रित करने की बात कही। उन्होंने कहा कि युग बदला है, तो समस्याएँ भी बदली है, इसलिए हल भी नए होने चाहिए।

ज्योति जैन ने पुस्तक पर अपने विचार रखते हुए कहा कि गरिमा के प्रथम प्रयास प्रथम कहानी संग्रह में उनकी कहानियों की परिपक्वता अचंभित करती है। मनोहर मंजुल ने अपने वक्तव्य में कहानियों पर चर्चा करते हुए कहा कि गरिमा की कहानियाँ समाज के विभिन्न दृष्टिकोणों को प्रस्तुत करती है।

पंकज सुबीर ने लेखिका के कहानीकार स्वरूप पर प्रकाश डालते हुए कहा कि गरिमा का पहला कदम सधा हुआ और संतुलित है। इनकी कहानियों में विषयों का विस्तृत संसार है।

कार्यक्रम का संचालन अंतरा करवड़े ने किया व आभार वसुधा गाडगिल ने माना।

***

अमेरिका की फ़ोलसम नगरी में कवि सम्मेलन

कैलिफोर्निया की राजधानी साक्रामेंटो क्षेत्र की फॉल्सम नगरी के मेसॉनिक सेंटर सभागार में, लोकप्रिय हिंदी कवि अभिनव शुक्ल के चालीसवें जन्मदिवस के उपलक्ष्य में एक हिंदी कवि सम्मेलन का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम में अभिनव शुक्ल को सैक्रामेंटो के साहित्यिक समाज की ओर से सम्मानित किया गया तथा कवियों ने चार घंटों तक श्रोताओं को अपनी कविताओं के रस से सराबोर किया।

मंच पर अभिनव की विभिन्न भाव भंगिमाएँ प्रदर्शित करता एक बैनर लगाया गया था, अभिनव के जीवन के विविध पड़ावों को दर्शाते चित्र एक प्रोजेक्टर पर प्रदर्शित करने हेतु फिल्म तैयार की गई थी तथा पूरा सभागार सुरुचिपूर्ण तरीके से सजाया गया था। कवि सम्मेलन के प्रारम्भ में जय श्रीवास्तव ने अभिनव को जन्मदिन की बधाइयाँ देते हुए इस कार्यक्रम के विषय में बताया, उन्होंने यह भी बताया कि अभिनव को कवि सम्मेलन के उनके जन्मदिन के उपलक्ष्य में होने की जानकारी नहीं थी तथा यह सभी की ओर से अपने कवि को एक सर-प्राइज़ है। उन्होंने श्रोताओं का स्वागत किया तथा मंच की बागडोर संचालन हेतु कवि अभिनव शुक्ल के हाथों में सौंप दी। अभिनव ने प्रथम सत्र के कवियों, मनीष श्रीवास्तव, चिंतन राज्यगुरु, जय श्रीवास्तव, अनिरुद्ध पांडेय तथा अतुल श्रीवास्तव को अपनी काव्य पंक्तियाँ समर्पित करते हुए मंच पर आमंत्रित किया। तदुपरांत दीप्ति शरण ने अपने सुमधुर स्वरों से सरस्वती वंदना प्रस्तुत कर इस कवि सम्मलेन को गरिमा प्रदान की।

***

कभी कुछ नहीं लिखने वाले लेखक

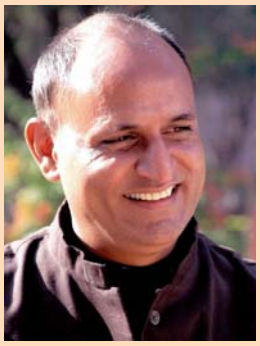

बचपन में जब परीक्षा देने जाते थे, तो दो प्रकार के प्रश्न सबसे ज़्यादा परेशान करते थे। पहला प्रश्न तो यूँ कि फ़लाने और फ़लाने के बीच अंतर स्पष्ट करो। दूसरा यह कि फ़लाने के कितने प्रकार होते हैं। दो चीज़ों के बीच का अंतर स्पष्ट करना हो, या किसी एक चीज़ के पाए जाने वाले प्रकारों की बात करनी हो, यह दोनों ही प्रश्न सबसे ज़्यादा परेशान करते थे। लेकिन आजकल बार-बार उन प्रश्नों की याद आ रही है। आ रही है क्योंकि आजकल लेखन में भी यह दोनों प्रश्न बार-बार आते हैं। दो लेखकों के बीच का अंतर स्पष्ट करना हो, या किसी एक विधा के लेखकों के प्रकार बताने हो। असल में यह इसलिए हो गया है, कि इन दिनों दो प्रकार के लेखक पाए जाने लगे हैं। पहला लेखक तो वह होता है, जो लिखता है और दूसरा लेखक वह होता है, जो नहीं लिखता है। आजकल इस दूसरे प्रकार के लेखक की बहुत भरमार हो गई है। हर जगह, हर कार्यक्रम में, हर समारोह में यही लेखक दिखता है। वह जो लिखने वाला लेखक है, वह तो कहीं नज़र ही नहीं आता है। असल में तो उसे पता ही नहीं है कि लेखक बनने के लिए लिखना कतई ज़रूरी नहीं है, इसीलिए वह बेचारा लिखे जा रहा है, लिखे जा रहा है। यह जो नहीं लिखने वाले लेखक हैं, यह हर समय पूरे परिदृश्य पर छाए रहते हैं। यह कार्यक्रमों में अपने भाषणों पर लिखने की कला पर लम्बी-लम्बी बातें करते हैं। लिखना कितना ज़रूरी है, यह बताते हैं। इनका पूरा का पूरा व्यक्तित्व ही लेखनमय होता है। चूँकि यह समूचे ही लेखन में डूबे होते हैं, शायद इसीलिए यह कुछ लिखते ही नहीं हैं। इतने सब के बाद शायद इनको लिखने की ज़रूरत महसूस ही नहीं होती होगी। वह जो सचमुच का लिखने वाला लेखक है, वह बेचारा कहीं नहीं पाया जाता। और कहीं ग़लती से पाया भी जाता है, तो वह इन नहीं लिखने वाले लेखकों के आभामंडल से आतंकित-सा कहीं कोने-कुचारे में बैठा होता है। जब भी यह नहीं लिखने वाले लेखक मंच के अपने भाषण से चिल्ला कर, डपट कर इस बात के लिए लताड़ते हैं कि आजकल के लेखक को पता ही नहीं है कि लेखन हमारे समाज के लिए कितना ज़रूरी है, तो यह सचमुच का लिखने वाला लेखक पीछे कोने में बैठा अपने आप पर शर्मिंदा होता रहता है। वह घर लौटता है और समाज के प्रति अपने कर्त्तव्य का निर्वाहन करने के लिए लिखने बैठ जाता है। उधर नहीं लिखने वाला लेखक उस कार्यक्रम से तुरंत किसी दूसरे कार्यक्रम में निकल चुका होता है। नहीं लिखने वाले लेखक के आभामंडल में कई ग्रह-उपग्रह चक्कर काटते रहते हैं। यह सारे ग्रह-उपग्रह केवल एक ही बात कहते रहते हैं -'भाई साहब को कार्यक्रमों के कारण लिखने का समय ही नहीं मिलता है, जिस दिन लिख देंगे तो इन सब डेश-डेश और डेश-डेश की छुट्टी कर के रख देंगे।' लिखने वाले लेखक इस बात को सुनते हैं और डर जाते हैं कि कहीं उनकी छुट्टी न हो जाए। वो और मेहनत से लिखने लगते हैं। कभी कुछ नहीं लिखने वाले लेखकों की व्यस्तता देखते ही बनती है। वे या तो किसी हवाई जहाज़ में सवार होकर कहीं जा रहे होते हैं, या रेलगाड़ी पर सवार होकर किसी कार्यक्रम की अध्यक्षता करने जा रहे होते हैं। लिखने वाला लेखक भी जब कुछ लिख देता है, तो उस लिखे गए के विमोचन / लोकार्पण के लिए इन्हीं कभी नहीं लिखने वाले लेखकों की तरफ़ आशा भरी नज़रों से देखने लगता है। पता नहीं यह प्रश्न कभी किसी परीक्षा में पूछा जाएगा कि नहीं पूछा जाएगा लेकिन मैं सोचता हूँ कि अगर पूछा गया तो इस प्रश्न का जवाब क्या दिया जाएगा -'हिन्दी के लिखने वाले लेखकों और कभी नहीं लिखने वाले लेखकों के बीच प्रमुख दस अंतर सारणी बना कर उदाहरण सहित स्पष्ट कीजिए।' या फिर ये कि -'कभी कुछ नहीं लिखने वाले लेखकों के विभिन्न प्रकारों को समझाइए।' **सादर आपका ही,**

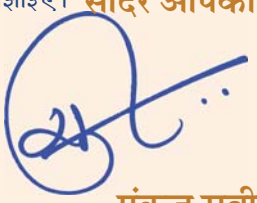

पंकज सुबीर

पंकज सुबीर
पी. सी. लैब, शॉप नंबर 3-4-5-6,
सम्राट कॉम्प्लैक्स बेसमेंट, बस स्टैंड के
सामने, सीहोर, मप्र, 466001
मोबाइल : 9977855399
ईमेल : subeerin@gmail.com

शिवना प्रकाशन - नई पुस्तकें

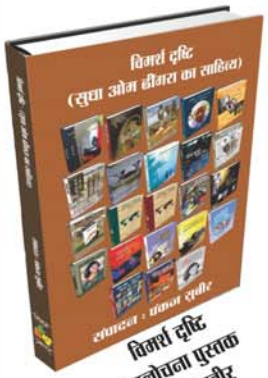

विमर्श दृष्टि
आलोचना पुस्तक
पंकज सुबीर

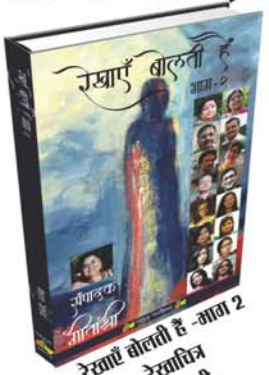

रेखाएँ बोलती हैं -भाग 2
रेखाचित्र
गीताश्री

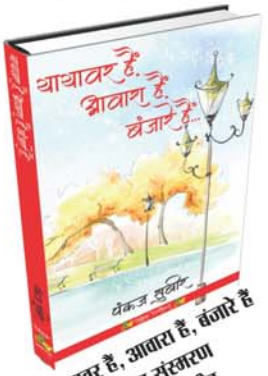

सायावर हैं, आवारा हैं, बंजारे हैं
यात्रा संस्मरण
पंकज सुबीर

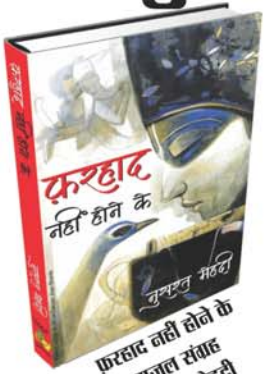

फ़रहाद नहीं होने के
ग़ज़ल संग्रह
नुसरत मेहदी

चुनी हुई कविताएँ
कविता संग्रह
राजेन्द्र नागदेव

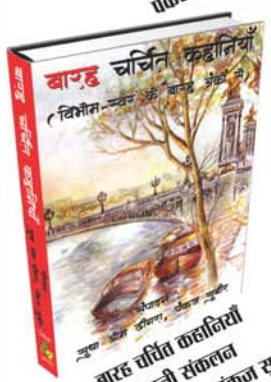

बारह चर्चित कहानियाँ
कहानी संकलन
सुधा ओम ढींगरा, पंकज सुबीर

सरला मैडम के मिस्ड कॉल
कहानी संग्रह
डॉ. कमल चतुर्वेदी

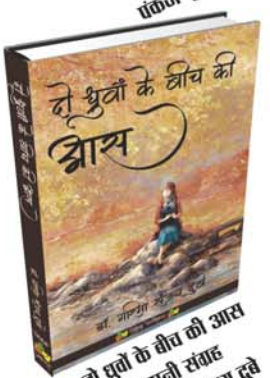

दो ध्रुवों के बीच की आस
कहानी संग्रह
डॉ. गरिमा संजय दुबे

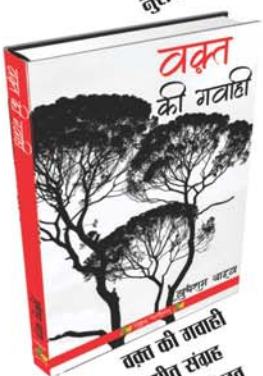

वक़्त की गवाही
गीत संग्रह
बुधराम यादव

खुद से जिरह
विनोद डेविड (कविता संग्रह)

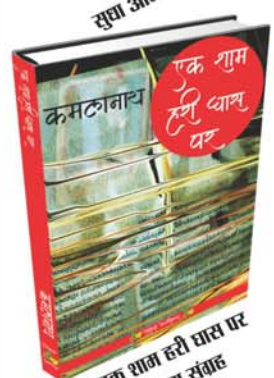

एक शाम हरी घास पर
व्यंग्य संग्रह
कमलनाथ

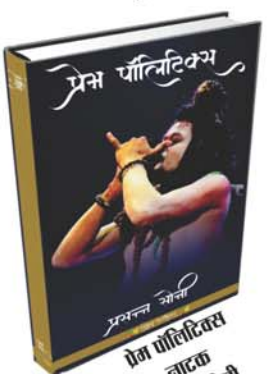

प्रेम पॉलिटिक्स
नाटक
प्रसन्न सोनी

कार्यस्थल पर यौन उत्पीड़न
क़ानून शोध
शहरयार अमजद खान

मी-टू
कहानी संग्रह
आकाश माथुर

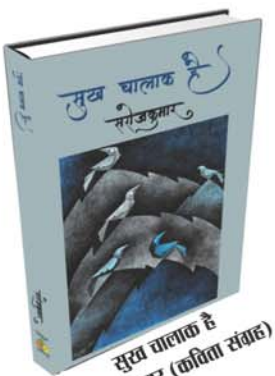

सुख घातक है
सरोजकुमार (कविता संग्रह)

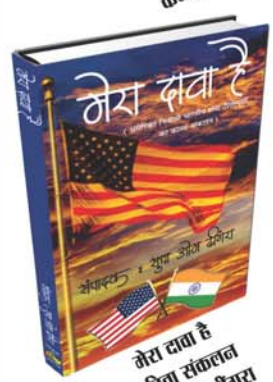

मेरा दावा है
कविता संकलन
सुधा ओम ढींगरा

कुबेर
उपन्यास
डॉ. हंसा दीप

51 किताबें ग़ज़लों की - भाग 2
पुस्तक समीक्षा
नीरज गोस्वामी

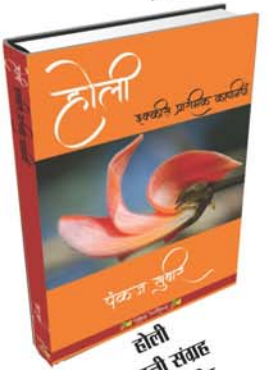

होली
कहानी संग्रह
पंकज सुबीर

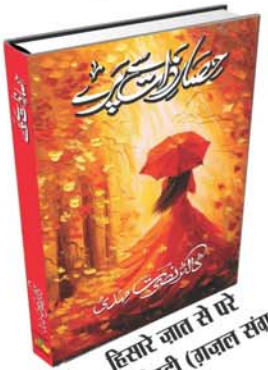

हिसारे जात से परे
नुसरत मेहदी (ग़ज़ल संग्रह)

शिवना प्रकाशन
शिवना प्रकाशन, शॉप नं. 3-4-5-6, सम्राट
कॉम्प्लैक्स बेसमेंट, बस स्टैंड के सामने
सीहोर, मध्य प्रदेश 466001
फोन : 07562-405545, 07562-695918
मोबाइल : +91-9806162184 (शहरयार)
ईमेल : shivna.prakashan@gmail.com
http://shivnaprakashan.blogspot.in
https://www.facebook.com/shivna.prakashan

शिवना प्रकाशन
की पुस्तकें सभी प्रमुख
ऑनलाइन शॉपिंग
स्टोर्स पर

amazon
http://www.amazon.in
flipkart.com
http://www.flipkart.com
paytm
ebay
https://www.paytm.com
http://www.ebay.in

दिल्ली में पुस्तकें प्राप्त करें : हिन्दी बुक सेंटर, 4/5 आसफ अली रोड
फोन : 011-23286757 http://www.hindibook.com

Vibhom Swar ● Quarterly ● July-September 2019 ● RNI No. MPHIN/2016/70609 ● ISSN2455-9814

ढींगरा फ़ैमिली फ़ाउण्डेशन अमेरिका द्वारा मध्यप्रदेश के सीहोर ज़िले में सीहोर तथा आष्टा में चलाए जा रहे आर्थिक रूप से कमज़ोर परिवार की बालिकाओं के लिए निशुल्क कम्प्यूटर प्रशिक्षण योजना के तहत स्थापित प्रशिक्षण केन्द्रों पर आयोजित कुछ कार्यक्रम

सीहोर में चलाए जा रहे 310 बच्चियों हेतु निशुल्क कम्प्यूटर प्रशिक्षण कार्यक्रम सत्र 2019-20 का शुभारंभ करते अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक श्री समीर यादव। श्री समीर यादव का स्वागत करते केंद्र प्रभारी श्री सनी गोस्वामी।

सत्र 2019-20 में प्रशिक्षण हेतु चयनित बालिकाएँ कार्यक्रम के दौरान मुख्य अतिथि अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक श्री समीर यादव का उद्बोधन सुनते हुए। श्री यादव ने कॅरियर को लेकर कई विषयों पर बच्चियों को जानकारी प्रदान की।

400 बालिकाओं को सिखाएंगे कम्प्यूटर

सीहोर। नवदुनिया प्रतिनिधि

र कोई बालिकाओं की सुरक्षा को लेकर बालिकाओं को समझाईश देता है। पह सही है, पर उतना ही जरूरी है लड़कों से समझाना। लड़के बालिकाओं के साथ अच्छा व्यवहार करें। साथ ही उन्हें समझाना चाहिए कि लड़कियों के साथ व्यवहार कैसे किया जाता है, तब ही समाज में लड़किया सुरक्षित होंगी। उक्त बातें एसपी समीर यादव ने कहीं। मौका था ढींगरा फैमिली फाउंडेशन अमेरिका द्वारा संचालित निशुल्क कंप्यूटर प्रशिक्षण शिविर के शुभारंभ का। शुक्रवार को आयोजित कार्यक्रम में एसपी समीर यादव बतौर मुख्य अतिथि उपस्थित थे। उन्होंने बालिकाओं से

बालिकाओं को सुरक्षा की जानकारी देकर कम्प्यूटर के बारे में बताया। ● नवदुनिया

से बाहर किसी काम, कोचिंग व कॉलेज सहित अन्य काम के लिए जाए तो अपने परिवार वालों को इसकी जानकारी जरूर दें। साथ ही अपनी लोकेशन की जानकारी संबंधी जानकारी दी और खुलकर बोल के लिए प्रेरित किया। कार्यक्रम के अं में छात्राओं को सीहोर पुलिस द्वा बनाए गए विशेष नंबरों के स्मार्ट का

सत्र 2019-20 में प्रशिक्षण हेतु चयनित बालिकाओं को कार्यक्रम के दौरान मुख्य अतिथि अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक श्री समीर यादव मार्गदर्शन प्रदान करते हुए। समाचार पत्रों में कार्यक्रम का कवरेज़।

सीहोर में चलाए जा रहे निशुल्क कम्प्यूटर प्रशिक्षण कार्यक्रम में सत्र 2019-20 में प्रशिक्षण हेतु चयनित बालिकाएँ ढींगरा फ़ैमिली फ़ाउण्डेशन के आधुनिक कम्प्यूटर लैब में प्रशिक्षण प्राप्त करते हुए।

If Undelivered Please Return to :
P. C. Lab, Shop No. 3-4-5-6, Samrat Complex Basement, Opp. Bus Stand, Sehore, M.P. 466001
Phone 07562-405545, 07562-695918, Mobile 09584425995, 07828313926, 09806162184

स्वत्वधिकारी एवं प्रकाशक पंकज कुमार पुरोहित के लिए पी. सी. लैब, शॉप नं. 3-4-5-6, सम्राट कॉम्प्लैक्स बेसमेंट, बस स्टैंड के सामने, सीहोर, मध्य प्रदेश 466001 से प्रकाशित तथा मुद्रक ज़ुबैर शेख़ द्वारा शाइन प्रिंटर्स, प्लॉट नं. 7, बी-2, क्वालिटी परिक्रमा, इंदिरा प्रेस कॉम्प्लैक्स,ज़ोन 1, एम पी नगर, भोपाल, मध्य प्रदेश 462011 से मुद्रित।